दैनिक

राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत उत्तर भारत विशेष कर मालवा जोन (हरियाणा) का एकमात्र दैनिक समाचारपत्र

DAILY BHARAT DESH HAMARA KARNAL

भारत देश हमारा

करनाल

Postal Regd. No. PKL-235/2024-26

www.bharatdeshhamara.com, E-mail chardikla.hr@gmail.com,Add: bdhkarnal@gmail.com

मुख्य सम्पादक - जगजीत सिंह दर्दी   संपादक - डा.के.के.संधू   प्रबन्ध संपादक: सुरेन्द्र सिंह छत्तवाल

PRGI (RNI) Regd. No.HARHIN/2017/74227   वर्ष 8   अंक 122   रविवार 4 मई, 2025   Sunday 4 May , 2025   मूल्य 2/- रूपए , कुल पृष्ठ 12   मोब :9416406615,7404278000,9215537704

2 चचेरी बहनों ने गंगा में लगा दी छंलाग, एक बच गई और एक की मौत

गाजीपुर 3 मई (निस) : गाजीपुर जिले के चंदौली जिला से जोड़ने वाले गंगा नदी पर बने पुल से 2 चचेरी बहनों ने छलांग लगा दी, जिससे एक की मौत हो गई, जबकि दूसरे को बचा लिया गया। पुलिस और मछुआरों के सहयोग से चंचल यादव (18) को जिंदा बचा लिया गया, जबकि सोनी यादव (18) की (शेष पृष्ठ दो पर)

आतंकवाद और उसके समर्थकों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने के लिए भारत प्रतिबद्ध:पीएम मोदी

पीएम मोदी ने अंगोला के राष्ट्रपति लौरेंको के साथ की द्विपक्षीय बैठक

नई दिल्ली 3 मई (निस) : पीएम नरेन्द्र मोदी ने हैदराबाद हाउस में अंगोला के राष्ट्रपति जोआओ मैनुअल गोंकाल्वेस लौरेंको के साथ द्विपक्षीय बैठक की। इसके बाद उन्होंने कहा कि मैं राष्ट्रपति लौरेंको और उनके प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करता हूं। यह एक ऐतिहासिक क्षण है। 38 साल बाद अंगोला के राष्ट्रपति की यह भारत यात्रा है। उनकी यात्रा न केवल भारत और अंगोला के बीच संबंधों को एक नई दिशा देगी, बल्कि भारत-अफ्रीका संबंधों को भी मजबूत करेगी। पीएम मोदी ने कहा कि भारत और अंगोला अपने राजनीतिक संबंधों की 40वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। जब अंगोला अपनी आजादी के लिए लड़ रहा था, तब भारत उसके साथ खड़ा था। आज हम कई क्षेत्रों में साझेदार हैं। भारत तेल और गैस के सबसे बड़े खरीदारों में से एक है। हमने अपने ऊर्जा संबंधों को मजबूत करने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि हम अंगोला की सशस्त्र सेनाओं के आधुनिकीकरण के लिए 200 मिलियन डॉलर की रक्षा ऋण सहायता प्रदान करेंगे। उन्होंने कहा कि हम अंगोला के सशस्त्र बलों के प्रशिक्षण में सहायता करके खुश होंगे। अपनी विकास साझेदारी को आगे बढ़ाते हुए, हम

दोनों देश ने आतंकवाद को मानवता के लिए बताया खतरा

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण में अंगोला के साथ अपनी क्षमताओं को साझा करेंगे। आज हमने स्वास्थ्य सेवा, हीरा प्रसंस्करण, उर्वरक और महत्वपूर्ण खनिजों में अपने संबंधों को और मजबूत करने का फैसला लिया है। अंगोला में योग और बॉलीवुड की लोकप्रियता हमारे सांस्कृतिक संबंधों की मजबूती का प्रतीक है। पीएम मोदी ने कहा कि दोनों देश इस बात पर एकमत हैं कि आतंकवाद (शेष पृष्ठ दो पर)

जल विवाद पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई सर्वदलीय बैठक,बैठक में सर्वसम्मति से पास हुआ प्रस्ताव

प्रस्ताव में,पंजाब सरकार से बीबीएमबी की तकनीकी समिति तथा बीबीएमबी बोर्ड के फैसलों को बिना शर्त लागू करने और हरियाणा के हिस्से पर लगाई गई अमानवीय एवं असवैधानिक रोक को तुरंत हटाने का किया गया आग्रह

चंडीगढ़, 3 मई (अमृतपाल सिंह) हरियाणा और पंजाब के मध्य चल रहे जल विवाद पर आज मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक हुई, जिसमें हरियाणा के हितों की सुरक्षा के लिए सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करके पंजाब सरकार से आग्रह किया गया कि बीबीएमबी की तकनीकी समिति के 23 अप्रैल, 2025 के तथा बीबीएमबी बोर्ड के 30 अप्रैल, 2025 के फैसलों को बिना शर्त लागू किया जाए। हरियाणा को मिलने वाले पानी के हिस्से पर लगाई गई अमानवीय, अनुचित, अवैध एवं असंवैधानिक रोक को तुरंत हटाया जाए।सर्वदलीय बैठक में कैबिनेट मंत्री श्री अनिल विज, श्री रणबीर गंगवा, श्री श्याम सिंह राणा, श्रीमती श्रुति चौधरी, बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष श्री मोहन लाल बडौली, कांग्रेस पार्टी की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष श्री उदयभान, इनेलो पार्टी की ओर से प्रदेश अध्यक्ष श्री रामपाल माजरा व विधायक श्री आदित्य देवीलाल, जजपा पार्टी की ओर से पूर्व उपमुख्यमंत्री श्री दुष्यंत चौटाला व पूर्व विधायक श्री अमरजीत ढांडा, आम आदमी पार्टी से श्री सुशील गुप्ता, बीएसपी से श्री कृष्ण जमालपुर, सीपीआई (एम) से श्री ओमप्रकाश और मुख्यमंत्री के मुख्य प्रधान सचिव श्री राजेश खुल्लर मौजूद रहे। बैठक के दौरान मुख्य सचिव श्री अनुराग रस्तोगी ने पिछले 10 सालों के आंकड़े प्रस्तुत कर जल वितरण की जानकारी सांझा की। इसके बाद सभी (शेष पृष्ठ दो पर)

राजनाथ सिंह भी रूस की विजय दिवस परेड में शामिल नहीं होंगे

नई दिल्ली 3 मई (निस) : प्रधानमंत्री के बाद राजनाथ सिंह भी 9 मई को मास्को में आयोजित होने वाले रूस के विजय दिवस समारोह में शामिल नहीं हो सकते हैं। रक्षा राज्य मंत्री (एमओएस) संजय सेठ से इस वार्षिक समारोह में भारत का प्रतिनिधित्व करने की उम्मीद है। सिंह को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जगह मास्को जाना था। प्रधानमंत्री को रूस ने परेड में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था, लेकिन पिछले महीने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के मद्देनजर उनकी यात्रा रद्द(शेष पृष्ठ दो पर)

गोवा के शिरगांव मंदिर में मची भगदड़, 7 की मौत, 30 घायल

पणजी 3 मई(निस) गोवा के शिरगांव मंदिर में हर साल निकलने वाली धार्मिक जात्रा (धार्मिक जुलूस) में एक दुखद घटना घटी। मंदिर में बहुत ज़्यादा भीड़ थी और अचानक भगदड़ मच गई, जिसमें 7 लोगों की जान चली गई और 30 से ज्यादा लोग घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि भीड़ इतनी ज़्यादा थी कि लोगों को साँस लेने में भी मुश्किल हो रही थी। अचानक अफरातफरी मच गई और लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। इस भगदड़ में लोग एक-दूसरे के ऊपर गिरते-पड़ते निकलने की कोशिश कर रहे थे, जिससे स्थिति और भी खराब हो गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और आपातकालीन सेवाएं तुरंत मंदिर पहुँचीं। उन्होंने बचाव कार्य शुरू किया और घायलों को निकालकर पास के अस्पतालों में भर्ती कराया। फिलहाल उनका इलाज चल रहा है।अभी तक यह साफ नहीं हो पाया है कि धार्मिक जुलूस के दौरान यह भगदड़ क्यों मची। अधिकारियों ने इस बारे में कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। लेकिन शुरुआती खबरों से पता चला है कि मंदिर में उम्मीद से ज़्यादा लोग आ गए थे(शेष पृष्ठ दो पर)

पहलगाम आतंकी हमले के बाद पहली बार पीएम मोदी से मिले सीएम उमर अब्दुल्ला, सुरक्षा समेत कई मुद्दों पर हुई चर्चा

नई दिल्ली 3 मई (निस) : जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से दिल्ली में मुलाकात की। यह उनकी पहली बैठक थी, जो पहलगाम आतंकी हमले के बाद हुई। इस हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी, जिनमें ज्यादातर पर्यटक थे। करीब 30 मिनट तक चली इस मुलाकात में जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा स्थिति, आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई और सीमापार से बढ़ते खतरे को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। बैठक से पहले ही नेशनल कांफ्रेंस से जुड़े सूत्रों ने जानकारी दी थी कि उमर अब्दुल्ला प्रधानमंत्री मोदी को यह भरोसा देंगे कि जम्मू-कश्मीर सरकार केंद्र के हर निर्णय में पूरी तरह साथ खड़ी रहेगी। खासकर, पहलगाम जैसे आतंकी हमलों का बदला लेने और देश की सुरक्षा को मजबूत करने में।(शेष पृष्ठ दो पर)

भारत ने पाकिस्तान से सभी वस्तुओं के आयात पर लगाया प्रतिबंध, तुरंत लागू हुआ आदेश

नई दिल्ली 3 मई (निस) : भारत सरकार ने शनिवार को बड़ा फैसला लेते हुए पाकिस्तान से आने वाले सभी सामानों के आयात (इंपोर्ट) पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया है। यह निर्णय तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। सरकार द्वारा जारी नोटिफिकेशन में कहा गया है कि यह प्रतिबंध राष्ट्रीय सुरक्षा और जनहित को ध्यान में रखते हुए लगाया गया है। अब पाकिस्तान से किसी भी प्रकार की वस्तु, चाहे वह सीधे पाकिस्तान से या किसी तीसरे देश के माध्यम से भारत लाई जाए, उसका आयात नहीं किया जा सकेगा। सरकार ने स्पष्ट किया है कि यदि किसी विशेष परिस्थिति में किसी व्यक्ति या संस्था को इस प्रतिबंध से छूट चाहिए, तो इसके लिए केंद्र सरकार से पूर्व अनुमति लेनी अनिवार्य होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि हाल ही में पाकिस्तान की ओर से हो रही लगातार संघर्षविराम उल्लंघन और अन्य गतिविधियों के चलते यह निणज्य लिया गया है। इससे दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों पर असर पड़ेगा, हालांकि भारत का पाकिस्तान से आयात पहले से ही बहुत सीमित था

मणिपुर आज भी पीड़ा में, राजनीतिक खेल जारी- कांग्रेस

नई दिल्ली 3 मई (निस) : कांग्रेस ने मणिपुर में जारी हिंसा के दो साल पूरे होने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को निशाना बनाते हुए शनिवार को कहा कि यह पूर्वोत्तर राज्य आज भी पीड़ा झेल रहा है लेकिन कोई सार्थक समाधान तलाशने के बजाय राजनीतिक खेल खेला जा रहा है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि मणिपुर के लोगों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के राज्य में आने का आज भी इंतजार है। मणिपुर में तीन मई 2023 को हिंसा शुरू हुई थी। इस हिंसा में 200 से अधिक लोग मारे गए हैं। रमेश ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, ''आज से ठीक दो साल पहले मणिपुर में हिंसा की शुरुआत हुई थी। फरवरी 2022 में विधानसभा चुनावों में(शेष पृष्ठ दो पर)

पंजाब की संस्कृति तो छबील लगाकर प्यासे को पानी पिलाने की थी, लेकिन आज पंजाब ने हरियाणा के लोगों के पीने वाले पानी का गिलास छीन लिया है : अनिल विज

चंडीगढ़, 3 मई (के.के संधू): हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने पंजाब सरकार द्वारा भाखड़ा डैम पर पहरा लगा कर सुरक्षा बढ़ाने और पानी न देने के फैसले को लेकर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पंजाब की संस्कृति तो छबील लगाकर प्यासे को पानी पिलाने की थी, लेकिन आज इस पंजाब ने हरियाणा के लोगों के पीने वाले पानी का गिलास छीन लिया है। विज आज पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने पंजाब सरकार को नसीहत दी कि संघीय संरचना (फेडरल स्ट्रक्चर) में हम मैं-मैं करके नहीं जी सकते, हम किसी न किसी रूप में अपने पड़ोसी प्रांतों से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा जैसे आपने (पंजाब ने) हमारा पानी रोका है अगर हम आपकी रेल रोक ले, आपकी सड़के रोक दे तो आपका क्या हाल होगा, हालांकि हम ऐसा नहीं करेंगे क्योंकि हम देश की संघीय संरचना को मानते हैं। वहीं पानी पानी विवाद को लेकर आज हरियाणा में सर्व दलिए बैठक पर कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि यह अच्छी बात है कि यह बैठक बुलाई गई है क्योंकि वैसे तो हम किसी न किसी बात पर लड़ते रहते हैं, लेकिन कॉमन इंटरेस्ट के मुद्दों पर हमने हमेशा इकट्ठे बैठकर रणनीति बनाई है। मंत्री अनिल विज ने कहा एसवाईएल के पानी के लिए भी ऐसे ही बैठक होती थी अब इस बैठक में जो भी फैसला होगा उसी हिसाब से हम आगे बढ़ेंगे। **पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री को न तो हमारी सेना पर भरोसा है न ही विश्वास है :** पंजाब के पूर्व कांग्रेस मुख्यमंत्री चन्नी ने एक बार फिर सर्जिकल स्ट्राइक(शेष पृष्ठ दो पर)

जातिगत गणना का राजनैतिक लाभ उठाने के द्रुमक के प्रयासों की सीतारमण ने की आलोचना

नई दिल्ली 3 मई (निस) : केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) सरकार के दावे को खारिज किया। साथ ही सीतारमण ने इस कदम का ''राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयास के लिए डीएमके की आलोचना की। सीतारमण ने कहा कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने जातिगत गणना को मंजूरी दे दी है। इस जाति जनगणना से जुटाए आंकड़ों से मोदी सरकार समाज के गरीब और हाशिए पर पड़े वर्गों की बेहतर मदद कर सकेगी। वित्त मंत्री सीतारमण ने द्रमुक शासन में राज्य के एक गांव में हुई घटना का भी हवाला दिया, जहां कथित तौर पर पेयजल में मानव मल-मूत्र मिला हुआ था। सीतारमण ने कहा, ''उनका (द्रमुक) कहना है कि उत्तर भारत के कुछ राज्य पिछड़े हुए हैं लेकिन इसतरह के राज्यों में भी इस तरह की घटनाएं नहीं हुई हैं। इसलिए, द्रमुक के इस तर्क में कोई दम नहीं है कि आगामी(शेष पृष्ठ दो पर)

सिटी ब्यूटीफूल चंडीगढ़ में नशा रूपी कुरीति का कोई काम नहीं-मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

समाज को नशामुक्त करना हम सभी का दायित्व-कटारिया,चंडीगढ़ में राज्यपाल ने अभियान की शुरुआत करवायी

चंडीगढ़, 3 मई (अमृतपाल सिंह) : चंडीगढ़ 3 मई (निस) नशे के खिलाफ चंडीगढ़ में सबसे बड़े अभियान नशामुक्त चंडीगढ़ की जोरदार शुरुआत हो गई है। युवाओं को नशे से दूर रखने को लेकर पंजाब,हरियाणा ने भी चंडीगढ़ के प्रयासों में भागीदार करने का संकल्प लिया। पहली बार यूटी प्रशासन की ओर से नशे के खिलाफ यूटी प्रशासक और पंजाब के राज्यपाल गुलाब चंद कटारिया की अगुवाई में नशे से दूर, जियो भरपूर ..थीम पर पदयात्रा का आयोजन किया गया। नशामुक्त चंडीगढ़ अभियान में पहली बार पंजाब हरियाणा के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान और नायब सिंह सैनी ने भी मंच सांझा किया। हरियाणा के राज्यपाल बंडारु दत्तात्रेय के अलावा हरियाणा के स्पीकर और मंत्रियों ने भी नशामुक्त पदयात्रा में हिस्सा लिया। पहली बार सात हजार से अधिक स्कूली, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, कर्मचारियों, एनसीसी कैडेट, कर्मचारियों और अधिकारियों ने सड़क पर उतरकर नशे के खिलाफ मोर्चा खोला है। चंडीगढ़ सचिवालय से हुई कार्यक्रम की शुरुआत-कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 7 बजे सेक्टर-9 स्थित चंडीगढ़ सचिवालय से हुई। यूटी प्रशासक गुलाब चंद कटारिया ने सैंकड़ों युवाओं की मौजूदगी में हरी झंडी दिखाकर नशे से दूर जियो भरपूर पहल पर पदयात्रा को रवाना किया। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के वर्ष 2047 तक विकसित भारत बनाने के विजन में युवाओं की अहम भूमिका होगी। इसके लिए युवाओं को नशे से दूर रहना होगा। स्वस्थ युवा ऊर्जा के साथ विकसित भारत बनाए जाने के सपने को साकार करने में विशेष योगदान दें पाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री (शेष पृष्ठ दो पर)

तेजस्वी ने जाति जनगणना को लेकर पीएम मोदी को लिखा पत्र,नई मांगें भी रखीं

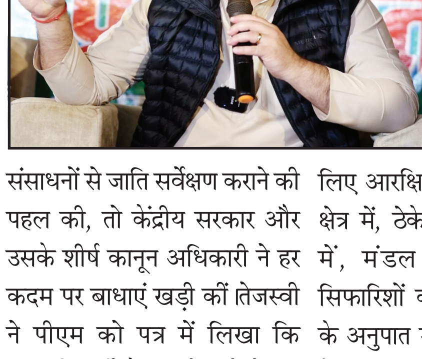

पटना 3 मई (निस) : मोदी सरकार के जाति जनगणना के फैसले को लेकर बिहार में श्रय लेने की होड़ तेज हो गई है। जहां आरजेडी और कांग्रेस इसे अपनी जीत बता रहे हैं। वहीं एनडीए के नेता इसे पीएम मोदी का मास्टरस्ट्रोक बता दे हैं। वहीं नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने पीएम मोदी को पत्र लिखा कई नई मांगें रखी हैं। साथ ही बीजेपी पर सवाल भी खड़े किए हैं। तेजस्वी यादव ने कहा कि देशभर में जाति जनगणना कराने की आपकी सरकार की हाल की घोषणा के बाद मैं आपको सतर्क आशावाद की भावना के साथ पत्र लिख रहा हूं। सालों से आपकी सरकार और एनडीए गठबंधन ने जाति जनगणना की मांग को विभाजनकारी और अनावश्यक बताकर खारिज कर दिया था। जब बिहार ने अपने संसाधनों से जाति सर्वेक्षण कराने की पहल की, तो केंद्रीय सरकार और उसके शीर्ष कानून अधिकारी ने हर कदम पर बाधाएं खड़ी कीं तेजस्वी ने पीएम को पत्र में लिखा कि आपकी पार्टी के सहयोगियों ने इस तरह के डेटा संग्रह की जरुरत पर ही सवाल उठाया। अनेक तरह कि फूहड़ और अशोभनीय टिप्पणियां कीं। आपका विलंबित निर्णय उन नागरिकों की मांगों की व्यापकता को स्वीकार करता है, जिन्हें लंबे समय से हमारे समाज के हाशिये पर रखा गया है। पत्र में तेजस्वी ने कई नई मांगें भी रखी। जिसमें पिछड़ों/अति पिछड़ों के लिए आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र, निजी क्षेत्र में, ठेकेदारी में, न्यायपालिका में, मंडल कमीशन की शेष सिफारिशों को लागू करें, आबादी के अनुपात में आरक्षण देंगे, बिहार के लिए विशेष राज्य का दर्जा और बिहार के लिए विशेष पैकेज शामिल है। तेजस्वी ने आगे लिखा कि जब हम यह जानेंगे कि हमारे कितने नागरिक वंचित समूहों से संबंधित हैं, और उनकी(शेष पृष्ठ दो पर)

पृष्ठ एक का शेष...

आतंकवाद और उसके समर्थकों के खिलाफ निर्णायक ...

मानवता के लिए खतरा है। मैं पहलगाम में आतंकवादी हमले में मारे गए लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए राष्ट्रपति लौरेंको और अंगोला को धन्यवाद देता हूं। उन्होंने साफ कहा कि हम आतंकवादियों और उनका समर्थन करने वालों के खिलाफ़ ठोस और निर्णायक कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमने सीमा पार आतंकवाद के खिलाफ़ हमारी लड़ाई में अंगोला के समर्थन के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

राजनाथ सिंह भी रूस की विजय दिवस

.... कर दी गई थी। रक्षा राज्यमंत्री (एमओएस) संजय सेठ से द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी पर सोवियत संघ की जीत की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित परेड में भारत का प्रतिनिधित्व करने की उम्मीद है।

2 चचेरी बहनों ने गंगा में लगा दी छंलाग, एक ...

मौत हो गई ।पुलिस के अनुसार, सैदपुर थाना को सूचना मिली कि 2 लड़कियों ने पक्का पुल से गंगा नदी में छलांग लगा दी है। पुलिस तत्काल मछुआरों को लेकर नदी किनारे पहुंची। मछुआरे नदी में कूद गए और चंचल पानी से निकाली गई, तब उसकी सांसें चल रही थीं। इसके बाद पुलिस चंचल को गोद में उठाकर अस्पताल ले गई, जहां चिकित्सकों ने चंचल को बचा लिया। सोनी यादव को भी बरामद करके अस्पताल ले जाया गया, लेकिन चिकित्सकों ने सोनी को मृत करार दिया। बताया जा रहा है कि दोनों लड़कियां चंदौली के निवासी सुरेश यादव और रमेश यादव की पुत्री हैं।

मणिपुर आज भी पीड़ा में, राजनीतिक खेल ...

राज्य की जनता ने भाजपा (भारतीय जनता पार्टी) और उसके सहयोगियों को निर्णायक जनादेश दिया था, जिसके बाद यह आपदा उन पर हावी हो गई। उन्होंने दावा किया कि तीन मई 2023 को जो शुरू हुआ, वह राज्य में तथाकथित डबल इंजन सरकार का पटरी से उतरना था ।उन्होंने कहा कि इसके तीन महीने बाद उच्चतम न्यायालय को यह कहने के लिए मजबूर होना पड़ा कि राज्य में संवैधानिक तंत्र पूरी तरह से नष्ट हो गया है। रमेश ने कहा कि राज्य विधानसभा में कांग्रेस द्वारा लाए जाने वाले अविश्वास प्रस्ताव को देखते हुए मोदी सरकार ने मुख्यमंत्री बीरेन सिंह को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया और अंततः 13 फरवरी 2025 को राष्ट्रपति शासन लगा दिया। उन्होंने कहा, मणिपुर आज भी पीड़ा से गुजर रहा है। राजनीतिक खेल खेले जा रहे हैं। कोई सार्थक समाधान प्रक्रिया नहीं है। आंतरिक रूप से विस्थापित 60,000 से अधिक लोग भारी तनाव की स्थिति में राहत शिविरों में रह रहे हैं। कांग्रेस नेता ने कहा, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रधानमंत्री मणिपुर से लगातार बचते रहे हैं ।उन्होंने राज्य के किसी भी व्यक्ति से मुलाकात नहीं की। वह पूरी दुनिया में घूम चुके हैं लेकिन उन्हें संकटग्रस्त राज्य का दौरा करने और वहां के लोगों तक पहुंचने के लिए न तो समय मिला, न ही उनका इस ओर झुकाव है और न ही संवेदनशीलता। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को मणिपुर का प्रबंधन आउटसोर्स किया है, लेकिन वह (शाह) पूरी तरह असफल साबित हुए हैं। रमेश ने कहा, ''मणिपुर बेहतर स्थिति का हकदार है। मणिपुर के लोग अब भी इंतजार कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री इंफाल पहुंचें और इस खूबसूरत राज्य का दौरा कर लोगों के जख्मों पर मरहम लगाएं।

गोवा के शिरगांव मंदिर में मची भगदड़, ..

और भीड़ को संभालने के लिए सही व्यवस्था नहीं थी। इसी वजह से लोगों में घबराहट फैल गई और भगदड़ मच गई।

तेजस्वी ने जाति जनगणना को लेकर पीएम ...

आर्थिक स्थिति क्या है, तब ज्यादा सटीकता के साथ लक्षित हस्तक्षेप तैयार किए जाने चाहिए। निजी क्षेत्र, जो सार्वजनिक संसाधनों का प्रमुख लाभार्थी रहा है, सामाजिक न्याय की जरुरतों से अलग नहीं रह सकता। कंपनियों को पर्याप्त लाभ मिलता रहा है। रियायती दरों पर जमीन, बिजली सब्सिडी, कर छूट, बुनियादी सुविधाएं, और तमाम वित्तीय प्रोत्साहन इसका बोझ करदाता के कंधे उठाते हैं।

पंजाब की संस्कृति तो छबील लगाकर प्यासे को पानी पिलाने...

और सबूत की बात कहकर केंद्र सरकार पर सवाल उठाए जिसपर कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चन्नी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि इन्हें न तो हमारी सेना पर भरोसा है न ही विश्वास है, इन्हें तो उन बातों पर भरोसा है जो पाकिस्तानी कहते है। इन्हें उसी दिन पता लगेगा जब पाकिस्तान मानेगा कि भारत ने हमारे पर छक्के उड़ा दिए उससे पहले यह मानने वाले नहीं।

पहलगाम आतंकी हमले के बाद पहली बार पीएम मोदी ...

उमर अब्दुल्ला की यह मुलाकात ऐसे समय पर हुई है जब केंद्र सरकार पाकिस्तान के खिलाफ लगातार सख्त कदम उठा रही है और जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा बलों की तैनाती और ऑपरेशनल सक्रियता तेज कर दी गई है।

हमले के खिलाफ एकजुट होने की अपील – पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने भी पहलगाम आतंकी हमले की तीखी निंदा की है। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के लोगों से अपील की कि वे आतंक के खिलाफ एकजुट होकर खड़े हों। फारूक अब्दुल्ला ने कहा, जो लोग इस हमले में शामिल हैं वे इंसानियत के दुश्मन हैं। ऐसे लोगों की जगह नरक में है। उन्होंने सिंधु जल समझौते की समीक्षा और पाकिस्तान पर कड़ी कार्रवाई की भी वकालत की।

मारे गए युवक आदिल शाह के घर पहुंचे फारूक अब्दुल्ला – फारूक अब्दुल्ला हमले में मारे गए स्थानीय युवक आदिल हुसैन शाह के घर भी पहुंचे और उनके परिवार से मिलकर श्रद्धांजलि दी। आदिल पोनी राइड ऑपरेटर का काम करता था और हमले में मारे गए 26 लोगों में अकेला स्थानीय नागरिक था।

जातिगत गणना का राजनैतिक लाभ उठाने के द्रुमक के...

जनगणना में जातिगत गणना को शामिल करने का केंद्र का फैसले उनकी जीत है। दरअसल दिसंबर 2022 में वेंगाइवायल गांव में अनुसूचित जाति के आवासीय इलाके में एक पानी की टंकी में कथित तौर पर मानव मल-मूत्र मिला था। स्टालिन ने कहा था कि आगामी जनगणना अभ्यास में जातिगत गणना को शामिल करने का केंद्र का फैसला उनकी पार्टी और द्रमुक सरकार के लिए ''कड़े परिश्रम से हासिल जीत है। द्रमुक पर हमला कर सीतारमण ने कहा कि आज भी तमिलनाडु में दुकानों के बोर्ड पर मालिकों के समुदाय के नाम लिखे होते हैं ।उन्होंने कहा, ''इस पर कोई राजनीतिक टिप्पणी करने के बजाय मैं ईमानदारी से चाहती हूं कि हमें इस बात पर चर्चा करनी चाहिए कि हम उन लोगों की कैसे मदद कर सकते हैं जो गरीब और दलित हैं। उन्होंने कहा, केंद्र किसी भी कॉर्पोरेट का पक्ष नहीं ले रहा है। दूसरी बात प्रधानमंत्री (नरेन्द्र मोदी) ने विड़िण्गम बंदरगाह का उद्घाटन किया। लेकिन, इस ओमन चांडी (दिवंगत) नीत पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने औपचारिक रूप से अदाणी समूह को सौंप दिया था। द्रमुक के दावे कि केंद्र राज्य को धन नहीं दे रहा है, सीतारमण ने कहा, ''मैं जब भी यहां आती हूं, तब तमिलनाडु को कितना धन आवंटित किया गया है इसका आंकड़ा साझा करती हूं। लेकिन वे (तमिलनाडु सरकार) इस तरह की टिप्पणी (कि केंद्र ने कोई धन जारी नहीं किया) करते रहे हैं।

सिटी ब्यूटीफूल चंडीगढ़ में नशा रूपी कुरीति का कोई काम ...

नरेंद्र मोदी के आह्वान पर पूरे देश में नशे के खिलाफ अभियान चलाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शनिवार को सिटी ब्यूटीफुल चंडीगढ़ में नशे के खिलाफ पैदल मार्च निकाला गया। जिसमें ट्राई सिटी के युवाओं व उनके अभिभावकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। मार्च के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि जब एक बार युवा कुछ कर गुजरने की ठान लेते हैं, तो वे उसे पूरा करके ही दम लेते हैं ।मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि युवाओं का जोश इस बात को दर्शाता है कि वे विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के साथ खड़े हैं। संदेश यहीं है कि नशा पूर्णतः खत्म हो। उन्होंने कहा कि सिटी ब्यूटीफूल चंडीगढ़ में नशे रूपी कुरीति की कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा कि हरियाणा में भी सरकार ने नशे के खिलाफ जन जागरण अभियान चला रखे है, इस अभियानों को आमजन का खूब समर्थन मिल रहा है। इसके अलावा नशे का कारोबार करने वालों के खिलाफ भी सख्त से सख्त कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने लोगों को आह्वान किया कि नशे के खिलाफ अभियान को और मजबूत बनाने के लिए योगदान दें। नशे के खिलाफ अभियान केवल एक कार्यक्रम नहीं है, बल्कि एक सामूहिक संकल्प है, जो हमारे समाज को नशे की बुराइयों से मुक्त करने का, हमारी युवा पीढ़ी को उज्ज्वल भविष्य देने का और अपने देश को स्वस्थ और विकसित बनाने का है ।नशे के खिलाफ पैदल मार्च में पंजाब के राज्यपाल व केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक श्री गुलाब चंद कटारिया, हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय, पंजाब के मुख्यमंत्री श्री भगवंत मान सहित कई राजनेताओं ने भाग लिया।

एक दिन की बारिश ने खोली सरकार की अनाजमंडियों में समुचित प्रबंधों की पोल : कुमारी सैलजा

कहा : गेहूं की गुणवत्ता खराब होने से हुआ नुकसान या तो किसानों को झेलना पड़ेगा या फिर व्यापारियों को

चंडीगढ़, 3 मई (के.के संधू): अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि प्रदेश की अनाजमंडियों में सरकार की ओर से कैसी व्यवस्था की गई है कि इसकी पोल एक ही दिन की बारिश ने खोलकर रख दी है। समय पर उठान न होने के कारण मंडी में गेहूं बारिश में भीगकर खराब हो रहा है। आखिर इसके लिए जिम्मेदार कौन होगा, बारिश से गेहूं खराब होने को लेकर किसानों और आढ़तियों में भारी रोष है क्योंकि भीगने से गेहूं की गुणवत्ता घटेगी, तो उसका नुकसान या तो किसानों को झेलना पड़ेगा या फिर व्यापारियों को जबकि तुलाई के बाद किसान की जिम्मेदारी खत्म हो जाती है। मीडिया को जारी बयान में कुमारी सैलजा ने कहा है कि अनाजमंडियों में व्यापक प्रबंध न होने पर उनकी ओर से पहले भी कई बार यह मुद्दा उठाया था कि सरकार द्वारा मंडियों की सुध ली जा रही है जिससे पूरा उठान भी नहीं हो पा रहा है। अब जब किसानों की मेहनत बर्बाद हो रही है, क्या किसी की कोई जवाबदेही तय होगी? भाजपा सरकार बिना देरी के इस व्यवस्था को सुधारे ताकि मंडियों में पड़ा अनाज यूं ही खराब न हो। समय पर उठान न होने के कारण अनाजमंडियों में गेहूं बारिश में भीगकर खराब हो रहा है। एक दिन की बारिश में ही भाजपा सरकार के तमाम दावों की पोल खुल गई। इसे लेकर किसानों और व्यापारियों में गुस्सा हैं। हर बार बरसात में ऐसा ही होता है, लेकिन प्रशासन सिर्फ खानापूर्ति करता है। अब जब गेहूं की गुणवत्ता घटेगी, तो उसका नुकसान या तो किसानों को झेलना पड़ेगा या फिर व्यापारियों को। सरकार की लापरवाही से जो अनाज खराब हुआ है, उसका उचित मुआवजा दिया जाना चाहिए। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि मौसम विभाग समय समय पर मौसम खराब होने को लेकर चेतावनी जारी करता रहता है बावजूद इसके प्रशासन किसी भी तरह के इंतजाम नहीं कर पाता क्या सरकार को मौसम विभाग पर भरोसा नहीं है। मंडी में हजारों बोरियों में गेहूं की तुलाई हो चुकी थी और खुले में ढेर भी बनाए गए थे। बारिश और जलभराव की वजह से अब इन बोरियों में भरा गेहूं भी नमी खा गया है, जिससे उसकी गुणवत्ता पर असर पड़ सकता है। इससे हुए नुकसान का जिम्मेदार कौन होगा। सरकार को किसी न किसी की जिम्मेदारी तय करनी होगी इसके लिए किसान को किसी भी सूरत में कसूरवार नहीं ठहराया जा सकता है, फसल बेचने के बाद किसान की जिम्मेदारी खत्म हो जाती है, उसके बाद की जिम्मेदारी खरीद एजेंसी की बनती है।

स्कूलों के शौचालयों की बदहाली बच्चों के स्वास्थ्य के लिए खतरा : कुमारी सैलजा ने कहा कि हरियाणा के स्कूलों में शौचालय की कमी और जहां पर है उनका खराब हालत होना एक गंभीर समस्या है जिसे तुरंत ठीक करने की आवश्यकता है। सरकार को इस समस्या को गंभीरता से लेना चाहिए और स्कूलों में पर्याप्त और स्वच्छ शौचालय उपलब्ध कराने के लिए कदम उठाने चाहिए। कई स्कूलों में बच्चों के लिए पर्याप्त शौचालय उपलब्ध नहीं हैं, जो उनकी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में बाधा डालता है। शौचालय अक्सर गंदगी और खराब हालत में होते हैं, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा होता है। साफ-सुथरे शौचालय का अभाव संक्रामक रोगों के प्रसार को बढ़ावा दे सकता है, और बच्चों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। कई जिलों में स्कूलों में शौचालयों की साफ सफाई न होने छात्राएं संक्रामक रोगों की चपेट में आ जाती है। सरकार को इस गंभीर समस्या की ओर ध्यान देना चाहिए।

ग्राम पंचायत, ब्लाक समिति, जिला परिषद, नगर पालिका और विभिन्न संगठनों ने पूर्व राज्यमंत्री को एक राष्ट्र एक चुनाव के समर्थन में सौंपे प्रस्ताव

कलायत,3 मई (सूबे सिंह मोर): कलायत विधानसभा क्षेत्र में एक राष्ट्र एक चुनाव जन आंदोलन का रूप लेता जा रहा है। इसकी झलक जाखौली गांव में देखने को मिली। इसमें पूर्व राज्य मंत्री कमलेश ढांडा की अगुवाई में नगर पालिका पार्षदों, भाजपा पदाधिकारी-कार्यकर्ता, जिला परिषद, ब्लाक समिति सदस्य, ग्राम पंचायत, समाज सेवी संगठनों व बड़ी संख्या में शहरी-ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने एक राष्ट्र एक चुनाव के पक्ष में समर्थन प्रस्ताव पेश किया। इस दौरान महिलाओं में भी भारी उत्साह देखते ही बन रहा था। कमलेश ढांडा ने क्रमवार एक राष्ट्र एक चुनाव के फायदे गिनवाए। उन्होंने कहा कि बार-बार चुनाव करवाने से भारी प्रशासनिक खर्च और संसाधनों की बर्बादी होती है। एक साथ चुनाव होने से चुनावी खर्च में भारी कमी आएगी। सुरक्षा बलों, शिक्षकों और प्रशासनिक अधिकारियों पर बार-बार चुनावी ड्यूटि का बोझ नहीं पड़ेगा। बार-बार चुनाव आचार संहिता लगने से विकास कार्यों की गति थमती है। एक साथ चुनाव होने से यह बाधा दूर होगी। एक राष्ट्र एक चुनाव से राजनैतिक स्थिरता, मतदाताओं की जागरूकता, भागीदारी, चुनावी खर्च में कटौती और संवैधानिक-व्यावहारिक समाधान होंगे। ढांडा ने कहा कि संसद में प्रस्तुत विधेयक के पारित कर इसे कानून रूप दिया जाए। चुनाव आयोग को आवश्यक तकनीकी व प्रशासनिक संसाधन उपलब्ध करवाए जाएं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश हित को लेकर उठाए गए इन कदमों में सभी राजनैतिक दल आम सहमति बनाकर आगे बढ़ें। एक राष्ट्र एक चुनाव क्रांतिकारी कदम है। यह भारत के लोकतंत्र को अधिक मजबूत, पारदर्शी और कुशल बना सकता है। इससे न केवल सरकार के कार्यों में निरंतरता आएगी बल्कि राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को सुदृढ़ता मिलेगी। जाखौली गांव में आयोजित कार्यक्रम में एक राष्ट्र एक चुनाव जिला संयोजक देवेंद्र पांचाल, सह संयोजक राजेश बिढाण, ब्लाक समिति चेयरपर्सन सुमन रानी, कलायत मंडल अध्यक्ष राजीव राजपूत, बालू मंडल अध्यक्ष नरेंद्र जुलानी खेड़ा, राजौंद मंडल अध्यक्ष सुशील पांचाल, जाखौली मंडल अध्यक्ष अनिल मलिक, श्री रैदास तख्त प्रबंध कमेटी प्रधान डा.प्रीतम कौलेखां, धर्मपाल धीमान, राजपूत सभा की तरफ से रामकुमार राणा, अरुण राणा, सोनू राणा, महीपाल राणा, डा.संदीप राणा, कमल राणा, लोकेश राणा और विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी-कार्यकर्ता मौजूद रहे। सभी ने हाथ उठाकर न केवल एक राष्ट्र एक चुनाव का समर्थन किया बल्कि समर्थन पत्र भी सौंपे ।मंच पर महिलाएं भी विशेष रूप से पूर्व राज्य मंत्री कमलेश ढांडा को एक राष्ट्र एक चुनाव का समर्थन प्रस्ताव सौंपने पहुंची। उन्होंने कहा कि पहले चुनाव को लेकर बेहद उत्साह का माहौल रहता था। इसलिए महिलाएं लोक गीत गाती हुई मतदान केंद्र पर जाती थी। लेकिन बार-बार चुनाव होने से यह उत्साह फीका पड़ रहा है। एक राष्ट्र एक चुनाव का महिलाओं ने लोक गीतों के साथ अभिनंदन करने का भरोसा पूर्व राज्य मंत्री को दिलाया।

जल विवाद पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई सर्वदलीय बैठक,बैठक में ...

नेताओं ने विस्तार से चर्चा की। बैठक के दौरान सभी नेताओं ने हरियाणा में पीने के पानी के संबंध में उभरे जल संकट पर चिंता व्यक्त की और पंजाब द्वारा हरियाणा के हिस्से के पानी को रोकने को असंवैधानिक बताया ।सभी नेताओं ने कहा कि पंजाब सरकार तथ्यों को तोड़—मरोड़ कर भ्रामक प्रचार कर रही है। हरियाणा कोई अतिरिक्त पानी की मांग नहीं कर रहा है और न ही पंजाब के हिस्से का पानी मांग रहा है। हरियाणा तो उसे हर साल मिलने वाले पानी के अपने हिस्से को पूरा देने की मांग कर रहा है, जोकि अभी पंजाब द्वारा गैर-कानूनी तरीके से रोक दिया गया है। पंजाब के मुख्यमंत्री का कहना कि हरियाणा ने अपने कोटे का पूरा पानी इस्तेमाल कर लिया है, यह प्रचार भी गलत है। वास्तविकता यह है कि डैम के पानी में कोई कोटा नहीं होता, बल्कि डैम में पानी की उपलब्धता के आधार पर राज्यों को पानी का वितरण तय किया जाता है। हरियाणा द्वारा अपने पानी के हिस्से को पूरा मांगने से न तो पंजाब का पानी कम हो रहा है और न ही डैम में पानी कम हो रहा है। सभी नेताओं ने एक मत से कहा कि हरियाणा की जनता के हित में और उसके हिस्से का पूरा पानी लेने के लिए हम हरियाणा सरकार के साथ हैं। पिछले 10 सालों में पंजाब व हरियाणा को दिए गए पानी का ब्यौरा देते हुए श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि पंजाब ने हर साल अपने हिस्से से काफी ज्यादा पानी का उपयोग किया है ।बैठक में सभी नेताओं ने एकमत से कहा कि पंजाब का संघीय ढांचे पर विश्वास नहीं है। जहां एक ओर हरियाणा का हमेशा सभी समझौतों पर सकारात्मक रवैया रहा है, वहीं पंजाब ने सभी समझौतों को नकारने का काम किया है। अब भी पंजाब सरकार राजनीतिक पैठ जमाने के लिए भ्रामक प्रचार करते हुए हरियाणा के लोगों के पीने के पानी को रोकने का असंवैधानिक कार्य कर रही है ।बैठक के दौरान श्री नायब सिंह सैनी ने प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम संकल्प करते हैं कि हरियाणा के हिस्से के पानी को सुनिश्चित करने के लिए तथा एसवाईएल का शीघ्र निर्माण करवाने के लिए हम सब एकजुट होकर कोई भी कानूनी लड़ाई लड़ने और राज्य तथा केंद्र दोनों स्तरों पर हर संभव राजनैतिक प्रयास करने के लिए हरियाणा सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करेंगे। हम दोनों राज्यों की जनता से अपील भी करते हैं कि वे आपसी सौहार्द एवं शांति बनाए रखें। साथ ही, इनमें खलल डालने की मंशा रखने वाले स्वार्थी तत्वों के भ्रामक प्रचार से बचें। मुख्यमंत्री द्वारा रखे गए प्रस्ताव पर सभी दलों के नेताओं ने अपनी सहमति जताई और कहा कि इस विषय पर मुख्यमंत्री के साथ मजबूती से खड़े हैं ।मुख्यमंत्री का पंजाब सरकार पर निशाना, पंजाब सरकार एसवाईएल न बनाकर सिंचाई के पानी पर डाका डालने के बाद अब हरियाणा के लोगों के पीने के पानी को रोक कर कर रही असंवैधानिक कार्य सर्वदलीय बैठक के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने पंजाब सरकार पर निशाना साधा और कहा कि पंजाब की सरकार एसवाईएल न बनाकर सिंचाई के पानी पर डाका डालने के बाद अब हरियाणा के लोगों के पीने के पानी को रोक कर असंवैधानिक काम कर रही है। हरियाणा सरकार के सामने अपने हिस्से का पानी लेने के लिए सभी विकल्प खुले है। और आज ही इस विषय पर भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड की बैठक होनी है, जिसके बाद हरियाणा अपनी रणनीति तय करेंगे ।श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्राप्त जानकारी के अनुसार पंजाब ने पानी के मुद्दे पर विधानसभा का सत्र भी बुलाया है। इन सभी पहलुओं को हरियाणा सरकार गंभीरता से देख रही है। उन्होंने कहा कि पानी के इस गंभीर मुद्दे पर हम सभी को केंद्र सरकार से मिलना है या हरियाणा विधानसभा का सत्र बुलाना है, इसकी रणनीति बाद में तय करेंगे ।पानी को देश की संपत्ति बताते हुए श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हरियाणा और पंजाब दोनों भाई—भाई हैं। पंजाब सरकार द्वारा राजनीतिक स्वार्थ साधने के लिए भ्रामक प्रचार करना निंदनीय है। इस प्रकरण में आम जनता आहत नहीं होनी चाहिए, चाहे वह हरियाणा की हो, या पंजाब की हो ।पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान द्वारा दिए गए भड़काऊ बयान के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा सरकार के साथ—साथ सभी दल के नेता उनके इस बयान की निंदा करते हैं। उन्होंने कहा कि गुरुओं की शिक्षाओं से प्रेरणा लेते हुए और उनको साक्षी मानकर हमें सौहार्दपूर्ण तरीके से आगे बढ़ना चाहिए, न कि इस मामले में राजनीति करनी चाहिए ।मुख्यमंत्री ने कटाक्ष करते हुए कहा कि मान साहब असंवैधानिक रूप से हरियाणा का पानी रोकने का काम कर रहे हैं। यह पानी पूरे देश का है। भारत विभाजन के समय पानी का बंटवारा भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ था। आगे फिर यह बंटवारा राज्यों में हुआ। इस तरह पानी किसी एक प्रदेश का नहीं है। यही नहीं आज भी समस्या इतनी बड़ी नहीं है, जितनी मान सरकार दिखा रही है ।उन्होंने कहा कि हरियाणा को उस वर्ष भी पूरा पानी मिलता रहा है, जब वर्ष 2016, 2017, 2018 और 2019 में बांध का जलस्तर सबसे कम रहा है। यही नहीं इस समय जलस्तर उन वर्षो से कहीं ज्यादा है। वर्ष 2019 में जलस्तर 1623 था, तो 0.553 एमएएफ पानी फालतू हो गया था। स्पष्ट है कि हमें बांध से पानी निकालना ही पड़ता है ताकि बारिश के समय उसे भरा जा सके। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हरियाणा को हर वर्ष लगभग 8500 क्यूसेक पानी ही मिलता रहा है। राज्यों की माँग हर 15 दिन में कम या ज्यादा होती रहती है, जिसे बीबीएमबी की एक तकनीकी कमेटी द्वारा तय किया जाता है ।श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि गत 26 अप्रैल को उन्होंने स्वयं श्री भगवंत मान को फोन पर बताया था कि बी.बी.एम.बी. की टेक्निकल कमेटी ने पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान को पानी छोड़ने का जो निर्णय 23 अप्रैल को लिया था, उसके क्रियान्वयन में पंजाब के अधिकारी आनाकानी कर रहे हैं। उस दिन मान साहब ने मुझे स्पष्ट आश्वासन दिया था कि वे तुरंत अपने अधिकारियों को निर्देश देकर कल ही इसका क्रियान्वयन सुनिश्चित करवाएंगे। इस मामले में 27 अप्रैल को दोपहर 2 बजे तक जब पंजाब के अधिकारियों ने कुछ नहीं किया तो मैंने श्री भगवंत मान को पत्र लिखकर इन तथ्यों से अवगत करवाया। 48 घंटे तक पत्र का जवाब नहीं दिया। बल्कि, मान साहब ने अपनी राजनीति चमकाने के लिए एक वीडियो जारी करके तथ्यों को दरकिनार करते हुए, जनता को भ्रमित करने का प्रयास किया ।उन्होंने कहा कि हरियाणा के लिए कुल आवंटित क्षमता 12.55 एमएएफ है, जबकि हरियाणा को 10.67 एमएएफ ही पानी मिल रहा है। जबकि पंजाब के लिए कुल आवंटित क्षमता 14.67 एमएएफ है, परंतु पंजाब 17.15 एमएएफ पानी का उपयोग कर रहा है। इससे स्पष्ट है कि पंजाब अपने आवंटित हिस्से से कहीं ज्यादा मात्रा में पानी का उपयोग कर रहा है। जबकि, हरियाणा को उसके आवंटित हिस्से से 17 प्रतिशत कम पानी मिल रहा है ।उन्होंने कहा कि एसवाईएल का निर्माण न होने के कारण भी हरियाणा पानी के अपने आवंटित 3.5 एमएएफ हिस्से में से केवल 1.62 एमएएफ पानी का ही उपयोग कर पा रहा है। जबकि भगवंत मान की सरकार तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर केवल भ्रमित करने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के काफी जिलों में पीने के पानी की समस्या आ रही है, जिसको हम संभाल रहे हैं। यह समस्या न आती अगर मान साहब पानी न रोकते ।उन्होंने कहा कि बीबीएमबी, जो एक केंद्रीय और निष्पक्ष संस्था है, ने तकनीकी आधार पर हरियाणा का कोटा तय किया। लेकिन मान सरकार ने इसे मानने से इनकार कर दिया। यह न केवल हरियाणा के साथ अन्याय है, बल्कि भारत के संघीय ढांचे पर सीधा प्रहार है। इतना ही नहीं, मान साहब का दावा कि 31 मार्च को हरियाणा का पानी खत्म हो गया, पूरी तरह भ्रामक है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2022, 2023 और 2024 में कभी भी अप्रैल और मई माह में हरियाणा कॉन्टेक्ट प्वाइंट पर 9000 क्युसिक से कम पानी नहीं दिया गया। मई के महीने में डैम से जो पानी आता है, वह पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान पीने के लिए ही उपयोग करते हैं। कई साल से हरियाणा को आने वाले पानी में से 800 क्यूसिक पानी राजस्थान, 400 क्यूसिक पानी पंजाब और 500 क्यूसिक पानी दिल्ली को जाता है। अगर पिछले तीन साल की बात करें, तो मई 2022 में हरियाणा को औसतन 9780 क्युसिक, मई 2023 में औसतन 9633 क्युसिक और मई 2024 में औसतन 10062 क्युसिक पानी मिला था ।श्री नायब सिंह सैनी ने हैरानी जताते हुए कहा कि पंजाब सरकार को पहले दिल्ली को जाने वाले पानी पर कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन दिल्ली चुनाव के परिणाम के बाद ऐसा लगता है कि पंजाब सरकार ये सब दिल्ली की जनता से बदला लेने के लिए कर रही है।

पानी के मुद्दे को लेकर हम मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के साथ — भूपेंद्र सिंह हुड्डा – पत्रकार वार्ता के दौरान उपस्थित पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि पंजाब सरकार ने हरियाणा का पानी रोककर असंवैधानिक और अमानवीय काम किया है। हर साल इतना ही पानी हरियाणा को मिलता आ रहा है। पानी का शेयर डैम के लेवल के अनुसार तय किया जाता है। 21 मई से तो डैम के भरने की अवधि शुरू होती है। उन्होंने कहा कि आज डैम में पानी का स्तर लगभग 1555 फुट के आस—पास है। पहले कई बार इससे कम स्तर तक भी पानी गया है। तब भी हरियाणा को उसका पूरा पानी मिला है। डैम का सबसे कम स्तर लगभग 1500 फुट है ।श्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि ये जो पानी का विवाद है, इसका समाधान है एसवाईएल का निर्माण। इस मामले पर हम सभी पार्टियां एक साथ हैं। हरियाणा में जो पीने के पानी का संकट आया है, उसका हल निकालने के लिए हम सभी दल मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के साथ हैं।

हम हरियाणा सरकार और हरियाणा की जनता के साथ खड़े हैं — सुशील गुप्ता – आम आदमी पार्टी के स्टेट प्रेजिडेंट श्री सुशील गुप्ता ने कहा कि इस विषय पर प्रधानमंत्री से मिलकर हल निकालें। हरियाणा के हित को लेकर आम आदमी पार्टी हमेशा समर्थन करती रही है और पानी के मुद्दे पर हम हरियाणा सरकार और हरियाणा की जनता के साथ खड़े हैं।

सूचना

सभी पाठकों को सूचित किया जाता है कि किसी कारणवश यदि भारत देश हमारा व चड़दीकला समाचारपत्र आपको नियमित रूप से नहीं मिल रहा है तो कृपया नीचे दिए फोन नंबर पर संपर्क करें।

मोब: 9416406615

पाठकों हेतु आवश्यक सूचना

समाचार-पत्र दैनिक भारत देश हमारा करनाल में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्पले/ क्लासीफाइड) के तथ्यों की जिम्मेवारी नहीं लेता। हमारा समाचार पत्र इनको प्रमाणित नहीं करता। पाठकों से निवेदन है कि वे इन विज्ञापनों पर कार्रवाई करने से पूर्व तथ्यों की पुष्टि अवश्य कर लें।

सूचना

हरियाणा में चढ़दीकला टाईम टीवी न्यूज चैनल,भारत देश हमारा व रोजाना चढ़दीकला पंजाबी समाचार पत्र में पत्रकार बनने तथा विज्ञापन एवं समाचार देने के लिए संपर्क करे।

कार्यालय: 15-ए, माल रोड़
नजदीक अम्बेडकर चौंक, करनाल
मोब: 9416406615

सदा आपके साथ

जन्मदिन,विवाह वर्षगांठ,संयुक्त परिवार और ग्रुप सैल्फी (2 से अधिक)की फोटो हमें भेजें।
नोट:मेल में नाम पता व मोबाईल नंबर जरूर लिखें।
सभी सेवाएं निशुल्क है।
E-mail chardikla.hr@gmail.com
Whatsapp: 9896359037,8307425115

आवश्यक सूचना

दैनिक पंजाबी चढ़दीकला एवं हिन्दी दैनिक भारत देश हमारा समाचार-पत्र में खबरें एवं विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें।
कार्यालय 26 ग्रीनपार्क तहसील टाऊन पानीपत।
मोब: 9215537704,7206600325,7206300081

कृष्ण कुमार सन्धु,सम्पादक,पब्लिशर व श्रीमती सुमन लता प्रिंटर ने दैनिक भारत देश हमारा जेएसडी पब्लिकेशन्स प्राईवेट लिमिटेड के लिए मोर्चा प्रिंटर्स, एससीओ 3-4, चौंक दुखनिवारण साहिब ,सरहिंद रोड पटियाला के कीपर जगजीत सिंह दर्दी से छपवा कर कार्यालय दैनिक भारत देश हमारा, 15-ए,माल रोड, करनाल से प्रकाशित किया (सम्पादक - कृष्ण कुमार सन्धु)
PRGI (RNI) Regd. No.HARHIN/2017/74227

वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में मीडिया हमेशा आगे : बिश्नोई

ज्ञान सरोवर में मीडियाकर्मियों का राष्ट्रीय सम्मेलन आरम्भ

करनाल/माउंट आबू, 3 मई (रविन्द्र मलिक): राजस्थान के उद्योग एवं खेल मंत्री के.के. विश्नोई ने कहा कि विश्व शांति, जलवायु, पर्यावरण संरक्षण समेत कई प्रकार की वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के साथ उनका समाधान करने में मीडिया हमेशा आगे रहा है। समाज को नई दिशा देने में मीडिया का विशेष योगदान है। विकट परिस्थितियों में मीडियाकर्मी अपनी जान की परवाह किए बिना दायित्वों को पूरे मनोयोग से निभाने में अग्रसर रहते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था मानव जीवन की सर्वोच्चता का अभिप्राय है जिसने विश्व के हृदय में आत्म चेतना का प्रकाश फैलाने का पुनीत कार्य किया है। आत्म चिंतन करने का प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराना महान काय है। जिसके लिए मीडिया ने हमेशा पहल की है। यह बात उन्होंने शुक्रवार को ब्रह्माकुमारी संगठन के ज्ञान सरोवर में संगठन के मीडिया प्रभाग की ओर से वैश्विक शांति व सद्भाव के अग्रदूत के रूप में मीडिया की भूमिका विषय पर आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन के उदघाटन सत्र में कही। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में मीडियाकर्मियों के सकारात्मक व संगठित प्रयासों से भारत विश्व गुरु के रूप में सबके सामने होगा। जिसके लिए ब्रह्माकुमारी संगठन के साथ समाज के हर वर्ग को मिलकर दृढ़तापूर्वक इस पुनीत कार्य में अपना योगदान देना चाहिए। फिर से स्थापित होगा भारत में शांति का स्वराज्य ब्रह्माकुमारी संगठन की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मोहिनी बहन ने वर्तमान विश्व के परिदृश्य को दृष्टिगत रखते हुए मीडियाकर्मियों को निरंतर सकारात्मक दिशा में अहम योगदान देने पर बल दिया। संगठन की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बीके सुदेश दीदी ने कहा कि शांति का स्वराज्य भारत में था। जो फिर से स्थापित हो रहा है। शांति कोई जंगल में जाने से नहीं मिलती बल्कि कर्म करते हुए धैर्यता, सरलता, शीतलता, मन की स्थिरता, पारदर्शिता, स्नेहमयी व्यवहार बनाए रखना स्वाभाविक अनुभूति का नाम है।

ईश्वर की अनुकंपा के लिए सत्यता जरूरी : जयपुर विधायक डॉ. गोपाल शर्मा ने कहा कि ईश्वर की अनुकंपा का अनुभव करने के लिए जीवन में सत्यता होनी चाहिए। स्वभाविमान में रहने वाले ही सभ्य समाज की स्थापना कर सकते हैं। जर्रे-जर्रे पर अशांति व भय के माहौल के बीच मीडिया की शक्ति ही शांति व सद्भाव को बल प्रदान कर सकती है। आतंकवाद के खिलाफ सारा भारत एक है। ऐसा कोई कार्य नहीं होना चाहिए जो सृष्टि की शांति के खिलाफ जाता हो। ज्ञान सरोवर के पवित्र स्थान से अद्भुत अनुभवों का सभी सहभागियों को लाभ लेकर जीवन को संस्कारवान बनाना चाहिए।

आत्मा के सत्य को जाने बिना प्रगति संभव नहीं : माखनलाल चतुर्वेदी यूनिवर्सिटी भोपाल जेएमएस विभाग प्रो. डॉ. संजय द्विवेदी ने कहा कि आत्मा के सत्य को जाने बिना प्रगति संभव नहीं है। शिक्षा के केंद्र में शिक्षित होने की बजाए दुकानों जैसा कार्य हो रहा है। लोकतंत्र की आत्मा पर गहराई से विचार करना पड़ेगा। पत्रकारिता की पूरी यात्रा सवालों की यात्रा है। संचार व संवाद को छोड़ विवाद की तरफ जाने से समस्यायें और विकराल हो जाती हैं। स्वयं का सुधार करने की परंपरा को बल देने की जरूरत है। असहमति को अपना सौंदर्य नहीं बनाना चाहिए। शांति का संदेश देना भारत की नियति है। मीडिया को समावेशी, विविधता में एकता बनाए रखने वाले मूल्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

शान्ति का दाता है भारत : रायपुर जेएमसी कुशाभाऊ ठाकरे यूनिवर्सिटी के पूर्व वाइस चांसलर प्रो. डॉ. मानसिंह परमार ने कहा कि भारत शांति का दाता है। शान्ति के बिना विकास असंभव है। भारत की सोच हमेशा से ही शांतिप्रिय रही है। शिव परमात्मा के माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने संसार में शांति का संदेश दिया है। मीडिया ऐसा माध्यम है जो विश्व में शान्ति स्थापना के कार्य में सकारात्मक भूमिका अदा कर सकता है।

राजयोग का अभ्यास जरूरी : ब्रह्माकुमारी संगठन के अतिरिक्त सचिव बीके मृत्युंजय ने कहा कि स्वयं के मन को परमात्म शक्तियों की ऊर्जा से भरपूर करने के बाद ही वैश्विक शांति व सद्भाव के बीज बोए जा सकते हैं। जिसके लिए अपनी दिनचर्या में कुछ समय राजयोग का अभ्यास करना चाहिए। इन्होंने भी विचार व्यक्त किए मल्टी मीडिया प्रमुख, प्रभाग अध्यक्ष बीके करुणा, प्रभाग उपाध्यक्ष बीके आत्मप्रकाश, दिल्ली से आए एक समाचार पत्र के एक्सक्युटिव चीफ एडीटर विष्णु प्रकाश त्रिपाठी, प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक बीके शान्तनु, बीके निकुंज, बीके सुशांत, बीके सरला, जयपुर क्षेत्रीय संयोजिका बीके चंद्रकला, डॉ. बीके रीना आदि ने भी विचार व्यक्त किए। शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा बीके शीलू बहन ने राजयोग का अभ्यास कराते हुए गहन शांति की अनुभुति कराई।

उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक अशोक कुमार वर्मा के आगमन पर उनका स्वागत किया एवं ज्ञापन दिया

कालका, 3 मई (अख्तर फ़ारूक़ी,अजीत सिंह): उत्तर रेलवे के महाप्रबंधक अशोक कुमार वर्मा के कालका वर्कशॉप में निरीक्षण/ आगमन पर एआईओबीसीआरईए एनआर कालका ब्रांच के शाखा मंत्री संजीव कुमार व शाखा अध्यक्ष शशांक के नेतृत्व में उनका स्वागत किया व कर्मचारियों की प्रमुख मांगों को महाप्रबंधक के समक्ष रखा एवं उनसे चर्चा की।वे सभी मांगे आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।कालका रेलवे हॉस्पिटल में कोई पुरुष डॉक्टर भी नहीं है, पुरुष डॉक्टर के नियुक्त होने पर पुरुष मरीज़/कर्मचारी बेझिझक अपनी व्यथा को डॉक्टर के समुख रख सकते हैं। रेलवे हॉस्पिटल कालका में लैब की भी व्यवस्था नहीं है,जिस कारणवश रेलवे कर्मचारी व उनके परिवारजनों की किसी भी प्रकार की खून/ रक्त से सम्बंधित जांच नहीं हो पाती है। सभी को प्राइवेट लैब द्वारा जांच करवानी पड़ती है, अत: प्रशासन से मांग की जाती है कि कालका में नजदीक पिंजौर स्थित खुराना हॉस्पिटल या जे.एन. शौरी हॉस्पिटल में रेलवे पैनल पर /(लिंक जोड़ा जाए) लिया जाए। इन हॉस्पिटल में प्रसूति विशेषज्ञता गर्भवती महिलाओं के लिए महिला डॉक्टर, हॉस्पिटल में लैब,अल्ट्रासाउंड, एक्स रे ताकि कालका शहर में रह रहे सेवानिवृत्त बुजुर्ग कर्मचारियों, एवमं रेल सेवा में कार्यरत सभी कर्मचारियों,गर्भवती महिलाओं जैसे की डिवीजन, वर्कशॉप के सभी कर्मचारियों उनके परिजनों को मेडिकल सुविधाओं का पूर्ण लाभ मिल सकेगा। रेलवे हॉस्पिटल कालका में कर्मचारियों के लिए रेफ़रल सुविधा को आसान किया जाए ताकि उन्हें रेफ़रल के लिए बार बार अंबाला न जाना पड़े। कालका रेलवे हॉस्पिटल में एम्बुलेंस नहीं है। जिससे आपातकाल स्थिति में मरीज़ो को कालका से बाहर जाने में मरीजों एवमं उनके परिजनों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। आज के समय मे रेलयात्रियों को गंतव्य तक जाने के लिए सभी लिंक रेलगाड़ियां चंडीगढ़ से है या अम्बाला से है। कालका रेल कर्मचारियों एवं शहर वासियों को काफी परेशानी होती है। इसलिए हर 2 घंटे के अंतराल के उपरांत ईएमयू गाड़ी को चलाया जाए। जिससे रेलवे कर्मचारी और कालका शहर वासियों को अपने गंतव्य तक पहुंचने में सुविधा हो सके। कालका में रेलवे आवास लगभग सन 1903 के बने हुए हैं। इनकी बार बार मुरम्मत करवानी पड़ती है, जिससे कभी भी बड़े हादसों का खतरा बना रहता है। अत: रेलवे (आवास) की बिल्डिंगों का नवीनीकरण किया जाए। कालका वर्कशॉप में ओबीसी से संबंधित एक लाइजन ऑफिसर नियुक्त किया जाए ।अभी तक कोई भी लाइजन ऑफिसर को नॉमिनेट/ नियुक्त नहीं किया गया है, ।लाइजन ऑफिसर नियुक्त करने पर ओबीसी कर्मचारियों की समस्याओं का शीघ्र सुलझाया जा सकेगा। कालका में रेलवे क्वार्टरों में गर्मियों के मौसम में पीने के पानी की समस्या बनी रहती है इस समस्या का स्थाई हल किया जाए। वर्तमान में सभी कार्यरत कर्मचारियों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों तथा ड्यूटी पास को भी एचआरएमएस के माध्यम से ऑनलाइन सुविधा पास, ड्यूटी पास मिल रहा है। जब कोई रेलवे कर्मचारी ड्यूटी पर जा रहा होता है तथा लम्बी दूरी की यात्रा कर रहा होता है, तो उसे ड्यूटी पास पर कन्फर्म टिकट मिलना संभव नहीं होता, क्योंकि विशेषाधिकार पास/ पीटीओ पर आरक्षण भी इसी कोटे के अंतर्गत आता है । तथा ट्रेनों में एडवांस सीटों को 60 दिन पहले तक बुक किया जा सकता है। अत: ओबीसी एसोसिएशन आपसे मांग करती है कि कृपया ड्यूटी पास कोटे के अंतर्गत सीटों की संख्या बढ़ाने के लिए आवश्यक कदम उठाएं तथा रेलवे कार्य के हित में सभी एक्सप्रेस, सुपरफ़ास्ट ट्रेनों में भी ड्यूटी पास पर आरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए, ताकि कर्मचारियों को किसी प्रकार की समस्या न हो। महाप्रबंधक अशोक कुमार वर्मा के कालका वर्कशॉप की कार्यप्रणाली से प्रभावित होकर 1,00,000 रुपये इनाम की घोषणा भी की। इस मौके पर कार्यकारी अध्यक्ष सतविंदर सिंह,कोषाध्यक्ष तेजवीर सिंह, उपाध्यक्ष घनश्याम यादव, सहायक सचिव वीरेंद्र सिंह, मंडल ऑडिटर रवि कुमार उपस्थित रहे।

विकास कार्यों को लेकर भाजपा प्रतिनिधिमंडल ने विधायक शक्ति रानी शर्मा को सौंपा मांग पत्र

रायपुररानी, 3 मई (देवेन्द्र सिंह): रायपुररानी क्षेत्र की विकासात्मक प्राथमिकताओं और अधूरी पड़ी परियोजनाओं को लेकर भाजपा मंडल रायपुररानी के प्रतिनिधिमंडल ने शनिवार को विधायक शक्ति रानी शर्मा से भेंट की और उन्हें एक विस्तृत मांग पत्र सौंपा। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व मंडल अध्यक्ष रोहित सैनी ने किया। मुलाकात

के दौरान विधायक शक्ति रानी शर्मा ने प्रतिनिधि मंडल को आश्वस्त किया कि वे सभी मांगों पर शीघ्र कार्यवाही करेंगी और संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश भी जारी करेंगी। मांग पत्र में रायपुररानी क्षेत्र की प्रमुख समस्याओं और जनहित के मुद्दों को प्राथमिकता दी गई है। इनमें मुख्य रूप से मौली से प्यारवाला तक फोरलेन सड़क पर स्ट्रीट लाइटें लगवाने, टांगरी पुल से पारवाला तक समुचित रोशनी की व्यवस्था करने और खेड़ी गांव से खटौली तक टांगरी नदी पर नया पुल निर्माण की मांग प्रमुख है। इन क्षेत्रों में रात्रिकालीन समय में आवागमन में कठिनाइयों और सुरक्षा की दृष्टि से यह परिवर्तन आवश्यक बताया गया है। इसके अतिरिक्त, रायपुररानी में बागवानी विभाग के लिए नया भवन, महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यालय के लिए स्थान की व्यवस्था और हरयोली से खेड़ी के बीच वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त पुल का पुन: निर्माण भी मांग पत्र में शामिल हैं। जानकारी देते हुए भाजपा मंडल अध्यक्ष रोहित सैनी ने बताया कि यह मांग पत्र रायपुररानी क्षेत्र के विकास के लिए सौंपा गया है। हमारी पूरी टीम इन परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए एकजुट है और हमें उम्मीद है कि विधायक शक्ति रानी शर्मा शीघ्र इन मुद्दों पर कार्यवाही करेंगी। क्षेत्रवासियों की समस्याओं का समाधान हमारी प्राथमिकता है और हम इस दिशा में निरंतर प्रयासरत रहेंगे। इस मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष रोहित सैनी, महामंत्री रामकुमार राणा, अनिल कुमार शर्मा, सरपंच बलजीत सैनी टिब्बी माजरा, तरसेम लाल सैनी टिब्बी माजरा, सर्जन सिंह टोड़ा, डॉ. मोहित शर्मा जासपुर सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रायपुररानी में सरपंच एसोसिएशन की बैठक आयोजित, सामाजिक सौहार्द और सुरक्षा व्यवस्था पर हुआ मंथन

रायपुररानी, 3 मई (देवेन्द्र सिंह): खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी कार्यालय रायपुररानी में शनिवार को सरपंच एसोसिएशन द्वारा एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता एसोसिएशन के प्रधान रविंद्र चौधरी प्यारेवाला ने की। बैठक में खासतौर पर मौली गांव में हाल ही में उपजे विवाद पर चर्चा की गई। दोनों पक्षों के बीच संवाद स्थापित कर शांतिपूर्ण समाधान निकालने की दिशा में कदम उठाने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर रायपुररानी क्षेत्र के सरपंच प्रतिनिधियों ने सहमति जताई कि ऐसे मामलों में संवाद और समझदारी से ही स्थायी समाधान संभव है। बैठक

में सामाजिक समरसता को बनाए रखने पर भी जोर दिया गया। जानकारी देते हुए सरपंच एसोसिएशन के प्रधान रविंद्र चौधरी ने बताया कि पूरे रायपुररानी ब्लॉक में जल्द ही वेरिफिकेशन अभियान शुरू किया जाएगा। इस अभियान में अवैध रूप से लगी रेहड़ी-फड़ी, रोहिंगिया नागरिकों और अन्य प्रवासी लोगों की पहचान कर उचित कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने स्पष्ट किया कि यह अभियान पूरी पारदर्शिता से संचालित होगा और किसी भी निर्दोष व्यक्ति के साथ अन्याय नहीं होगा। उन्होंने सभी सरपंचों से आह्वान किया कि वे इस अभियान में पंचायतों और पुलिस प्रशासन का सहयोग करें, ताकि गांवों में सुरक्षा व्यवस्था को और सशक्त किया जा सके। इस मौके पर सरपंच रविंद्र चौधरी प्यारेवाला, मुखराज गोबिन्दपुर, नसीम सुल्तानपुर, सुनील राणा हरिपुर, सुखचैन बधौर, बलजीत सैनी टिब्बी माजरा, अमन सरकपुर, सरपंच प्रतिनिधि देव खान हरयोली, महिपाल नागरा, मदन नटवाल, अजय ठरवा, तरसेम देबड़, बंत समलेहड़ी सहित अन्य प्रमुख सरपंच प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

मारपीट व जातिसूचक टिप्पणी के आरोप में तीन युवक गिरफ्तार

रायपुररानी, 3 मई (देवेन्द्र सिंह): मौली गांव से जुड़े एक विवाद में मारपीट और जातिसूचक शब्दों के प्रयोग का मामला सामने आया है। शिकायत के आधार पर पुलिस ने तीन युवकों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है, जबकि क्षेत्र में शांति बनाए रखने हेतु प्रशासन द्वारा सतर्कता बरती जा रही है। पुलिस प्राथमिकी के अनुसार, आईटीआई के छात्र हर्ष और सर्वजीत ने पुलिस को दी गई शिकायत में बताया कि जब वे सेक्टर-5 बस स्टैंड पर पहुंचे, तो वहां कुछ युवकों ने उनके साथ मारपीट की और जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया। शिकायत में यह भी कहा गया कि इन युवकों ने हर्ष द्वारा इंस्टाग्राम पर डाली गई एक वीडियो स्टोरी को डिलीट करने का दबाव डाला। इनकार करने पर आरोपियों ने गाली-गलौच और शारीरिक हमला किया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुँची, लेकिन आरोपी फरार हो चुके थे। जबकि मामले की जांच एसीपी लॉ एंड ऑर्डर सुरेंद्र डुडी द्वारा की जा रही है। वहीं, शिकायत के आधार पर पुलिस ने बरवाला से साहिल निवासी मौली, मोहित निवासी मौली और आर्यन निवासी बरवाला को हिरासत में लेकर पूछताछ की। जांच में आरोपों की पुष्टि होने पर पुलिस ने तीनों युवकों को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से कोर्ट ने उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

10 मई को शाहपुर में होगा 34वां विशाल जागरण एवं भंडारा, श्रद्धालुओं में उत्साह

रायपुररानी, 3 मई (देवेन्द्र सिंह): गांव शाहपुर में 10 मई को 34वां विशाल जागरण एवं भंडारा बड़े ही श्रद्धा और भक्ति के साथ आयोजित किया जाएगा। जानकारी के अनुसार, भंडारा 10 मई को आयोजित होगा और उसी दिन रात्रि 9 बजे से गोगा जाहार वीर की चौंकी शुरू होगी। जागरण के दौरान गुणगानकर्ता मनीष और लक्की बाबा जी की महिमा का प्रचार करेंगे और भक्ति संगीत से श्रद्धालुओं के मन को शांत और पवित्र करेंगे। इस आयोजन में रमेश कुमार भगत का विशेष सहयोग रहेगा। जागरण में क्षेत्र के कई गांवों से भक्तजन शिरकत करेंगे और बाबा जी की महिमा का गुणगान करेंगे। साथ ही भक्ति संगीत, कीर्तन और धार्मिक भजन इस रात को और भी पावन बनाएंगे। इस विशेष आयोजन में योगदान देने वालों में प्रवीन शाहपुर, मामचंद और बिंद्र खानपुर, नरेंद्र सिंह, कपिल, काला ड्राइवर नारायणपुर, शुभम दंदरोलो, फौजी नाथ ढोली, श्योराम, संजीव छाबड़ा, जंगशेर सालापुर, राजेश बड़ौना, मनीष नोहनी, संजय, सोनू, दिनेश, शुभम, कुलदीप, युशुफ़ खान, प्रिंस, सैंटी अकालगढ़, टीटू शाहबाद, छिन्दा सुनील, गुरमेल सिंह उड़दन, जसविंद्र, शोकी, जाफर खान, गुरु सिन्ना खान, गुरसेवक दयालपुर, राजेन्द्र शाहपुर, मुकेश, मनी डेराबस्सी, बलकार दयालपुर, विकास निशु, बलविंद्र नयागांव, संजू शाहबाद, रजत और चंद्रभान नन्हेड़ा, विशाल शाहपुर जैसे अनेक श्रद्धालु शामिल है।

COURT NOTICE

In the Court of
Akshay Arora
Civil Judge (Junior Division), Ambala
CNR No. HRAM02-000330-2023
Next Date: 18.07.2025
CIS No.: CS/197/2023

Satinder Kaur W/o Late Shri Manjit Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o H No. 1062, Phase-9 SAS Nagar, Mohali (Punjab)

Versus

1) General Public 2) Jatinder Pal Singh 3) Gurvinder Paul Singh Both Sons of Lt. Sh. Manjit Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o H No. 1062, Phase-9, SAS Nagar, Mohali (Punjab) 3) Avinash Lata W/o Late Sh. Manmohan Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o #22, New Colony, Near Rajput Bhawan, Ladhewali Road, Jalandhar (Punjab) 5) Vishal Preet Singh S/o Late Sh. Manmohan Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o #22, New Colony, Near Rajput Bhawan, Ladhewali Road, Jalandhar (Punjab) 6) Shashi Shekhar Singh Both Sons of Lt. Sh. Manmohan Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o #22, New Colony, Near Rajput Bhawan, Ladhewali Road, Jalandhar (Punjab) 7) Gauri Kaur D/o Late Sh. Manmohan Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o #22, New Colony, Near Rajput Bhawan, Ladhewali Road, Jalandhar (Punjab) 8) Gagandeep Singh S/o Late Sh. Gurmeet Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o H No.42 Mathura Nagar, Ambala City 9) Gurdeep Kaur D/o Late Sh. Gurmeet Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh 10) Gurpreet Kaur D/o Late Sh. Gurmeet Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh Both R/o H No. 42, Mathura Nagar, Ambala City.

Suit for declaration to the effect u/o 7rule 11 of CPC

Notice to: 1) Gagandeep Singh S/o Late Sh. Gurmeet Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh R/o H No.42 Mathura Nagar, Ambala City 2) Gurdeep Kaur D/o Late Sh. Gurmeet Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh 3) Gurpreet Kaur D/o Late Sh. Gurmeet Singh S/o Late Sh. Mohinder Singh Both R/o H No. 42, Mathura Nagar, Ambala City.

In above titled case, the defendant could not be served. It is ordered that defendants should appear in person or through counsel on **18.**07.2025 at 10:00 A.M.

For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?mod=district_notice&district=Ambala

Dated, this day of 02-05-2025

Sd/- Akshay Arora
Civil Judge (Junior Division), Ambala

बड़ी वारदात के साथ दहला पंजाब का यह इलाका, मिनटों में मची अफरा-तफरी

सुल्तानपुर लोधी 3 मई (निस) सुल्तानपुर लोधी के गांव चूहड़पुर में 2 पक्षों में हुए मामूली विवाद ने हिंसक रूप धारण कर लिया और एक पक्ष की ओर से दूसरे पक्ष पर गोली चलाने की चर्चाएं हैं। इस दौरान 1 व्यक्ति और 2 महिलाएं घायल होने की जानकारी प्राप्त हुई। जानकारी के अनुसार सिविल अस्पताल सुल्तानपुर लोधी में उपचाराधीन मलकीत सिंह पुत्र साधू सिंह चूहड़पुर ने बताया कि उनके पड़ोसी ऐ.सी. लगा रहे थे तो हमारी ओर से सुराख कर रहे थे। इसके पश्चात हमने इसकी शिकायत थाना कबीरपुर पुलिस कोदी थी और अपनी सुरक्षा के लिए एक गेट लगा लिया था, जिसको उखाड़ने केलिए मंगलवार को कुछ अज्ञात व्यक्ति शाम 6 बजे आए और आते ही उन्होंने हमारे साथ गाली-गलोच करना शुरू कर दिया और गेट उखाड़ने लगे, जिसके पश्चात नौजवानों ने गोली भी चलाई जो कि उसकी टांग पर लगी।

COURT NOTICE

In the Court of
Ruhela Sharma
Civil Jugde (Junior Division), Karnal
CNR No. HRKR02-004138-2023
Next Date: 11.08.2025

Canara Bank

Versus

Paramjit Singh

Notice to: Paramjit Singh Son:- Sh. Rampal Village Goghripur tehsil and Distt. Karnal

In above titled case, the defendant(s)/respondent(s) could not be served. It is ordered that defendant(s)/respondent(s) should appear in person or through counsel on **11.**08.2025 at 10:00 A.M.

For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?mod=district_notice&district=Karnal

Dated, this day of 30-04-2025

Sd/- Ruhela Sharma
Civil Jugde (Junior Division), Karnal

In the Court of
Sh. Jagjit Singh
Principal Judge, Family Court, Jagadhri
CNR No. HRYN01-004164-2022
Next Date:- 03-07-2025
HMA-433-2022

Gurpreet Singh

Versus

Gurpreet Kaur

Notice to: Gurpreet Kaur Father:- Surat Singh H.No. 1832, Sector 18, Huda, Jagadhri, Distt. Yamunanagar

In above titled case, the defendant(s)/respondent(s) could not be served. It is ordered that defendant(s)/respondent(s) should appear in person or through counsel on **03.**07.2025 at 10:00 A.M.

For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?mod=district_notice&district=Yamunanagar

Dated, this day of 02-05-2025

Sd/- Sh. Jagjit Singh
Principal Judge, Family Court, Jagadhri

In the Court of
Kanwal Kumar
Civil Judge (Senior Division), Ambala
CNR No. HRAM02-001489-2020
Next Date: 03.07.2025

Canara Bank

Versus

Sh. Ashish Kumar

Suit for Recovery

Notice to: Sh. Ashish Kumar Father:- Sh. Vijay Kumar House No.. 21/334, Baldev Nagar, Ambala City

In above titled case, the defendant(s)/respondent(s) could not be served. It is ordered that defendant(s)/respondent(s) should appear in person or through counsel on **03.**07.2025 at 10:00 A.M.

For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?mod=district_notice&district=Ambala

Dated, this day of 30-04-2025

Sd/- Kanwal Kumar
Civil Judge (Senior Division), Ambala

In the Court of
Ms. Deepti
Civil Judge (Senior Division), Sonipat, Sonipat
CNR No. HRSO02-000832-2025
Next Date: 29.07.2025
Successon

Sahib Amrinder Singh Bansal

Versus

General Public

Prayed that the Succession cerificate may kindly be granted to the petitioner for collection of saving bank amount as well as shares certificate amount or in alternate to transfer the share certificate in the name of the petitioner, lying deposited with the concerned authorities as specified in forgoing para of this petition and further the petitioner may be empowered by the said succession certificate to receive the saving bank amount/share certificate equity shares amount in the name of petitioner.

Notice to: General Public:- Sonipat, Haryana

In above titled case, the defendant(s)/respondent(s) could not be served. It is ordered that defendant(s)/respondent(s) should appear in person or through counsel on **29.**07.2025 at 10:00 A.M.

For details logon to https://highcourtchd.gov.in/?trs=district_notice&district=Sonipat

Dated this day of 02-05-2025

Sd/- Ms. Deepti
Civil Judge (Senior Division), Sonipat, Sonipat

शरीर की उचित देखभाल एवं साफ सफाई रखने से अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है : डॉ. प्रमोद

बाबैन, 3 मई (राजेश कुमार): आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल बरगट जट्टान में शनिवार को नवीन संकल्प शिविर योजना के अंतर्गत स्कूल के बच्चों का फ्री स्वास्थ्य चेकअप शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का नेतृत्व डॉ. प्रमोद सिंह ने किया । इस अवसर पर उनकी सहयोगी टीम के सदस्य डॉ. नीरू, डॉ. चेतन व डॉ. राजेश ने बच्चों के स्वास्थ्य की जांच कर बच्चों को दवाइयां वितरित की। स्कूल के प्रबंधक सोहन लाल व प्रधानाचार्य रोबिन कुमार ने टीम का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इस शिविर में बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के निवारण के लिए मोबाइल मेडिकल यूनिट की व्यवस्था की गई जिसमें डॉक्टरों की टीम की देखरेख में अध्यापकों व बच्चों के स्वास्थ्य की जांच कर उन्हें परामर्श दिए गए। फ्री स्वास्थ्य चेकअप शिविर में विद्यार्थियों और अध्यापकों का सामान्य, दांतों, बीपी, आरबीएस, सीबीसी, एलएफटी के परीक्षण किए गए। स्कूल के प्रधानाचार्य रोबिन कुमार ने कहा कि बच्चों के समग्र विकास में शारीरिक विकास अत्यंत जरूरी होता है। आजकल जंक फूड खाने से बच्चों में बीमारियों का खतरा अधिक बना रहता है। शिविर में डॉ. प्रमोद सिंह ने बच्चों को बताया कि शरीर की उचित देखभाल एवं साफ सफाई रखने से अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। स्कूल के प्रबंधक सोहनलाल सैनी व प्रधानाचार्य रोबिन कुमार ने डॉक्टरों टीम को स्मृति चिन्ह देकर उन्हें सम्मानित किया। सोहन लाल सैनी ने कहा कि बच्चों के स्वास्थ्य की जिम्मेदारी भी विद्यालय का एक नैतिक कर्तव्य है जिसका स्कूल की तरफ से पूरा ध्यान रखा जाता है।

सम्पादकीय

नेताओं की देशभक्ति की अग्निपरीक्षा, सेना में बेटा भेजो, पेंशन लो!

भारत में एक बार विधायक या सांसद बन जाना आजीवन पेंशन की गारंटी बन चुका है, चाहे उनका संसदीय रिकॉर्ड शून्य क्यों न हो। वहीं, सीमाओं पर तैनात सैनिक हर रोज़ जान जोखिम में डालते हैं, लेकिन उनके परिवारों को न्यूनतम सुविधाएं भी संघर्ष से मिलती हैं। सवाल उठता है – क्या नेताओं की देशभक्ति सिर्फ भाषणों और नारों तक सीमित है? क्यों नहीं उनके बेटे-बेटियां सेना में भर्ती होते? अगर आम जनता अपने बच्चों को देश सेवा के लिए भेज सकती है, तो नेता सिर्फ वोट नहीं, बलिदान भी दें। वक्त आ गया है कि नेताओं की पेंशन को सेना सेवा से जोड़ा जाए – ताकि देशभक्ति सिर्फ मंच की बातें न रह जाए, बल्कि जीने का सच्चा प्रमाण बने। देशभक्ति का ज़ोर जब चुनावी भाषणों में सिर चढ़कर बोलने लगे और हर गली-चौराहे पर तिरंगे का रंग दिखने लगे, तब हमें थोड़ा रुककर यह सोचना चाहिए कि यह प्रेम किसके लिए है – देश के लिए या कुर्सी के लिए? क्योंकि जिनके मुँह में हर पल भारत माता की जय और वंदे मातरम् है, उनके बच्चे किसी इंटरनेशनल स्कूल में पढ़ते हैं, विदेश में नौकरी करते हैं, और कभी गलती से भी सीमा की तरफ नहीं देखते। लेकिन वही नेता, जब जनता से त्याग और बलिदान माँगते हैं, तो आत्मा काँप जाती है।

भारत में एक बार विधायक या सांसद बन जाने का मतलब है – रिटायरमेंट सेट है भाई! एक बार कुर्सी मिली, तो ज़िंदगीभर पेंशन, बंगला, सुरक्षा, गाड़ी, ड्राइवर, और माननीय की उपाधि मुफ्त में। चाहे संसद में आपने एक भी सवाल न पूछा हो, चाहे सदन की कार्यवाही में सिर्फ झपकी ली हो, चाहे जनता आपको अगले चुनाव में बाहर का रास्ता दिखा दे – पेंशन मिलती ही मिलती है! क्या आपने कभी सुना कि एक सैनिक, जो सियाचिन में तैनात था और तीन साल में घर आया, उसे जीवन भर की पेंशन मिल गई हो? नहीं ना? उसे हर सेवा वर्ष का हिसाब देना पड़ता है। उसे शहीद होने पर भी मुआवजे की फाइलें घूमती हैं। देशभक्ति की बात करते समय नेता अक्सर कहते हैं – हम तो देश के लिए जान देने को तैयार हैं! पर यह हम कौन है? उनके बच्चे कहाँ हैं? क्यों नहीं कोई माननीय पुत्र सीमा पर तैनात है? क्यों नहीं कोई राजकुमारी मेडिकल कोर में है? सच्चाई यह है कि ये नेता देशभक्ति को अपनी राजनीतिक दुकान के प्रमोशनल पोस्टर की तरह इस्तेमाल करते हैं, और उनके बच्चे उस दुकान से मुनाफा उठाते हैं। अगर देश में जनता को मुफ्त राशन के लिए आधार-हस्ताक्षर देना पड़ता है, तो नेता की पेंशन के लिए भी एक शर्त होनी चाहिए – पेंशन तभी मिलेगी, जब आपके परिवार का कोई सदस्य सेना में सेवा देगा। कल्पना कीजिए क्या दृश्य होगा-एक विधायक के बेटे की यूनिफॉर्म की पहली प्रेस हो रही है, एक सांसद की बेटी बूट पहन रही है, एक मंत्री का पोता हथियार चलाने की ट्रेनिंग ले रहा है। क्या तब उनके बयानों में सच्ची देशभक्ति नहीं दिखेगी? देश की सबसे कठिन सेवा – सेना की सेवा – को गरीब, मध्यम वर्ग के बच्चे निभाते हैं। वो जिनके पास न जुगाड़ है, न सुरक्षा। वो भर्ती में दौड़ते हैं, दौड़ते हुए मर भी जाते हैं। कोई कैमरा नहीं आता, कोई चैनल ब्रेकिंग न्यूज़ नहीं दिखाता। दूसरी ओर नेता के बच्चे अगर विदेश में शराब पीते पकड़े जाएं, तो भी नेता कहता है – बेटा थोड़ा भटक गया, अब अमेरिका भेज रहे हैं पढ़ने। भाई, अगर भटकने की सजा विदेश है, तो सीधे लोगों को सजा क्यों? हर बार चुनाव के समय सेना की तस्वीरें, सैनिकों की कहानियाँ, शौर्य गाथाएं पोस्टरों पर होती हैं। सर्जिकल स्ट्राइक का श्रेय लेने में हर दल आगे है, लेकिन उस ऑपरेशन में जान गंवाने वाले सैनिक का नाम किसी को याद नहीं। नेताओं को सेना सिर्फ इमोशनल वोट बैंक लगती है – जब ज़रूरत हो, तो उनकी वर्दी का इस्तेमाल करो, जब चुनाव जीत जाओ, तो उनका हाल पूछना भी गुनाह मानो। अगर सच में ये देशभक्ति दिल से है, तो नेताओं को पेंशन की जगह एक प्रमाण पत्र देना चाहिए कि उनके परिवार से कोई सदस्य सेना में सेवा दे रहा है या दे चुका है। ये एक नया कानून होना चाहिए – सिर्फ पेंशन के हक के लिए नहीं, बल्कि असली देशप्रेम का सबूत देने के लिए। एक बार एक नेता जी भाषण दे रहे थे – अगर पाकिस्तान आँख उठाएगा, तो हम आँख निकाल लेंगे! एक नौजवान खड़ा हुआ और बोला – आपका बेटा कौन-सी यूनिट में है साहब? नेता जी मुस्कराए – वो तो इंजीनियरिंग कर रहा है, विदेश जाना है उसे... जनता हँसी नहीं, रोई। क्योंकि देशभक्ति अब सिर्फ नारा बन गई है, नियति नहीं। देशभक्ति अगर सिर्फ भाषणों तक सीमित रह जाए, तो वह वोटबैंक की दुकान बन जाती है। जब तक नेता और उनका परिवार उस देशभक्ति को जीते नहीं, तब तक हमें उनके भाषणों पर तालियाँ नहीं, सवाल उठाने चाहिए। नेताओं को पेंशन से ज्यादा जिम्मेदारी चाहिए, और उनके बच्चों को भाषण से ज्यादा बूट। देश को सिर्फ जनता नहीं, नेता भी बराबर दें – त्याग, परिश्रम और बलिदान। जब तक नेताओं के बच्चे सेना की वर्दी नहीं पहनते, तब तक उनके 'बलिदान' के बोल खोखले लगते हैं। पेंशन कोई सम्मान नहीं, एक जिम्मेदारी होनी चाहिए – जो तभी मिले, जब परिवार भी राष्ट्र सेवा में उतरे। आम नागरिक के टैक्स पर ऐश करना बंद हो, अब बारी है नेता भी हिस्सा लें – सरहद पर, ज़मीन पर, और जिम्मेदारी में। वर्ना जनता सिर्फ सुनती रहेगी, और देश सेवा का बोझ उठाते रहेंगे वही, जिनके पास न ताक़त है, न पहचान – सिर्फ जुनून है।

जाति जनगणना विभाजन का नहीं विकास का आधार बने

– ललित गर्ग

पहलगाम की क्रूर एवं बर्बर आतंकी घटना के बाद मोदी सरकार लगातार पाकिस्तान को करारा जबाव देने की तैयारी के अति जटिल एवं संवेदनशील दौर में एकाएक जातिगत जनगणना कराने का निर्णय लेकर न विपक्षी दलों को बल्कि समूचे देश को चौंकाया एवं चमत्कृत किया है। सरकार का यह निर्णय जितना बड़ा है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। मोदी सरकार का जातिगत जनगणना के लिए तैयार होना सुखद और स्वागतयोग्य है। पिछले कुछ समय से जातिगत जनगणना की मांग बहुत जोर-शोर से हो रही थी। कुछ राज्यों में तो भाजपा भी ऐसी जनगणना के पक्ष में दिखी थी, पर केंद्र सरकार का रुख इस पर बहुत साफ नहीं हो रहा था। अब अचानक ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में राजनीतिक मामलों की उच्चस्तरीय कैबिनेट समिति की बैठक में यह फैसला ले लिया गया। बाद में केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मीडिया को बताया कि आगामी जनगणना में जातिगत गणना भी शामिल रहेगी। यह कदम जहां देश के राजनीतिक और सामाजिक समीकरणों को बदलेगा, वहीं सामाजिक असमानताओं को दूर करने और वंचित समुदायों के उत्थान के लिए लक्षित नीतियों को लागू करने में मील का पत्थर साबित होगा। जातिगत जनगणना 1931 यानी अखंड भारत में अंग्रेजी सत्ता ने कराई थी। भारत में जनगणना की शुरुआत अंग्रेजी हुकूमत के दौर में, सन 1872 में हुई थी और 1931 तक हुई हर जनगणना में जाति से जुड़ी जानकारी को भी दर्ज किया गया। आजादी के बाद सन् 1951 में जब पहली बार जनगणना कराई गई, तो तय हुआ कि अब जाति से जुड़े आंकड़े नहीं जुटाए जाएंगे। स्वतंत्र भारत में हुई जनगणनाओं में केवल अनुसूचित जाति और जनजाति से जुड़े डेटा को ही पब्लिश किया गया। 2011 में मनमोहन सरकार ने जातिवार जनगणना कराई अवश्य, लेकिन उसमें इतनी जटिलताएं एवं विसंगतियां मिलीं कि उसके आंकड़े सार्वजनिक नहीं किए गए। इसके बाद कुछ राज्यों ने जातियों की गिनती करने के लिए सर्वे कराए, क्योंकि जनगणना कराने का अधिकार केवल केंद्र को ही है। हालांकि भाजपा ने बिहार में जाति आधारित सर्वे का समर्थन किया, लेकिन जातिगत जनगणना को लेकर वह मुखर नहीं रही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अवश्य इसका समर्थन किया। लेकिन अब एकाएक भाजपा को जातिगत जनगणना करना अपने हित में दिखाई दिया क्योंकि अपनी नीतियों एवं योजनाओं के बल पर भाजपा ने पिछड़ी जातियों और दलितों की गोलबंदी कर सत्ता का सफर

आसान बनाया है। जातिगत जनगणना का भारतीय राजनीति और समाज-व्यवस्था पर व्यापक एवं दूरगामी प्रभाव पडेगा। कांग्रेस और कुछ क्षेत्रीय दल इसकी पुरजोर मांग करने में लगे हुए थे। सबसे ज्यादा जोर राहुल गांधी दे रहे थे, जबकि नेहरू से लेकर नरसिंह राव तक ने इसकी जरूरत नहीं समझी। यह तय है कि जातिगत जनगणना कराने के फैसले पर जहां कांग्रेस एवं अन्य विपक्षी दल इसका श्रेय लेना चाहेंगे, वहीं भाजपा इसे सामाजिक न्याय एवं समता-संतुलित समाज-निर्माण केंद्रित अपनी पहल बताएगी। जाति आधारित जनगणना सामाजिक न्याय में सहायक बनेगी या नहीं, लेकिन इससे जातिवादी राजनीति के नए दरवाजे खुलेंगे एवं आरक्षण का मुद्दा एक बार फिर राजनीति की धूरी बनेगा। कांग्रेस एवं विपक्षी दलों ने अपने संकीर्ण एवं स्वार्थी राजनीतिक नजरिये से यह मांग इसलिए उठाई थी ताकि इस आधार पर आगे आरक्षण के मुद्दे को गर्माया जा सके और जातीय गोलबंदी कर चुनावी फायदा लिया जा सके। लेकिन भाजपा-सरकार ने जाति जनगणना का ऐलान कर इस मुद्दे को अपनी पाली में ले लिया है। भले ही इसके आंकड़े आने के बाद आबादी के अनुपात में आरक्षण की मांग से भाजपा कैसे निपटेगी, यह बड़ी चुनौती उसके सामने है। वैसे भी इस तरह की पहल जिन राज्यों में हुई है, वहां भी इसे लेकर विवाद चल रहा है। ऐसे विवाद भाजपा के लिये एक नयी चुनौती बनेंगे। जाति आधारित जनगणना से भारतीय समाज के नये कोने-अंतरे-चुनौतियां सामने आयेगी। लेकिन जातिगत जनगणना के समर्थकों का मानना है कि यह सामाजिक न्याय और समावेशी विकास की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम हो सकता है। जनगणना में दलितों और आदिवासियों की संख्या तो गिनी जाती है और उन्हें राजनीतिक आरक्षण भी मिला हुआ है लेकिन पिछड़ी और अति पिछड़ी (ओबीसी और ईबीसी) जातियों के कितने लोग देश में हैं इसकी गिनती नहीं होती है। जनगणना एक बहुत बड़ी कवायद है और अगर इसमें जातिगत गणना को भी शामिल किया जा रहा है, तो काम और भी सावधानी एवं सतर्कता से करना होगा। हजारों जातियां हैं और उनकी हजारों उप-जातियां हैं। सबको अलग-अलग गिनने के लिए देश को अपनी डिजिटल शक्ति का उपयोग करना पड़ेगा। निश्चित ही नयी राजनीतिक एवं नीतिगत स्थितियां समस्याएं खड़ी होगी। अब सभी जातियों की गिनती होगी। यह गिनती मुस्लिम, ईसाई और अन्य समुदायों में भी होनी चाहिए, क्योंकि कोई दावा कुछ भी करे, जाति और उसके आधार पर विभेद सब जगह है। इससे भी ज्यादा आवश्यक, बल्कि अनिवार्य यह है कि जातिगत जनगणना जातिवाद की राजनीति का हथियार न बने और वह भारतीय समाज को विभाजित न करने पाए। इस अंदेशे को दूर करने के कुछ ठोस उपाय होने ही चाहिए कि जाति आधारित जनगणना जातीय विभाजन का कारण न बनने पाए। माना जाता है कि देश की आबादी में 52 फ़ीसदी लोग पिछड़ी और अति पिछड़ी जाति के हैं। ओबीसी समुदाय के हिसाब से का मानना है कि इस हिसाब से उनकी राजनीतिक हिस्सेदारी काफ़ी कम है। राजनीतिक दल इन समुदायों का समर्थन हासिल करने के लिए जाति जनगणना का समर्थन कर रहे हैं। भारत में जाति जनगणना आजादी के बाद रुकी, पर अब सामाजिक न्याय, नीतिगत सुधार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए इसकी जरूरत महसूस की जा रही है। पारदर्शिता और सावधानी से किया गया यह कदम समावेशी विकास का आधार बन सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जाति आधारित जनगणना को एक समतामूलक समाज निर्माण के दृष्टिकोण से समर्थन देने के संकेत दिए हैं। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि यह संवेदनशील मामला है और इसका इस्तेमाल राजनीतिक या चुनावी उद्देश्यों के लिए नहीं बल्कि पिछड़ रहे समुदाय और जातियों के कल्याण के लिए होना चाहिए। जाति जनगणना के आंकड़े प्रस्तुत होने से राजनीति और ब्यूरोक्रेसी में पिछड़ी और अति पिछड़ी जातियों की हिस्सेदारी कितनी कम है, यह डर संभवत: भाजपा को सता रहा था। लेकिन भाजपा का यह डर या तो खत्म हो गया है, या फिर उसने बिहार में इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनाव में चुनावी लाभ लेने के लिए ये क़दम उठाया है। भाजपा इसके ख़िलाफ़ थी, लेकिन एनडीए में शामिल भाजपा की ज्यादातर सहयोगी पार्टियां इसके पक्ष में हैं। जातिगत जनगणना के आंकड़े 2026 या 2027 के अंत में आएंगे और तब तक बिहार और यूपी के चुनाव हो चुके होंगे। इसलिए इसका चुनावी लाभ लेने की बात सही नहीं है।

कमंडल के मुकाबले में अब मंडल की राजनीति का समय

सनत जैन

वक्त के साथ सब कुछ बदलता है। 1989 में देश में मंडल और कमंडल की नई राजनीति की शुरुआत हुई थी। इस राजनीति ने कांग्रेस को काफी कमजोर कर दिया। भारतीय जनता पार्टी और क्षेत्रीय दलों का बड़े प्रभावी ढंग से उदय हुआ, लेकिन मंडल पर कमंडल भारी पड़ा। 1991 से लेकर 2024 तक की राजनीति कमंडल पर हुई। राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट की तर्ज पर भारतीय जनता पार्टी बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ती चली गई, लेकिन अब समय बदल रहा है। जिस तरह से जन्म-मृत्यु निर्वाद सत्य है उसी तरह राजनीति में भी समय बदलता है। समय के साथ भाग्य में भी बदलाव आता है। 2011 की जनगणना में जातियों की भी गणना की गई थी। 2011 की जनगणना में पहली बार भारत में 86 लाख जातियों का समावेश हुआ था। अंग्रेजों के जमाने में 1931 में जो जाति जनगणना हुई थी उसी समय 4000 जातियां और उपजातियों के आधार पर जनगणना के परिणाम आए थे। 2011 में यह स्थिति पूरी तरह से बदल गई। 2011 में जनगणना पंजीयक द्वारा सामाजिक, आर्थिक, जातीय जनगणना पर 4389 करोड रुपए खर्च किए गए थे। बड़े पैमाने पर जनगणना हुई थी। 2011 की जनगणना ग्रामीण विकास मंत्रालय, शहरी विकास मंत्रालय के सहयोग से पूरी की गई थी। इस जनगणना मे जनगणना कर्मियों ने घर-घर जाकर सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा, आय, व्यवसाय, आवास की स्थिति, रहन-सहन का स्तर, वाहन से संबंधित जानकारी, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, मशीनी उपकरण, खेती-किसानी का तौर तरीका और उसमें उपयोग होने वाले उपकरणों, परिवार में नौकरी से संबंधित जानकारी, सरकारी सेवा में लोगों की जानकारी, सरकारी योजनाओं के संबंध में जानकारी, जातीय तथा उपजाति के आधार पर सारी सूचनाएं एकत्रित की गईं थीं। भारत के 640 जिलों में 24 लाख ब्लॉक में यह जनगणना की गई थी। 2011 से यह जनगणना शुरू हुई थी जो 2016 में जाकर पूर्ण हुई थी। 2016 में जब जाति जनगणना के आंकड़े आए तो इसे तत्कालीन मोदी सरकार ने स्वीकार नहीं किया। जनगणना के आंकड़ों से इसे अलग कर दिया गया। 2011 की जनगणना में 40 लाख से अधिक जातियों की पहचान हुई थी। इनको पिछड़ा वर्ग, एसटी, एससी और सामान्य वर्ग में विभाजित करने को लेकर सरकार असमंजस में रही। 2016 में यदि

जाति जनगणना के आंकड़े प्रकाशित होते तो यह देश की राजनीति को बदल सकते थे। इस डर को ध्यान में रखते हुए सरकार ने इसे उजागर नहीं किया। जातीय जनगणना को लेकर पिछले कुछ वर्षों में बिहार, तेलंगाना और कर्नाटक ने अपने तरीके से जातीय सर्वेक्षण कराए हैं। उनके आंकड़े भी सामने आए है। भारत की सामाजिक व्यवस्था में धार्मिक एवं जाति आधार बहुत मजबूत हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा विविधता वाला देश है। यहां पर सभी धर्म के लोग रहते हैं। सबसे ज्यादा बोलियां हैं, सबसे ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं, सबसे ज्यादा धर्म जाति आधार पर देखने को मिलते हैं। भारत की एक बड़ी दलित और आदिवासी आबादी अपनी विभिन्न परंपराओं और विभिन्न आस्थाओं के कारण एक अलग पहचान बनाती है। उनकी मान्यताएं भी अलग-अलग होती हैं। 2016 में पूर्व केंद्रीय मंत्री लालू यादव ने इसे बड़ा मुद्दा बनाया था। उन्होंने 2016 में एक बार फिर मंडल और कमंडल की लड़ाई को तेज करने की कोशिश की थी। लालू यादव जेल गए, वहां उनका स्वास्थ्य खराब हो गया उसके बाद यह मांग कमजोर पड़ गई थी। लालू यादव चाहते थे कि 2011 की जनगणना के आंकड़ों को सार्वजनिक किया जाए। मोदी सरकार इससे बचती रही। 2022 के बाद यह मुद्दा एक बार फिर जोर पकड़ा। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने जाति जनगणना को लेकर एक आंदोलन चलाने की कोशिश की, जो सफल होती हुई दिख रही है। सरकार को भी 2025 में जनगणना के साथ जाति जनगणना करने के लिए विवस होना पड़ा है। भारत में स्वर्ण आबादी जनसंख्या के अनुपात में काफी कम है। अलग-अलग राज्यों में जाति समूह के आधार पर सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था जमीन से जुड़ी हुई है। बिहार विधानसभा चुनाव में जाति जनगणना सर्वेक्षण के माध्यम से एकत्रित की गई थी। उसके आधार पर बड़े राजनीतिक परिवर्तन की संभावना के रूप में देखा जा रहा है। इसी दबाव को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी अभी तक जाति जनगणना का विरोध कर रही थी, लेकिन उसे भी अब जाति जनगणना के समर्थन में आना पड़ा है। मोदी सरकार के इस निर्णय का क्या असर भविष्य की राजनीति में पड़ेगा, इसको लेकर तरह-तरह की चर्चाएं होने लगी हैं। 2014 के बाद से अति हिंदुवाद ने कई जाति और समूहों के बीच में एक अलगाव की स्थिति लाकर खड़ी कर दी है। जिसके कारण दलित और आदिवासी एवं अन्य हिंदू वर्ग अपने आप को उपेक्षित पा रहा है। जिसके कारण राजनीतिक परिवर्तन की एक नई बयार बहने लगी है। कमंडल की राजनीति के मुकाबले सारे हिंदुओं को 80-20 के मुकाबले में एकजुट करने की कोशिश की गई थी, लेकिन यह कभी उस स्थिति में नहीं पहुंची जहां भाजपा पहुंचना चाहती थी। भाजपा के 11 साल के शासनकाल में मुस्लिम और ईसाई विरोध के बाद जिस तरह से दलित और आदिवासियों को उपेक्षित किया गया है, उसने एक बार फिर जाति समीकरण में नई राजनीति की पृष्ठभूमि तैयार कर दी है। भाजपा समय-समय पर अपने नए-नए एजेंडा तैयार करती है। हवा के रुख को पहचान कर भाजपा तुरंत बदलाव कर लेती है। भारत में भाजपा का संगठन अब गांव तक पहुंच गया है। भाजपा एक बार फिर बदलती हुई नजर आ रही है। उनका संगठन जाति जनगणना के पक्ष में अभी से बड़े-बड़े दावे करने लगा है। उनका संगठन गांव-गांव तक सक्रिय हो गया है। ऐसी स्थिति में जनगणना को लेकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने जो तैयारी की थी इसका लाभ वह ले पाएंगे या नहीं। इसी तरह राज्यों में जो छोटे-छोटे राजनीतिक दल है। उसका फायदा उठा पाएंगे या नहीं कहना मुश्किल है। लेकिन इतना तय है कि अब कमंडल की राजनीति का स्थान मंडल लेने जा रहा है। यह लड़ाई पूंजीवाद के खिलाफ भी है। इसके क्या परिणाम होंगे अभी कहा जाना मुश्किल है। लेकिन जिस तरह से महंगाई, बेरोजगारी एवं कानून व्यवस्था की स्थिति में लोगों का जीवन मुश्किल होता जा रहा है, इससे राजनीतिक दलों की चुनौतियां बढ़ेंगी, इतना तय है।

पाकिस्तान का हुक्का-पानी बंद, निर्णायक हमले का इंतजार

-राकेश अचल

पहलगाम हत्याककांड के बाद भारत ने पाकिस्तान का हुक्का पानी बंद कर दिया, अच्छा किया। पाकिस्तानी नागरिकों को भारत से खदेड़ दिया, लेकिन क्या इससे काश्मीर में आतंकी हमले स्थाई रूप से रुक जाएंगे या ये लुका छिपी का खेल पहले की तरह जारी रहेगा? अगर आप गौर से देखें तो भारत ने पहलगाम हत्याकांड के बाद पाकिस्तान के खिलाफ अनेक प्रतिबंधात्मक कदम आनन फानन में उठाए किंतु सीधे हमला नहीं किया। पहले बार्डर सील किए, वीजा बंद किए, सिंधुजल रोका और अब हवाई मार्ग भी बंद कर दिया। सरकार की इन तमाम कार्रवाइयों से अमन पसंद जनता मुतमईन है। लेकिन वीर, अधीर देवतुल्य कार्यकर्ता अधीर हैं। पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामण को उतावले उनके मन विचलित हैं। विचलित वे हिंदू भी हैं जिनके परिजन केवल हिंदू होने की वजह से मारे गये। लेकिन बाकी देश अपने अपने काम में लगा है। देश का काम केवल युद्ध करना ही नहीं उसे टालना भी होता है। युद्ध टलना ही चाहिए। लेकिन सवाल ये है कि असल मुद्दों को भी नहीं टालना चाहिए। हमारी या किसी भी देश की सरकार आपदा में, अवसर तलाश लेती है। चीन और अमेरिका की सरकारों ने पाकिस्तान के डर का फायदा अपने ढंग से उठाया है। ये दोनों महाशक्तियां भारत का आतंकवाद के खिलाफ समर्न कर रहीं हैं लेकिन पाकिस्तान को भी युद्धक सामान देने के लिए तैयार

बैठे हैं। दोनों को भारत से आतंकित पाकिस्तान पसंद है। आतंकित, भयभीत पाकिस्तान ही दोनों को मुफीद पडता है। आने वाले दिनों में भारत और पाकिस्तान की सरकारें युद्धराग मारू गाकर अपनी जनता को असल मुद्दों से भटकाए रख सकती है। सीमा पर और देश के भीतर तनाव सरकारों को हमेशा फायदा पहुंचाता है, सरकार किस दल की है ये महत्वपूर्ण नहीं होता। कांग्रेस ने अतीत में इस तनाव का लाभ उठाया, आज भाजपा की बारी है। इस माहौल में भी सियासत दबे पांव आगे बढ रही है। जातीय जनगणना का मुद्दा अब आम सहमति की ओर बढता नजर आ रहा है। लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी ने पहली बार मोदी सरकार का इस मुद्दे पर सशर्त समर्थन किया है। उन्होने सरकार से जातीय जनगणना की टाइम लाइन बताने को कहा है। राजनीति और प्रेम में यही फर्क है। राजनीति बिना शर्त नहीं चलती और प्रेम शर्तें मंजूर नहीं करता। दोनों की अपनी तबीयत है। राहुल देश में प्रेम की दूकान खोले बैठे हैं क्योंकि नफरत की तो असंख्य दूकानें पहले से मौजूद हैं। बहरहाल असल मुद्दा पाकिस्तान और आतंकवाद है। इस मुद्दे पर सरकार ने हमेशा की तरह चुप्पी साध रखी है। चुप्पी सरकार का बिना फल का बाण है। चलता भी है और जान भी नहीं लेता। रामजी ने मारीच को बिना बाण का बाण मारा थाऔर सात योजन पीछे धकेल दिया था। सरकार बिना युद्ध लडे पाकिस्तान को सात योजन पीछे करना चाहती है। युद्ध से पाकिस्तान तो बर्बाद हो जाएगा लेकिन भारत की भी कमर टूटेगी ही। भारत पहले से ही अमरीकी टेरिफ वार की मार झेल रहा है। देश के मौजूदा हालात को देखकर प्रधानमंत्री जी ने 9मयी का अपना रूस दौरा टाल दिया। विक्ट्री डे पर आयोजन समारोह में मोदी जी को शामिल होना था। अब उनके स्थान पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह रूस जाएंगे। विश्व भ्रमण प्रेमी किसी भी आदमी के लिए अपनी यात्रा स्थगित करना आसान बात नहीं है। देश को मोदीजी का आभारी होना चाहिए। इस संक्रमणकाल में अब सब मौन हैं। न ममता की चर्चा है न मायावती की। न अखिलेश यादव सुर्खियों में हैं न नीतीशकुमार। भाजपा को भी नया अध्यक्ष चुनने से राहत मिली। हालांकि भाजपा राष्ट्रीय तनाव से कोई सरोकार नहीं है। वैसे भी अब भाजपा के लिए अध्यक्ष का चुनाव अब महत्वपूर्ण कार्य नहीं क्योंकि अब ये तदर्थ पद है। पहले पार्टी अध्यक्ष प्रधान होता था, अब प्रधानमंत्री पद महत्वपूर्ण हो गया है।

भाजपा सरकार में देश व प्रदेश का हो रहा चहुंमुखी विकास, विकास कार्यों से नागरिकों को मिल रहा लाभ : महापौर

करनाल, 3 मई (संदीप रोहिला) : महापौर रेनू बाला गुप्ता ने नगर निगम कार्यालय में जन सुनवाई कर आमजन की समस्याओं का निवारण किया। उन्होंने कार्यालय में आए नागरिकों की समस्याओं को एक-एक कर सुना और सम्बंधित अधिकारी व कर्मचारियों को उसका निवारण करने के निर्देश दिए। इस दौरान महापौर के समक्ष सम्पत्ति कर आई.डी. में त्रुटि को दुरूस्त करना, सडक़ों के गड्ढे भरने, सीवरेज व बरसाती लाईनो की सफाई तथा स्ट्रीट लाईटों को ठीक करने जैसी शिकायतें आई। महापौर ने

अधिकारियों को निर्देश दिए कि उनके पास आमजन की जितनी भी शिकायतें आती हैं, उसका जल्द से जल्द समाधान किया जाए। एक शिकायत को लेकर बार-बार नागरिकों को कार्यालय के चक्कर न काटने पड़े, इसका ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करवाया जाए।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार के पास विकास कार्यों के लिए धन की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं मुहैया करवाने पर जोर दिया जाए, ताकि लोगों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह अपने कार्यों के प्रति गम्भीर रहें, किसी प्रकार की कोताही न बरतें और तय समय-सीमा में लोगों की समस्याओं का समाधान करना सुनिश्चित करें।

उन्होंने शहरवासियों से आह्वान किया कि वे कार्यालय में आते समय अपनी शिकायतें लिखित रूप में लेकर आएं और अपना मोबाइल नम्बर भी अवश्य लिखें, ताकि कार्य होने की फीडबैक भी ली जा सके। उन्होंने जन सुनवाई के दौरान कहा कि हरियाणा सरकार का लक्ष्य हर वर्ग के हित, प्रदेश की खुशहाली एवं समृद्धि पर केन्द्रित हैं।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार सबका साथ-सबका विकास के मूलमंत्र के तहत नागरिकों की सुविधाओं हेतू पूरे प्रदेश में सामान रूप से विकास कार्य करवा रही है, ताकि लोगों को बेहतर से बेहतर सुविधाएं मुहैया करवाई जा सकें और उनका जीवन स्तर ऊंचा उठ सके।

नीट परीक्षा के मद्देनजर जिलाधीश ने जिला में बनाए गए परीक्षा केंद्रों पर लागू की धारा 163

सोनीपत, 3 मई (विनोद) : जिलाधीश डा. मनोज कुमार ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) नई दिल्ली की ओर से जिला में रविवार 4 मई को जिला में बनाए गए 06 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की जाने वाली नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) परीक्षा को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष व पारदर्शी तरीके से संपन्न कराने के लिए जिला में बनाए गए परीक्षा केंद्रों पर 4 मई को परीक्षा के दिन सुबह 11 बजे से सायं 6 बजे तक भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 लागू करने के आदेश जारी किए हैं।

जिलाधीश की ओर से जारी किए गए आदेश में जिला में स्थापित किए गए परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे तथा विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय परिसर में आग्नेयास्त्रों, तलवारों, गंडासी, लाठी, बरछा, कुल्हाड़ी, जेली, चाकू व अन्य हथियार लेकर जाने पर पाबंधी होगी। इसके अलावा मोबाईल फोन लेकर पांच या इससे अधिक व्यक्तियों व वांछित व्यक्तियों के एकत्रित होने पर रोक रहेगी। जिलाधीश की ओर से जारी आदेशों के तहत नीट परीक्षा को जिला में स्थापित परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में फोटो स्टेट मशीन की दुकाने संचालित करने पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध रहेगा। यह आदेश ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों तथा सरकारी अधिकारी व कर्मचारियों पर लागू नहीं होंगे। यदि कोई व्यक्ति इन आदेश के उल्लंघन का दोषी पाया जाता है, तो वह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 233 के तहत दंड का भागी होगा।

समाधान शिविर का उद्देश्य जन समस्याओं का तुरन्त और प्रभावी समाधान करना : एसडीएम असंध

असंध, 3 मई (दलसिंह मान) : एसडीएम असंध राहुल (आईएएस) ने बताया कि हरियाणा सरकार के निर्देशानुसार उपमंडल अधिकारी कार्यालय (ना.), असंध में प्रत्येक सोमवार और बृहस्पतिवार को प्रात: 10 बजे से 12 बजे तक समाधान शिविर आयोजित किया जा रहा है। इस दौरान उपमंडल के सभी अधिकारी मौजूद रहते हैं तथा समाधान शिविर में बिजली, पानी, परिवार पहचान पत्र, बुढ़ापा पेंशन एवं अन्य संबंधित शिकायतों का मौके पर ही समाधान किया जाता है। उन्होने बताया कि सभी नागरिक प्रत्येक सोमवार और बृहस्पतिवार को एसडीएम कार्यालय में सुबह 10 बजे से 12 बजे आयोजित समाधान शिविर में अपनी समस्याओं का समाधान करवा सकते हैं। उन्होंने असंध उपमंडल के समस्त आमजन को संदेश देते हुए कहा कि सभी नागरिक अपनी संबंधित समस्याओं को लेकर उपमंडल कार्यालय में उक्त दिवस को समाधान शिविर में जरूर पहुंचे। नागरिकों की शिकायतों और समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए समाधान शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसके द्वारा आमजन की समस्याओं का निवारण हो रहा है। इस शिविर का उद्देश्य नागरिकों की समस्याओं का समाधान करना है। इन शिविरों में पुलिस, राजस्व, नगर निकाय, समाज कल्याण आदि जनकल्याण की योजनाएं लागू करने वाले विभागों के अधिकारी एवं अन्य उपमंडल अधिकारी एक साथ मौजूद रहते हैं और लोगों की समस्याओं का समाधान किया जाता है। उन्होंने बताया कि सभी नागरिकों की समस्याओं का समाधान करना उनकी प्राथमिकता है। आमजन की सभी संबंधित समस्याओं का त्वरित निवारण किया जाएगा। उपमंडल प्रशासन असंध की प्राथमिकता आमजन की समस्याओं का मौके पर ही समाधान करना है।

भाखड़ा नहर जल विवाद पर सियासत न करें पंजाब सरकार व राजनीतिक पार्टियां : सुरेश गोयल

हिसार, 3 मई (मनमोहन शर्मा) : भाजपा के पूर्व जिला मीडिया प्रभारी सुरेश गोयल धूप वाला ने प्रेस को जारी अपने ब्यान में कहा हैं कि भाखड़ा नहर, जो हरियाणा प्रदेश की सिंचाई व्यवस्था की रीढ़ है, वर्षों से जल संकट का कारण बनती जा रही है। चिंता की बात यह है कि पंजाब की सभी राजनीतिक पार्टियां भाखड़ा नहर का पानी हरियाणा को रोकने के पक्ष में एकमत हो गई हैं। यह न सिर्फ हरियाणा के किसानों के साथ अन्याय है, बल्कि संवैधानिक और मानवाधिकारों का भी उल्लंघन है। सुरेश गोयल धूप वाला ने कहा कि हरियाणा एक कृषि प्रधान राज्य है, जहाँ अधिकतर किसान आज भी अपनी खेती के लिए नहरों और ट्यूबवेलों पर निर्भर हैं। भाखड़ा नहर से पानी की नियमित आपूर्ति रुकने का सीधा असर फसलों की पैदावार, किसानों की आय और प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। उन्होंने कहा कि गर्मी के इस मौसम में जब खेतों को पानी की सर्वाधिक ज़रूरत होती है, ऐसे समय में पानी रोकना, हरियाणा के साथ एक बड़ा अन्याय है। धूप वाला ने कहा कि पंजाब राज्य के राजनीतिक दल वोट बैंक

की राजनीति के चलते इस मुद्दे पर एकजुट हैं। लेकिन यह भूलना नहीं चाहिए कि भाखड़ा परियोजना राष्ट्रीय महत्व की है और इसका पानी संविधान व अदालतों के आदेशों के अनुरूप बंटना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट पहले ही अपने निर्णय में हरियाणा को उसके हिस्से का पानी देने का निर्देश दे चुका है, परन्तु आज भी उसे न्याय नहीं मिला हैं। हालांकि हरियाणा सरकार इस विषय में बहुत अधिक गंभीर हैं। वह अपनी और से इस विषय मेँ पुरे प्रयास कर रही हैं। हरियाणा क़ी सभी राजनितिक पार्टियों को भी चाहिए कि वह इस मुद्दे पर एक जुट होकर हरियाणा के हितो पर कुठाराघात न होने दे।

वह इस मुद्दे पर और सख्त रुख अपनाए व प्रदेश के हितों की रक्षा करे। हरियाणा के कई जिलों में इस समय गहरा जल संकट हैं। ऐसे समय मेँ पंजाब सरकार द्वारा अपनी हठधर्मिता दिखाना उसकी अविवेकपूर्ण नजरिये को ही प्रदर्शितकर्ता हैं। पानी जीवन है, और जीवन के हक़ से कोई भी प्रदेश वंचित नहीं रह सकता। पंजाब सरकार और वहां कि राजनीतिक पार्टियां इस मुद्दे पर पुर्णविचार कर राष्ट्रीय भावना का परिचय दे। यह बात हमेशा याद रखी जानी चाहिए क़ी पूरा राष्ट्र एक हैं, प्रांतीय बटवारा तो केवल एक प्रशासनिक व्यवस्था हैं जिससे राजकाज चलाने में आसानी रहे।

सैनीपुरा के पूर्व सरपंच स्व. बलबीर सिंह सैनी की द्वितीय पुण्यतिथि पर किया गया विशाल मैडिकल कैम्प एवं रक्तदान शिविर का आयोजन

248 मरीजों की जांच कर नि:शुल्क दवाईयां दी गई एवं 115 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

हांसी, 3 मई (मनमोहन शर्मा) : सैनीपुरा गांव के पूर्व सरपंच स्व. बलबीर सिंह सैनी की द्वितीय पुण्यतिथि के अवसर पर सैनीपुरा स्थित सैनी धर्मशाला मे एक विशाल मैडिकल कैम्प एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। स्व. बलबीर सिंह सैनी चैरिटेबल ट्रस्ट, सैनीपुरा के तत्वावधान मे आयोजित इस मैडिकल कैम्प एवं रक्तदान शिविर का शुभारंभ ट्रस्ट की संरक्षक एवं गांव की पूर्व सरपंच श्रीमती रोशनी सैनी द्वारा किया गया। ट्रस्ट के महासचिव अमित सैनी ने जानकारी देते हुए बताया कि मैडिकल कैम्प में मलिक सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल की टीम द्वारा डॉ. विजय गुलिया एवं डॉ. अनिल राठी के नेतृत्व मे 248 मरीजों की जांच कर उन्हें निशुल्क दवाईयां भी प्रदान की गई। कैम्प में हिसार सिविल अस्पताल की टी. बी. यूनिट द्वारा मरीजों का नि:शुल्क एक्स रे भी किए गए। वहीं रक्तदान शिविर मे मंगलम ब्लड बैंक की टीम द्वारा 115 रक्तदाताओं का रक्त संग्रहण किया गया। शिविर मे रक्तदान करने वालों का पूरा उत्साह नजर आ रहा था। इस अवसर पर ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं भारतीय जनता पार्टी, हांसी के जिलाध्यक्ष अशोक सैनी ने सभी आए हुए सभी गणमान्य व्यक्तियों, रक्तदाताओं एवं मरीजों का स्वागत करते हुए कहा कि उनके पूजनीय पिताजी स्व. बलबीर सिंह सैनी की सोच थी कि किस प्रकार

हम लोगों का ज्यादा से ज्यादा भला कर सके, उनकी इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए इस मैडिकल कैम्प एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है ताकि उनकी कर्मभूमि के ज्यादा से ज्यादा लोगों को भला हो सके। उन्होंने कहा कि भविष्य मे भी ट्रस्ट द्वारा समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाया जायेगा। कैम्प में रक्तदान करने वाले सभी रक्तदाताओं को सर्टिफिकेट एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। हांसी जिला भाजपा अध्यक्ष अशोक सैनी नेसभी मेहमानों काआभार व्यक्त करते हुए कहा किमेरे पिता जी स्व. यबलवीर सिंह हमेशा समाज की सेवा कार्य मेंअग्नि रहते थे। इस अवसर पर एडवोकेट धर्मवीर रतेरिया, महंत सागरनाथ, सरपंच रविन्द्र सैनी, कुलदीप चैयरमेन, प्रवीण बंसल, तनुज खुराना, विजय देपल, नवीन कौशिक, मनजीत जांगड़ा, सुखविंद्र जाखड़, प्रवीण सैनी, संदीप सैनी, शिवचरण सैनी, अमित सैनी, पृथ्वी सिंह सैनी, विष्णु शर्मा, सुरजीत गुज्जर, दिलबाग सैनी, संदीप सैनी, विक्की सैनी, के. एल. ग्रोवर, ओमप्रकाश मुंजाल, रिंकू सैनी, अंकित सैनी ,अलीस सैनी, अग्रिम सैनी, साहिल, देव, श्रेयान सहित काफी संख्या मे गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

बीएफएसआई 5वें समैस्टर परीक्षा परिणामों में छाए खालसा कालेज के विद्यार्थी

करनाल, 3 मई (संदीप रोहिला) : गुरु नानक खालसा कॉलेज, करनाल के बीएफएसआई पांचवें समैस्टर के विद्यार्थियों ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की परीक्षा मे पहले दस में से छ: स्थानों पर मैरिट में स्थान बना कर अपना परचम लहराया।

इस बारे में विस्तार जानकारी देते हुए कॉलेज की प्राचार्या प्रो. शशि मदान ने बताया कि रोजगारपरक डिग्री बी. एफ. एस. आई के पांचवें समेस्टर में हितेश ने 61.7 प्रतिशत अको के साथ विश्व विद्यालय में तीसरा स्थान प्राप्त किया है जबकि हर्षदीप कौर ने 67 प्रतिशत अंकों के साथ विश्वविद्यालय में चौथा, ईशनूर कौर ने 61.14 प्रतिशत अर्को के साथ पांचवा, टीना ने 57 प्रतिशत अंको के साथ छठा स्थान, चंचल चौधरी ने 55.4 प्रतिशत अंकों के साथ यातवा, करण ने 54.1 प्रतिशत अंकों के साथ साठवा तथा चंचल ने 46.1 प्रतिशत अंकों के साथ दसवां स्थान प्राप्त किया। कालेज प्रबन्धन समिति की उपप्रधान सरदारनी कंवरप्रीत कौर विर्क ने सभी मैरिट में आए विद्यार्थियों को मिठाई खिला कर उनका सम्मान किया। कॉलेज प्रबन्धन समिति के प्रधान स. कंवरजीत सिंह प्रिंस ने इस उपलब्धि के लिए स्टांक, प्राचार्या तथा विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर वाणिज्य विभाग की अध्यक्षा प्रो. चेष्टा अरोड़ा, प्रो. भावना शर्मा, प्रो. मनप्रीत कौर, प्रो. रीना जागलान, प्रो. अलका, प्रो. अर्शिया, प्रो. मनीष, प्रो. रमनप्रीत सिंह और प्रो. प्रशांत शर्मा मौजूद रहे।

लावारिस पशुओं को पकड़ने का निगम का अभियान जारी, 11 गोवंश पकड़ पहुंचाए गौशाला

यमुनानगर, 3 मई (दिनेश कुमार) : नगर निगम ने बेसहारा गोवंशों को पकड़ने का जारी तेज कर दिया है। निगमायुक्त आयुष सिन्हा के निर्देशों पर नगर निगम की टीम ने जोन दो के फर्कपुर, सब्जी मंडी व पुराना हमीदा में घूम रहे 11 लावारिस गोवंशों को पकड़ कर गौशाला पहुंचाया। सालभर में अब तक नगर निगम 964 लावारिस पशुओं को पकड़कर गौशाला पहुंचा चुका है। जब तक से शहर से हर लावारिश गोवंश नहीं पकड़ा जाता, निगम का यह अभियान जारी रहेगा। शहरवासी भी नगर निगम क्षेत्र में घूम रहे लावारिस गोवंश की फोटो खींचकर पत्ते व लोकेशन सहित निगम के व्हाट्सएप नंबर 7082410524 पर भेजे। जिसके बाद निगम की टीम मौके पर पहुंचकर लावारिस गोवंश को पकड़कर गौशाला पहुंचाएगी। निगमायुक्त आयुष सिन्हा के निर्देशों पर जोन एक में सीएसआई हरजीत सिंह व जोन दो में सीएसआई सुनील दत्त के नेतृत्व में टीमों का गठन किया गया। सीएसआई सुनील दत्त के नेतृत्व में गठित टीम लावारिस गोवंशों को पकड़ने के लिए वार्ड नंबर 18 के फर्कपुर पहुंची। निगम कर्मियों ने क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर घूम रहे पांच बेसहारा गोवंशों को पकड़ा। निगम कर्मियों ने रस्सियों के माध्यम घेरा डालकर गोवंशों को पकड़ा। इसके बाद उन्हें निगम के वाहन में चढ़ाया। गोवंशों को पकड़ने के बाद उन्हें गौशाला पहुंचाया। इससे पूर्व निगम की टीम ने जगाधरी सब्जी

मंडी से तीन गोवंशों को पकड़कर निगम के वाहन में चढ़ाकर गौशाला पहुंचाया। इसी तरह सीएसआई सुनील दत्त की टीम ने पुराना हमीदा के विभिन्न स्थानों पर घूम रहे तीन गोवंशों रस्सियों से घेराबंदी करके पकड़ा। बड़ी मुश्किल से निगम कर्मियों ने उन्हें निगम के वाहन में चढ़ाया। इसके बाद उन्हें टैग लगाकर गोशाला पहुंचाया। सीएसआई सुनील दत्त ने बताया कि निगमायुक्त आयुष सिन्हा के निर्देशों पर लावारिस पशुओं को पकड़ने का यह अभियान आगे भी जारी रहेगा। शहर में घूमने वाले सभी लावारिस गोवंश को पकड़ा जाएगा। अब नगर निगम ने 964 गोवंशों को पकड़ कर गौशाला पहुंचाया है। सभी पशुओं को टैग भी लगाए गए है।

उन्होंने कहा कि कोई भी शहरवासी गोवंशों का इस्तेमाल करने के बाद उन्हें खुले में न छोड़े। यदि कोई गोवंश खुले में छोड़ता है तो उस पर 51 सौ रुपये जुर्माना लगाया जाएगा। इसके अलावा यदि ग्रामीण क्षेत्र से भी कोई व्यक्ति शहरी क्षेत्र में गोवंश छोड़ता है तो उस पर भी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने आमजन से अपील की कि यदि उन्हें शहरी क्षेत्र में कहीं भी कोई लावारिस पशु दिखाई दे तो उसकी फोटो खींचकर पते या लोकेशन समेत निगम के व्हाट्सएप नंबर 7082410524 पर भेजे। निगम की टीम तुरंत मौके पर पहुंचकर उन पशुओं को पकड़कर गौशाला पहुंचाएगी। उन्होंने बताया कि निगम द्वारा जो बेसहारा गोवंश पकड़कर गोशाला में छोड़े जाते है, उसके लिए नगर निगम द्वारा प्रति पशु के हिसाब से चारा खर्च गौशाला कमेटी को दिया जाता है। पशु पकड़ते समय उस पर निगम की ओर से टैग लगाया जाता है। यदि टैग वाला पशु दोबारा खुले में मिलता है तो संबंधित गौशाला संचालक पर भी जुर्माना लगाया जाएगा।

10 मई को राष्ट्रीय लोक अदालत का होगा आयोजन : अजय कुमार शारदा

करनाल, 3 मई (रविन्द्र मलिक) : जिला एवं सत्र न्यायाधीश अजय कुमार शारदा ने कहा कि 10 मई को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा, इस राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के उद्देश्य से शनिवार को सभी न्यायिक अधिकारियों की एक बैठक ली तथा उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। उन्होंने न्यायिक अधिकारियों को नेशनल लोक अदालत में अधिकतम मुकदमों का निपटारा करने बारे मार्गदर्शन किया और नेशनल लोक अदालत को सफल बनाने हेतु प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि लोक अदालत में निपटारा होने पर किसी की हार नहीं होती, आपसी रजामंदी से मुकदमे का निपटारा होता है और इससे समय व धन की बचत होती है। इसके अलावा, लोक अदालत में फैसला होने पर इन मुकदमों की अपील भी नहीं होती। इस मौके पर सीजेएम एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव इरम हसन ने कहा कि जिला एडीआर सेंटर में स्थापित स्थाई लोक अदालत में प्री लिटिगेशन स्टेज के मुकदमों के लिए लोक अदालत का आयोजन 8 मई को किया जाएगा, इस लोक अदालत में प्री लिटिगेशन स्टेज पर बैंक, इंश्योरेंस, बिजली, पानी इत्यादि के बिल संबंधित मुकदमों का निपटारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि अधिक जानकारी के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के हेल्पलाइन नम्बर 0184-2266138 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

कबाड़ी वाले से रुपए व चांदी का कड़ा लूटने के मामले में स्पेशल डिटेक्टिव युनिट द्वारा 2 आरोपी काबू

कैथल, 3 मई (प्रवेश बहादुर) : कबाड़ी वाले से रुपए व चांदी का कड़ा लुटने के मामले में स्पेशल डिटेक्टिव युनिट द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए 2 आरोपियों को काबू कर लिया गया। आरोपी के कब्जे से वारदात में प्रयुक्त बाइक, लुटे गए 6 हजार रुपए तथा चांदी कड़ा बरामद किया गया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि नानकपुरी कॉलोनी निवासी छिंदा की शिकायत अनुसार वह कबाड़ी का काम करता है। 28 अप्रैल को शाम करीब सवा 3 बजे उसके पास एक व्यक्ति का फोन आया। उसने कहा कि वह प्रवीण बोल रहा है तथा उसे

सामान बेचना है। आप चंदाना के टी प्वाइंट कैथल नरवाना हाईवे के पास आ जाएं। वह अपनी बाइक रेहडी लेकर टी प्वाइंट के पास पहुंचा तो वहां पर दो लड़कों ने कहा कि वह उन्हें पांच हजार रुपये दे दें वे उसे कबाड़ का सामान दे देते हैं। उसने पहले सामान दिखाने को कहा। उन्होंने समान नहीं दिखाया तो अनदेखी कर वह तितरम मोड़ की तरफ रेहड़ी लेकर चल पड़ा। कुछ ही दूरी पर वही दोनों युवक बाइक पर आए तथा उसके साथ मारपीट कर आठ हजार रुपये व हाथ में पहना चांदी का कड़ा छीनकर भाग गए। जिस बारे थाना कलायत में मामला दर्ज कर लिया गया। प्रवक्ता ने बताया कि मामले की जांच स्पेशल डिटेक्टिव युनिट प्रभारी एसआई रमेश चंद की अगुवाई में एएसआई अजीत सिंह की टीम द्वारा करते हुए आरोपी मानस निवासी गुरदीप उर्फ प्रवीन तथा पटेल नगर नरवाना निवासी राकेश को काबू कर लिया गया।

उक्त दोनो युवकों द्वारा ही इस लुट की वारदात को अंजाम दिया गया था। पूछताछ दौरान आरोपियों के कब्जे से वारदात में प्रयुक्त बाइक, लुटे गए 6 हजार रुपए तथा चांदी कड़ा बरामद कर लिया गया। दोनो आरोपी शुक्रवार को अदालत के आदेशानुसार न्यायिक हिरासत में भेज दिए गए।

राजकीय आई.टी.आई. छछरौली में 9 मई को लगेगा रोजगार मेला : डा. अरुण कुमार

यमुनानगर, 3 मई (दिनेश कुमार) : जिला रोजगार अधिकारी डॉ. अरुण कुमार ने बताया कि राजकीय आई.टी.आई. छछरौली में 9 मई 2025 (गुरुवार) को सुबह 10 बजे एक रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा।

यह मेला राजकीय आई.टी.आई. छछरौली और राजकीय आई.टी.आई. प्रतापनगर के संयुक्त प्रयास से आयोजित किया जा रहा है। राजकीय आई.टी.आई. छछरौली में मुख्य अतिथि छछरौली के एसडीएम रोहित कुमार शिरकत करेंगे। राजकीय आईटीआई छछरौली के प्राचार्य रामकुमार धीमान ने बताया कि इस रोजगार मेले में संस्थान के अंतिम वर्ष के प्रशिक्षार्थी तथा पूर्व प्रशिक्षार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कई प्रतिष्ठित कंपनियां भाग लेंगी।

उन्होंने बताया कि प्रतिभागी के लिए कंपनियों की सूची इस प्रकार है जिसमें इस्जेक हेवी इंजीनियरिंग लिमिटेड, लार्क इंजीनियरिंग, चंद्रपुर वर्क्स प्रा. लि., गीता फैब सर्जिकल (इंडिया), यमुनानगर, महिंद्रा स्वराज ट्रैक्टर्स, मोहाली, इवाना एक्सपोर्ट्स, यमुनानगर, ओरिएंटल इंजीनियरिंग लिमिटेड, यमुनानगर, यमुना ऑटोमोटिव कम्पोनेंट्स, यमुनानगर, टाटा मोटर्स, अब्रोनिक इंडस्ट्रीज, यमुनानगर, एक्सिस बैंक, यमुनानगर, एचडीएफसी बैंक, बिलासपुर, डी.एन. इंजीनियरिंग, यमुनानगर, गुरु अमर इंडस्ट्रीज, जगाधरी शामिल है। उन्होंने बताया कि रोजगार मेले में फिटर, टर्नर, इलेक्ट्रिशियन, मशीनिस्ट, सीओपीए (कंप्यूटर ऑपरेटर एंड प्रोग्रामिंग असिस्टेंट) और गर्ल्स ट्रेड- सिलाई तकनीक के प्रशिक्षार्थी भाग ले सकेंगे।

उन्होंने सभी पात्र प्रशिक्षार्थियों से अनुरोध किया है कि वे इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाएं और रोजगार के लिए मेले में अवश्य भाग लें।

श्री राधा कृष्ण आदर्श गौशाला अमुपूर-माजरा में 5 मई को हवन-यज्ञ कर मनाया जाएगा पूर्व मुख्यमंत्री का जन्म दिन : सुरेंद्र टाया

निसिंग, 3 मई (जोगिंद्र सिंह) : भाजपा नेता सुरेंद्र टाया ने बताया कि 5 मई को देश की प्रगति उन्नति और विकाश को आगे बढ़ाते हुए देश की सेवा कर रहे हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर का 71वां जन्म दिवस श्री राधा कृष्ण आदर्श गौशाला अमुपूर-माजरा में विशाल हवन-यज्ञ का आयोजन किया जाएगा ।टाया ने कहा कि उनकी लंबी दीर्घायु आयु के लिए और देश सेवा में निरंतर आगे बढ़ते रहे। इस उद्देश्य को लेकर हवन-यज्ञ किया जाएगा। उन्होंने सभी क्षेत्र वासियों से विनम्र अपील करते हुए कहा कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में सोमवार को सुबह 8 बजे गौशाला में पहुंचकर हवन यज्ञ में आहुति डाले ओर प्रसाद ग्रहण करें। हवन-यज्ञ के बाद गौशाला कमेटी व क्षेत्रवासी सभी मिलकर गौ माता को गुड़,चारा आदि भी दान करेंगे ओर गौमाता को खिलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने सभी वर्गों का समान विकास किया है। सुरेंद्र टाया ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी सबका साथ सबका विकास के नारे को सार्थक करते हुए प्रधानमंत्री दिन रात गरीबों, किसानों व मजबूरों के लिए काम कर रहें हैं। सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं का गरीबों व असहाय लोगों को पूरा लाभ मिले इसके लिए उन्हें प्रेरित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने गरीब वर्ग को सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाकर अमीरी, गरीबी की खाई को कम किया है। भाजपा सरकार ने हमेशा एक समान विकास किया है।

जिलाधीश पार्थ गुप्ता ने नीट परीक्षा के मद्देनजर जिला में बनाए गए परीक्षा केंद्रों पर लागू की धारा 163

यमुनानगर, 3 मई (दिनेश कुमार) : जिलाधीश पार्थ गुप्ता ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) नई दिल्ली की ओर से जिला में रविवार 4 मई को जिला में बनाए गए 5 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की जाने वाली नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) परीक्षा को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष व पारदर्शी तरीके से संपन्न कराने के लिए जिला में बनाए गए परीक्षा केंद्रों पर 4 मई को परीक्षा के दिन सुबह 11 बजे से सायं 6 बजे तक भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 लागू करने के आदेश जारी किए हैं। जिलाधीश की ओर से जारी किए गए आदेश में जिला में स्थापित किए गए परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में अनावश्यक व्यक्तियों के मुक्त आवागमन पर पूर्णतया प्रतिबंध रहेगा। जिलाधीश की ओर से जारी आदेशों के तहत नीट परीक्षा को जिला में स्थापित परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में अनावश्यक व्यक्तियों के मुक्त आवागमन के साथ-साथ फोटो स्टेट मशीनों, जेरॉक्स मशीनों, फैक्स मशीनों, डुप्लीकेटिंग मशीनों और अन्य संचार गतिविधियों के संचालन। परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में आग्नेयास्त्रों, तलवारों, गंडासी, लाठी, बरछा, कुल्हाड़ी, जेली, चाकू जैसे (सिखों द्वारा धार्मिक प्रतीक के रूप में प्रयोग की जाने वाली कृपाण को छोड़कर) हथियारों को ले जाने पर पूरी तरह से रोक रहेगी। यह आदेश ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों तथा सरकारी अधिकारी व कर्मचारियों पर लागू नहीं होंगे। यदि कोई व्यक्ति इन आदेश के उल्लंघन का दोषी पाया जाता है, तो वह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 223 के तहत दंड का भागी होगा।

आज डॉ. मंगलसेन सभागार में होगी लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की श्रद्धांजलि सभा

हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण ने श्रद्धांजलि सभा स्थल का लिया जायजा, उपायुक्त रहे मौजूद

करनाल, 3 मई (संदीप रोहिला) : लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की 4 मई रविवार को सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक डॉ. मंगलसेन सभागार में आयोजित होने वाली श्रद्धांजलि सभा के स्थल पर जाकर हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष हरविंद्र कल्याण ने शनिवार को व्यवस्था का जायजा लिया। इस मौके पर उपायुक्त उत्तम सिंह सहित विनय नरवाल के परिवार के सदस्य भी मौजूद थे।

हरविंद्र कल्याण ने कहा कि लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की निर्मम हत्या से परिवार को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति तो कोई नहीं कर सकता लेकिन जनप्रतिनिधि व समाज के नाते सब इस परिवार के साथ खड़े हैं। इस दुख की घड़ी में केंद्र और प्रदेश की सरकार परिवार के साथ खड़ी है।

उन्होंने अधिकारियों को कहा कि लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की श्रद्धांजलि सभा में आने वाले लोगों के लिए सही व्यवस्था करें तथा सुरक्षा व यातायात के पुख्ता इंतजाम होने चाहिए। बता दें कि लेफ्टिनेंट विनय नरवाल गत 22 अप्रैल को कश्मीर में हुए आतंकवादी हमले में निधन हो गया था।

जे.डी इंटरनेशनल स्कूल में शपथ ग्रहण समारोह का किया आयोजन

असन्ध, 3 मई (दलसिह मान) : जे.डी इंटरनेशनल स्कूल में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए छात्र परिषद के गठन हेतु शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि भूतपूर्व सैनिक अशोक कुमार, विद्यालय के चेयरमैन एस.के भारद्वाज, डायरेक्टर विजय भारद्वाज व प्रधानाचार्या वृषि गुप्ता उपस्थित रहे। इस समारोह में विद्यार्थियों को उनकी योग्यता, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता के आधार पर विभिन्न पदों की जिम्मेदारी सौंपी गई। इस सत्र के लिए हेड बॉय हरप्रीत सिंह, हेड गर्ल तानिया, वाइस हेड बॉय रणवीर सिंह व वाइस हेड गर्ल तनिष्क को चुना। पलकप्रीत सिंह डिसिप्लिन कैप्टन, हर्ष स्पोर्ट्स कैप्टन व पुष्पेन्द्र को कल्चरल कैप्टन चयनित किया गया। कैम्ब्रिज हाउस से कैप्टन महकदीप कौर, वाइस कैप्टन मानसी, हाउस प्रीफेक्ट अन्वी और अर्जुन, हार्वर्ड हाउस से कैप्टन अनुभव शर्मा, वाइस कैप्टन हरनेक सिंह, हाउस प्रीफेक्ट नव्या और अयन को चयनित किया गया। ऑक्सफर्ड से कैप्टन कृतिका वर्मा, वाइस कैप्टन सहजवीर सिंह, हाउस प्रीफेक्ट गुरुसेवक व राशि को चुना गया। चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों ने तालियों से उनका उत्साहवर्धन किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि नेतृत्व का मतलब सिर्फ आदेश नहीं होता बल्कि इसका अर्थ है सबसे पहले खुद अनुशासन में रहकर दूसरों को प्रेरित करना है। प्रधानाचार्या वृषि गुप्ता ने सभी चयनित छात्रों को शुभकामनाएं दी। डायरेक्टर विजय भारद्वाज ने विद्यार्थियों को नेतृत्व, अनुशासन और टीम भावना का महत्व समझाया और अपने पदों के प्रति ईमानदारी एवं निष्पक्षता की भावना के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

वॉलीबॉल प्रतियोगिता में मनहर हाउस ने किया प्रथम स्थान प्राप्त

यमुनानगर, 3 मई (दिनेश कुमार) : खजूरी के श्रीकृष्णा पब्लिक स्कूल में स्कूल स्तर पर एक वालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता स्कूल के पीटीआई भानु शर्मा व विजय कुमार ने की। प्रतियोगिता में कक्षा 9वीं से12वीं कक्षा तक के बच्चे ने भाग लिया। बच्चों को चार हाउसों में बांटा गया। मनहर हाउस, कान्हा हाउस, माधव हाउस, केशव हाउस। मनहर हाउस की टीम केशव हाउस को हराकर प्रथम स्थान प्राप्त किया व कान्हा हाउस को हराकर केशव हाउस ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। स्कूल प्रबंधक महिपाल राणा ने बच्चों को आकर्षित पुरस्कार देकर सम्मानित किया कहां की खेलने से शरीर का विकास होता है स्कूल में पढ़ाई के साथ-सा द बच्चों के खेलकूद पर भी ध्यान दिया जाता है क्योंकि छोटे स्तर पर खेल कर ही बच्चे नेशनल और इंटरनेशनल तक पहुंचाते हैं और कहां सभी बच्चों ने अच्छे खेल और अनुशासन का परिचय देते हुए खेला जिसका सारा श्रेय स्कूल के पीटीआई भानु शर्मा व अभिषेक कुमार को दिया। इस मौके पर पवन शर्मा, रजनी रानी, नकुल राणा, सचिन शर्मा, राहुल सैनी आदि उपस्थित रहे।

एस.पी ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा केंद्रों का किया निरीक्षण

राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा को शांतिपूर्वक, बिना किसी हस्तक्षेप के संपन्न करवाने के लिए पुलिस ने किए सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध

हांसी, 3 मई (मनमोहन शर्मा) : राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा 4 अप्रैल 2025 को दोपहर 2 बजे से सांय 5 तक पुलिस जिला हांसी के 2 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित होगी। एस.पी हांसी अमित यशवर्धन ने बताया कि 4 अप्रैल को होने वाली राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा को शांतिपूर्वक और बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के करवाने और परीक्षा देने आने वाले परीक्षार्थियों के सुगम आवागमन के लिए हांसी पुलिस ने पुख्ता प्रबंध किए है। ट्रैफिक व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए यातायात पर्यवेक्षण अधिकारी और थाना ट्रैफिक पुलिस द्वारा यह भी सुनिश्चित किया जाएगा। कि कोई भी वाहन सड़क पर न खड़ा हो। सभी ऑटो चालक अपने ऑटो को एक लाइन में चलाए और बिना निर्धारित स्थान के ऑटो को कही भी सड़क पर न रोके।

सभी ऑटो चालक अपने ऑटो में निर्धारित संख्या से अधिक व्यक्तियों को ना बिठाए और ट्रैफिक रूल्स का पालन करें। साथ ही किसी भी परीक्षार्थी से निर्धारित किराए से ज्यादा किराया वसूल न करे। ज्यादा किराए के लालच में किसी भी परीक्षार्थी को गुमराह न करे। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा 04 अप्रैल को पुलिस जिला हांसी के कुल 2 परीक्षा केंद्र राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विधालय हांसी व नारनौंद में आयोजित की जायेगी। परीक्षा केंद्रों पर व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर महिला पुलिस कर्मचारी सहित 14 कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है और इनके साथ ही अलग से 2 पुलिस कर्मचारियों की परीक्षा केंद्र पर पार्किंग व्यवस्था बनाने के लिए नियुक्ति की गई है। साथ ही 2 पर्यवेक्षण अधिकारियों की नियुक्ति की गई है जो लगातार अपनी टीम सहित पेट्रोलिंग पर रहेंगे और सभी थाना प्रभारी भी अपने अपने क्षेत्र में पेट्रोलिंग पर रहेंगे। परीक्षा केंद्र के अंदर मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, टबलेट, इयरफोन, हिड्डन कैमरे, पेजर जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के साथ कोई भी ज्वैलरी, पेन, पेंसिल, पर्स, बेल्ट, पानी की बोतल, किताब आदि सब के ले जाने पर संपूर्ण रूप से पाबंदी है। परीक्षा केंद्र में नजदीक सभी कोचिंग सेंटर, किताबों की दुकानें, स्टेशनरी शॉप और फोटो स्टेट की दुकानें बंद रहेगी और क्षेत्र में किसी भी तरह के ड्रोन के उड़ाने पर पाबंदी लगाई गई है। परीक्षा केंद्र के अंदर जाने वाले प्रत्येक परीक्षार्थी की चैकिंग के बाद उसे अंदर जाने दिया जाएगा। एस.पी ने बताया कि परीक्षा आरंभ होने के बाद ड्यूटी पर तैनात स्टाफ निरीक्षक (invigilator), क्लर्क, हेल्पर, चपरासी को भी परीक्षा केंद्र से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होगी। वे भी परीक्षा समाप्त होने के बाद ही बाहर आ पाएंगे। परीक्षा को सूचारू रूप से संचालन के लिए प्रत्येक परीक्षा केन्द्र पर सी.सी.टी.वी., जैम्मर, बायोमैट्रिक, विडियोग्राफी, फिस्किंग करवाने की व्यवस्था की गई है, जिनके प्रतिनिधि भी प्रत्येक केन्द्र पर उपस्थित रहेगे। उन प्रतिनिधियों को बोर्ड कार्यालय/वैण्डर द्वारा जारी पहचान पत्र दिखाने के बाद ही परीक्षा भवन में अनुमति मिलेगी। और वे भी परीक्षा शुरू होने के बाद परीक्षा केंद्र के अंदर या बाहर नहीं जा सकेंगे। एस.पी अमित ने आमजन से अपील की है कि हांसी में परीक्षा के दौरान यातायात व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में पुलिस की सहायता करे।

मुख्यमंत्री अंत्योदय की नीति से बनी योजनाओं का जरूरतमंद व पंक्ति में सबसे पीछे खड़े व्यक्ति को पहले पहुंचा रहे लाभ : सुमन सैनी

लाडवा, 3 मई (रामगोपाल) : हरियाणा बाल कल्याण विकास विभाग की उपाध्यक्ष सुमन सैनी ने कहा कि लाडवा विधानसभा के विधायक व प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी अंत्योदय की नीति से राज्य में योजनाएं लागू कर रहे हैं। उन योजनाओं से प्रदेश की जरूरतमंद व पंक्ति में सबसे पीछे खड़े व्यक्ति को पहले लाभ पहुंच रहा है। लाडवा के साथ-साथ प्रदेश की पूरी जनता के लिए चंडीगढ़ में मुख्यमंत्री कार्यालय 24 घंटे खुला हुआ है। कोई भी व्यक्ति अपनी समस्या-परेशानी को लेकर किसी भी दिन कार्यालय में जाकर मुख्यमंत्री से मिल सकता है, जहां पर उनकी समस्या-परेशानियों का हल करने के मुख्यमंत्री द्वारा अधिकारियों को आदेश दिए जाते हैं। हरियाणा बाल कल्याण विकास विभाग की उपाध्यक्ष सुमन सैनी नरेश गर्ग रोटरी प्रेसिडेंट लाडवा नरेश गर्ग के निवास स्थान पर उनके पुत्र मानव गर्ग व पुत्रवधू आंचल गर्ग को विवाह समारोह की बधाई व आशीर्वाद देने के लिए पहुंची थी। उन्होंने कहा कि लाडवा विधानसभा के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र का विकास तेज गति से करवाया जा रहा है, जिसके लिए सभी विभाग अपने-अपने कामों की योजनाएं बनाकर उन योजनाओं पर काम कर रही है। जब यह सभी विकास कार्य पूर्ण होंगे तो लाडवा विधानसभा की प्रदेश में अपनी अलग पहचान होगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार सबका साथ सबका विकास की नीति पर चलते हुए सभी विधानसभाओं में समान रूप से विकास कार्य करवा रही है। मौजूदा समय में ट्रिपल इंजन की सरकार तीन गुना गति से प्रदेश में विकास कार्य कर रही है। इस मौके पर नगर पालिका प्रधान साक्षी खुराना, लाडवा मंडल अध्यक्ष शिव गुप्ता, गुढ़ा मंडल अध्यक्ष नरेन्द्र दबखेड़ा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

जनसेवा और संगठनात्मक मजबूती का केंद्र बनेगा जिला कार्यालय : डॉ. सुशील गुप्ता

कैथल, 3 मई (प्रवेश बहादुर) : आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता ने शुक्रवार को कैथल के जिला कार्यालय का उद्घाटन किया। इससे पहले जिला अध्यक्ष जगमग मटौर ने डॉ. सुशील गुप्ता का स्वागत किया। इस अवसर पर अमरीक मोर, सतबीर सौंगरी, सिया राम, रामकिशन शर्मा, सुनील सहारण, दलबीर सौंगरी, दिलबाग़ पुंडरी, सुरेश कौल, सरूप फ़ौजी, सोनिया लाट, सुभाष चौहान, राजबीर सोंगल, पाल सिंह प्रधान, विजय कांसल, छात्र नेता सेशु मलिक, विक्की करोडा, नरेश मलिक, सोनू और दीपक कसान समेत पार्टी के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता और स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

डॉ. सुशील गुप्ता ने उद्घाटन के पश्चात् कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह कार्यालय जनसेवा और संगठनात्मक मजबूती का केंद्र बनेगा। यह कार्यालय आम जनता की समस्याओं के समाधान और पार्टी के विस्तार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। वहीं, उन्होंने मीडिया से बातचीत में पानी के मुद्दे पर कहा कि आज हर राज्य पानी के संकट से परेशान है। हरियाणा, दिल्ली, पंजाब और राजस्थान सभी राज्यों के अपने हिस्से का पानी मिलना चाहिए और यह जिम्मेदारी केंद्र सरकार की है। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में सरकार बनने से पहले कहा था कि हमारी सरकार बना दो, जो भारत का पानी बह कर पाकिस्तान जा रहा है मैं उसको रोकूंगा और सभी राज्यों को पानी दूंगा। लेकिन आज तक एक बूंद भी पानी की नहीं रोकी। उन्होंने कहा कि अब पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद बीजेपी सरकार ने कहा कि जाने सिंधु जल समझौते को खत्म कर दिया और पाकिस्तान का पानी रोक दिया। यदि सरकार ने सिंधु जल समझौते को तोड़ दिया और पाकिस्तान का पानी रोक दिया तो वो पानी गया कहां? उस पानी को राजस्थान को दे, हरियाणा को दे और पंजाब को भी दे। उन्होंने कहा कि देश की जनता इन सब बातों को समझती है। इसलिए मेरा प्रधानमंत्री मोदी से निवेदन है कि सभी राज्यों को उनके हिस्से का पानी दे।

101 यूनिट हुई रक्त एकत्रित : रक्तदाताओं में देखा गया काफी उत्साह

रतिया, 3 मई (अमन सेठी) : भारत विकास परिषद् शाखा रतिया द्वारा जिला रैडक्रॉस सोसाइटी फतेहाबाद के तत्वाधान में वरिष्ठ पत्रकार नीटू गोयल के सहयोग से उनके पिता स्वर्गीय श्री ओमप्रकाश गोयल जी धारसूल वाले की याद में अग्रवाल धर्मशाला नजदीक स्थित गोगामेड़ी प्रांगण में 15वां रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। रतिया के एसडीएम सुरेश कुमार ने मुख्यातिथि के तौर पर शिरकत की। इस शिविर में स्वर्गीय ओम प्रकाश गोयल की धर्मपत्नी शकुंतला देवी व उनके सुपुत्र नीटू गोयल की भी परिवार सहित गरिमामयी उपस्थिति रही। शिविर की अध्यक्षता भाविप प्रांत हरियाणा पश्चिम संगठन सचिव रविंद्र मेहता ने की। शिविर की शुरुआत मुख्यातिथि ने द्वीप प्रज्वलन के साथ की। शाखा सचिव लोकेश खुराना ने सर्वप्रथम आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। मुख्यातिथि ने अपने संबोधन में कहा की रक्तदान सबसे बड़ा दान है और भारत विकास परिषद् रतिया हर वर्ष यह शिविर लगाती है जो की अत्यंत सराहनीय है। संरक्षक डॉ. नरेश गोयल व जिला सह समन्वयक ने परिषद की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया। अंत में शाखा अध्यक्ष राज कुमार सिंगला ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। इस शिविर में कुल 101 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। इस रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं में काफी उत्साह देखा गया महिलाओं ने भी इस शिविर काफी संख्या में रक्तदान किया शिविर के अंत में रक्तदान एकत्रित करने आई फतेहाबाद ब्लड बैंक की मेडिकल टीम को भाविप के पदाधिकारियों द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर सयोंजक सेवा प्रमुख जनक राज गोयल, विपिन बांसल पम्प वाले, बी.एल. बतरा, वित्त सचिव सौरभ गोयल, प्रदीप बांसल, नितेश अग्रवाल, सचिन तनेजा, नरेंद्र मलिक, अनुराग स्वामी, सतीश खन्ना, सुशील जैन, राजेश गुप्ता, अवतार ढींगरा, डॉ. दीपक गोयल, धर्मवीर ललित, रमेश तनेजा आदि भाविप सदस्य एवं भाजपा मंडलाध्यक्ष अकिंत सिंगला,जेकी गर्ग, प्रवीण गर्ग, सती माता मंदिर प्रधान सोमनाथ गर्ग, एडवोकेट विक्की गर्ग, रमन बलाना, संदीप सिंगला, सुरेश मंगला, मिट्ठूसिंगला, गुगा मेड़ी मंदिर कमेटी के सदस्य व आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

महाराजा जस्सा सिंह अहलूवालिया जी की 307वीं जयंती हर्षोउल्लास व श्रद्धा के साथ मनाई

नारायणगढ़, 3 मई (देवेन्द्र शर्मा) : नारायणगढ़ की अहलूवालिया बिरादरी द्वारा सिख इतिहास के महान योद्धा एवं समाज सुधारक सुलतान उल कौम महाराजा जस्सा सिंह अहलूवालिया जी की 307 वीं जयंती हर्षोउल्लास व श्रद्धा के साथ मनाई गई। इस अवसर पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में बिरादरी के लोगों, स्थानीय नागरिकों एवं विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया। जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व विधायक डॉ. पवन सैनी ने शिरकत की।

उन्होंने अपने संबोधन में महाराजा जस्सा सिंह अहलूवालिया जी को नमन करते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया और उनके योगदान को आज के युग में भी प्रासंगिक बताया। उन्होंने कहा कि महान योद्धा, धर्म रक्षक व सिख कौम के गौरव महाराजा जस्सा सिंह अहलूवालिया जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर वे अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे है। उन्होंने कहा कि हमें सदैव अपने महापुरूषों को याद रखना चाहिए और अपने बच्चों को उनकी जीवनी से अवगत करवाना चाहिए। जिससे कि उन्हें हमारे प्राचीन इतिहास, गौरवशाली संस्कृति और समाज एवं देश के प्रति उनके योगदान के बारे में जानकारी मिल सके। उन्होंने कहा कि महाराजा जस्सा सिंह जी ने अपने अद्भुत साहस, संगठन शक्ति और निष्ठा से न केवल सिख समाज बल्कि समूचे भारतवर्ष के आत्मसम्मान की रक्षा की। उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणा स्रोत है। ऐसे वीर पुरुष को स्मरण करना हमारी सांस्कृतिक विरासत और गौरवपूर्ण इतिहास से जुडने का अवसर है।

उन्होने कहा कि इस ऐतिहासिक क्षण का हिस्सा बनना उनके लिए अत्यंत सम्मान की बात है। इस मौके पर पूर्व विधायक डॉ. पवन सैनी को अहलुवालिया सभा के प्रधान मुकेश वालिया व बिरादरी के गणमान्य लोगों ने शिरोपा ओढाकर एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की शुरुआत सुखमणि साहब के पाठ और अरदास के साथ हुई, जिसके पश्चात वक्ताओं ने महाराजा जस्सा सिंह जी की वीरता, नेतृत्व और सामाजिक सेवा पर प्रकाश डाला।

समारोह में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ-साथ लंगर का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में अहलुवालिया सभा के पदाधिकारियों ने सभी अतिथियों, विशेष रूप से पूर्व विधायक डॉ. पवन सैनी का धन्यवाद किया और यह संकल्प लिया कि ऐसे आयोजनों के माध्यम से युवा पीढ़ी को अपने गौरवशाली इतिहास से जोड़ते रहेंगे। प्रधान मुकेश वालिया ने महाराजा जस्सा सिंह अहलूवालिया जी को नमन करते हुए कहा कि महाराजा जस्सा सिंह अहलूवालिया जी का जन्म 3 मई सन् 1718 में हुआ था। वे न केवल एक महान योद्धा थे, बल्कि एक सच्चे राष्ट्रनायक भी थे, जिन्होंने सिखों को संगठित कर विदेशी आक्रांताओं से संघर्ष किया। उनका जीवन आज भी युवाओं को प्रेरणा देने वाला है।

कार्यक्रम में काफी संख्या में अहलूवालिया बिरादरी व क्षेत्र के गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

दूसरी राष्ट्रीय लोक अदालत 10 मई 2025 को : सीजेएम सुमित्रा कादियान

यमुनानगर, 3 मई (दिनेश कुमार) : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम सुमित्रा कादियान ने बताया कि दूसरी राष्ट्रीय लोक अदालत 10 मई 2025 को शनिवार के दिन आयोजित की जाएगी। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में आपराधिक मामले, धारा-138 के तहत एनआई एक्ट के मामले, बैंक रिकवरी केस, एमएसीटी मामले, वैवाहिक विवाद मामले, श्रम विवाद मामले, भूमि अधिग्रहण मामले, बिजली और पानी से संबंधित मामले (गैर शमन योग्य मामलों को छोड़कर) वेतन और भत्ते तथा पुनः परीक्षण लाभ से संबंधित सेवा मामले, और राजस्व व अन्य सहायक मामले जो कि सुलझाने योग्य हैं इस अदालत में लिए जाएंगे। सीजेएम ने बताया कि आपसी सहमति से हल हो सकने वाले मामलों में राष्ट्रीय लोक अदालत बहुत ही कारगर सिद्ध हो रही हैं और राष्ट्रीय लोक अदालत में सुनाए गए फैसले की भी उतनी ही अहमियत है जितनी सामान्य अदालत में सुनाए गए फैसले की होती है। उन्होंने यह भी बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में सुनाए गए फैसले के खिलाफ अपील दायर नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय लोक अदालत में सस्ता और सुलभ न्याय मिलता है। राष्ट्रीय लोक अदालतों के माध्यम से लोगों का बिना समय व पैसा गवाएं केसों का समाधान किया जाता है। राष्ट्रीय लोक अदालतों में न तो किसी पक्ष की हार होती है और न ही जीत बल्कि दोनों पक्षों की आपसी सहमति से विवादों का समाधान करवाया जाता है। कानूनी सहायता के लिए नालसा के टोल फ्री नंबर-15100 पर सम्पर्क कर सकते है।

श्री कृष्ण आयुष विश्वविद्यालय में बच्चों को पिलाया स्वर्णप्राशन

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : श्री कृष्ण आयुष विश्वविद्यालय के कौमारभृत्य विभाग द्वारा शनिवार को स्वर्णप्राशन संस्कार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साल 2018 के बाद जन्मे बच्चों को स्वर्णप्राशन की विशेष बूंदें पिलाई गई, जिसका उद्देश्य बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता, बुद्धि, स्मरण शक्ति एवं संपूर्ण विकास को बढ़ाना है।

इस अवसर पर कौमारभृत्य विभाग के चेयरमैन प्रो. वैद्य शंभू दयाल शर्मा ने बताया कि कुलपति प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान के मार्गदर्शन में हर पुष्य नक्षत्र के दिन विश्वविद्यालय के आयुर्वेद अस्पताल परिसर में कैंप लगाया जाता है,जिसमें अनुभवी वैद्यों की देखरेख में स्वर्णप्राशन संस्कार विधि पूर्वक किया जाता है।

स्वर्णप्राशन बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है : प्रो.वैद्य अमित कटारिया ने बच्चों के अभिभावकों को स्वर्णप्राशन के लाभों के बारे में जागरूक किया और बताया कि हर पुष्य नक्षत्र के दिन यह संस्कार बच्चों के लिए अत्यंत लाभकारी माना गया है। प्रो. कटारिया ने बताया कि स्वर्णप्राशन बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है। स्मरण शक्ति व

बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अमृत है बूंद

बुद्धि विकास में सहायता करता है। यही नहीं, बार-बार बीमार पड़ने वाले बच्चों को स्वास्थ्य लाभ देता है।

क्या है स्वर्णप्राशन : स्वर्णप्राशन एक आयुर्वेदिक विधि है जिसमें शुद्ध स्वर्ण भस्म, घृत (घी), मधु और कुछ औषधियों के मिश्रण को विशेष विधि से तैयार कर बच्चों को दिया जाता है।

यह परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है और बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में कारगर मानी जाती है।

पुष्य नक्षत्र पर 31 मई को लगेगा कैंप : अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. राजेंद्र चौधरी ने अधिक से अधिक अभिभावकों से अपील की कि वे आगामी पुष्य नक्षत्र 31 मई को पर आयोजित होने वाले स्वर्णप्राशन संस्कार में भाग लेकर अपने बच्चों को इस प्राचीन, सुरक्षित और प्रभावी आयुर्वेदिक संस्कार का लाभ दिलाएं।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल के जन्मदिवस के अवसर पर कल होगा विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन : जगमोहन आनंद

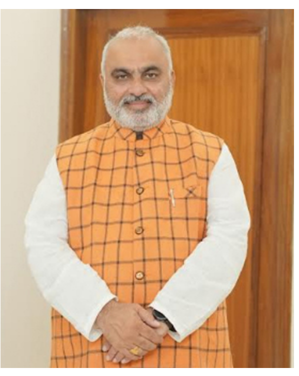

करनाल, 3 मई (सोनी दुआ) : जगमोहन आनंद ने कहा कि आगामी 5 मई को केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी मामले मंत्री मनोहर लाल के जन्मदिवस के अवसर पर विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रक्तदान शिविर स्थानीय सनातन धर्म मंदिर कुंजपुरा रोड पर प्रातः 9 बजे से लेकर दोपहर 2 बजे तक आयोजित किया जाएगा। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि इस रक्तदान शिविर में बढ़-चढक़र भाग ले और समाज सेवा में अपना अमूल्य योगदान दें। रक्तदान महादान है, आप द्वारा दिया गया एक यूनिट रक्त किसी भी व्यक्ति की पूरी जिंदगी बचा सकता है। उन्होंने बताया कि रक्तदान करने से ह्दय रोग के जोखिम भी कम होते है इसलिए हमे समय-समय पर रक्तदान करते रहना चाहिए। रक्तदान उतना ही जरूरी होता है, जितना की रक्त कमी वाले लोगों के लिए रक्त की आपूर्ति जरूरी होती है। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने से हम किसी की जिंदगी बचा सकते है, रक्तदान करने वाले महान होते हैं जो दूसरों की जिंदगी को बचाने के लिए प्रयास करते हैं। ब्लड बैंक में हमेशा पर्याप्त मात्रा में ब्लड उपलब्ध रहे तथा लोगों को जरूरत पड़ने पर आसानी से ब्लड मिल सके, इसके लिए हमे समय-समय पर रक्तदान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि रक्तदान करने से लोगों के शरीर में एक नई ऊर्जा का संचार होता है, इसलिए आगामी 5 मई को केंद्रीय ऊर्जा, आवास एवं शहरी मामले मंत्री मनोहर लाल के जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित होने वाले विशाल रक्तदान शिविर में भाग लें तथा अपना अमूल्य योगदान दे।

जीवन में बुलंदियों को छूने के लिए चहुंमुखी ज्ञान जरूरी: डा. सुरिंद्र कौर

यमुनानगर, 3 मई (दिनेश कुमार) : डीएवी गर्ल्स कालेज में पेरेंट्स-टीचर मीट का आयोजन किया गया। कालेज की कार्यवाहक प्रिंसिपल डॉ सुरिंद्र कौर व अंग्रेजी विभाग अध्यक्ष एवं कार्यक्रम कनवीनर डॉ रीटा सिंह ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम की अध्यक्षता की। करियर साइक्लोजिस्ट एवं काउंसलर गुरमीत कौर मुख्य वक्ता रहीं। डॉ सुरिंद्र कौर ने कहा कि छात्राओं की समस्याओं का निदान करने के लिए पेरेंट्स टीचर मीट जरूरी है। आज टेक्नोलॉजी में बहुत तेजी से बदलाव आ रहे है। उसके प्रभाव से छात्राएं अछूती नहीं है।

ऐसे में टीचर्स व अभिभावकों की जिम्मेदारी ज्यादा बढ जाती है कि वे छात्राओं का ध्यान रखें। ताकि वे टेक्नोलॉजी का सही प्रकार से इस्तेमाल कर सके। उन्होंने छात्राओं से आह्वान किया कि वे सभी बातें अभिभावकों के साथ सांझा करें। अभिभावक भी बच्चों की भावनाओं को समझे। कालेज में पढाई के साथ सथ छात्राओं को खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित अन्य में भाग लेने का अवसर प्रदान किया जाता है। फ्री पीडियर में छात्राओं को योगा व मेडिटेशन की जानकारी मुहैया करवाई जाती है। नई एजुकेशन पॉलिसी में अभिभावकों व टीचर्स की क्या भूमिका है, इसके बारे में विस्तार से चर्चा की। साथ ही कहा कि जीवन में बुलंदियों को छूने के लिए चहूंमुखी ज्ञान जरूरी है। उन्होंने छात्राओं से आह्वान किया कि वे सशक्त समाज की स्थापना के लिए स्वयं सशक्त बनें। गुरमीत कौर ने कहा कि सोशल मीडिया का अत्याधिक प्रयोग से विद्यार्थियों में भावनात्मक घुटन बढ़ रही है। बच्चे हीनभावना के शिकार हो रहे हैं। ऐसे में अभिभावकों को बच्चों से जुडाव, उनके साथ समय बिताना और तकनीक के साथ बैलेंस बिठाना सीखाना चाहिए। उन्होंने अभिभावकों से आह्वान किया कि वे बच्चों को स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार भी दें। मनोविज्ञान विभाग अध्यक्ष शालिनी छाबडा ने कहा कि बच्चों के जीवन में अभिभावकों व शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। आधुनिक परिवेश में पल रहे बच्चों के साथ अभिभावक रोजना थोडा समय जरूर बिताए। कॉलेज में छात्राएं क्या पढ व सीख रही हैं, इसके बारे में अभिभावकों को जरूर पता होना चाहिए। मौके पर डॉ अनीता मौदगिल, डॉ मीनाक्षी सैनी, डॉ नीता द्विवेदी, डॉ गुरशरन कौर, डॉ निताशा, डॉ दीपिका घई, परमेश कुमार व हरकिशन स्टडी सर्कल के डिप्टी चीफ अजिंदर पाल सिंह उपस्थित रहे।

हरियाणा के जल हितों की रक्षा के लिए इनेलो 5 को करेंगी प्रदर्शन : कविता धनखड़

करनाल, 3 मई (संदीप रोहिला) : पंजाब सरकार द्वारा हरियाणा प्रदेश के साथ की गई जल संधि के खिलाफ जाकर काम करने के विरोध में इंडियन नेशनल लोकदल पार्टी द्वारा 5 मई को जिला स्तर पर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। यह प्रदर्शन उतरी हरियाणा के अम्बाला जोन के 7 जिलों करनाल, पंचकूला, यमुनानगर, अम्बाला, कुरुक्षेत्र, कैथल ओर पानीपत में किया जाएगा। प्रदर्शन की रूपरेखा के लिए शनिवार को पार्टी कार्यालय में जिला करनाल पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं की एक अहम मीटिंग हुई। मीटिंग की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष सुरजीत शामगढ़ ने की। मौके पर इनैलो की महिला विंग की जिला संयोजक कविता धनखड़ के बनने पर खुशी जाहिर की।

नव नियुक्त जिला संयोजक कविता धनखड़ ने उपस्थित कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो जिम्मेदारी पार्टी द्वारा मुझे दी गई, उसे पूरी ईमानदारी व निष्ठा से निभाया जाएगा। उन्होंने कहा कि 5 मई को पार्टी को हरियाणा प्रदेश जल रक्षा के लिए किए जाने वाले प्रदर्शन में महिलाएं बढ़चढ़ कर भाग लेंगी, क्योंकि प्रदर्शन का नेतृत्व राष्ट्रीय महिला संयोजक सुनैना चौटाला द्वारा किया जाएगा जो प्रधानमंत्री के नाम जिला उपायुक्त को मांगों से सम्बधित ज्ञापन सौंपेंगी। क्योंकि जो जल संधि 1976 में केंद्र सरकार की अधिसूचना के अनुसार हरियाणा को 3.5 मिलियन एकड़ फीट पानी का हिस्सा निर्धारित किया था, जिसको बाद में 1981 के त्रिपक्षीय समझौते में भी अनुमोदित किया गया था, लेकिन वर्तमान में हरियाणा को भाखड़ा नहर प्रणाली से मात्र 4 हजार क्यूसिक जल मिल रहा है। जबकि वास्तव में 8500 क्यूसिक पानी की प्रदेश की प्रतिदिन की आवश्यकता है, जिसके कारण किसानों ओर आम आदमी को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है।

हरियाणा में पीने के पानी का पूर्णरूप से अभाव हो चुका है व कृषि उत्पादन पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, इनेलो पार्टी इसका डकटकर विरोध करेंगी। इस मौके पर सुरजीत संधू, यशवीर राणा, रामकुमार ऐबला, प्रदेश प्रवक्ता कृष्ण कुटैल, मनोज काम्बोज, मनिंद्र राणा, मेहर सिंह रोड, बलवान वाल्मीकि, भगवंत संधू, भरत मढ़ाण, सुकरम पाल, नरेश सांभली, रामफल जुंडला, मनिंद्र पूनिया सहित अन्य मौजूद रहे।

बस अड्डा परिसर में न हो जल भराव, स्थाई व्यवस्था के लिए 3 दिन के अंदर प्रस्ताव तैयार कर सरकार को भिजवाएं अधिकारी : विनोद भयाना

हांसी, 3 मई (मनमोहन शर्मा) : विधायक विनोद भयाना ने शनिवार को स्थानीय लोक निर्माण विभाग के विश्रामगृह में विभिन्न विभागों के अधिकारियों की एक बैठक ली। इसमें लोक निर्माण विभाग, जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग तथा हरियाणा राज्य परिवहन विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। भयाना ने विकास कार्यों से जुड़े विभागों के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि जिन विकास परियोजनाओं पर निर्माण कार्य चल रहा है उन्हें निर्धारित समय अवधि के अंदर तेजी से पूरा करना सुनिश्चित करें और जो विकास कार्य पाइपलाइन में है उनकी टेंडर इत्यादि की प्रक्रिया पूरा करके निर्माण कार्य शुरू करवाया जाए। उन्होंने बस अड्डा परिसर में बरसाती पानी निकासी की धीमी गति पर संबंधित विभागों के अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी सूरत में बस अड्डा परिसर में बरसाती पानी भराव नहीं होना चाहिए। उन्होंने बैठक में मौजूद सभी अधिकारियों से कहा कि वह तुरंत बस अड्डा परिसर का दौरा कर तमाम व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए आगामी 3 दिन के अंदर बरसाती पानी निकासी के लिए प्रस्ताव तैयार कर सरकार को भिजवाना सुनिश्चित

करें। इस प्रस्ताव को राज्य सरकार द्वारा जल्दी स्वीकृति प्रदान करवा कर इस परियोजना पर काम शुरू करवाया जाएगा ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हो। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट कहा कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की देरी या लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। विधायक ने सुनी जन समस्याएं- बैठक के पश्चात विधायक ने अपने आवास पर हलके के लोगों की समस्याओं को सुना। उन्होंने शिकायतों के समाधान के लिए मौके पर ही संबंधित विभागों के अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने ग्राम पंचायतों द्वारा गांव के विकास को लेकर रखी गई विकास कार्यों की मांगों को भी लिया। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत द्वारा रखी गई बड़ी मांगों को 11 मई को होने वाली विकास रैली में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के सम्मुख रखा जाएगा। बैठक में जी एम रोडवेज हिसार मंगल सेन, लोक निर्माण विभाग के कार्यकारी अभियंता अनिल नरवाल, जन स्वास्थ्य विभाग के कार्यकारी अभियंता संजीव त्यागी, विधायक के निजी सचिव रवि अरोड़ तथा अन्य अधिकारी तथा कर्मचारी मौजूद रहे।

जे.सी. महिला महाविद्यालय में टैली प्राइम एक्सटेंशन पर व्याख्यान का आयोजन

असन्ध, 3 मई (दलसिह मान) : नगर के जीवन चानन महिला महाविद्यालय में एक शॉर्ट टर्म कोर्स के अंतर्गत टैली प्राइम पर आधारित एक विशेष एक्सटेंशन लेक्चर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. रेखा शर्मा की देखरेख में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर दीप्ति दूआ और आदिति शर्मा द्वारा किया गया। उन्होंने पूरे कार्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाया और सभी उपस्थितजनों का स्वागत किया। एक्सटेंशन लेक्चर को असिस्टेंट प्रोफेसर पूजा द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने छात्राओं को टैली प्राइम सॉफ्टवेयर से जुड़ी व्यावहारिक जानकारी दी और इसके विभिन्न उपयोगों को विस्तारपूर्वक समझाया। छात्राओं ने व्याख्यान के दौरान बहुत उत्साह दिखाया और सॉफ्टवेयर से संबंधित महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझा। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर में दक्ष बनाना और उन्हें औद्योगिक मांगों के अनुसार तैयार करना था। यह आयोजन छात्राओं के लिए न केवल ज्ञानवर्धक रहा, बल्कि उनके करियर के दृष्टिकोण से भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस अवसर पर डॉ हेमलता शर्मा, डॉ सिमरत पाल, निधि, स्वर्णजीत कौर, अनुराधा और श्वेता समेत कई फैकल्टी सदस्य उपस्थित रहें।

राजकीय स्कूलों के इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाने और टैलेंट पर खर्च होगा 11 करोड़ 39 लाख का बजट : नेहा सिंह

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि सरकार की तरफ से राजकीय स्कूलों की इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाने पर विशेष फोकस रखा है। इन स्कूलों में तमाम सुविधाएं उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा को निखारने के लिए भी योजनाओं को अमलीजामा पहनाने का काम किया है। इस जिले में शिक्षा विभाग की रिपोर्ट के अनुसार स्कूलों के इन्फ्रास्ट्रक्चर और टैलेंट जैसे अहम विषयों पर सरकार की तरफ से करीब 11 करोड़ 39 लाख का बजट तय किया है। उपायुक्त नेहा सिंह ने बातचीत करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के गृह क्षेत्र कुरुक्षेत्र में राजकीय स्कूलों में विद्यार्थियों को तमाम

सुविधाएं उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत बनाने का काम किया जा रहा है। इस जिले में समग्र शिक्षा योजना के अंतर्गत राजकीय स्कूलों में 35 से ज्यादा विषयों को जहन में रखकर कार्य किया जा रहा है। इन विषयों में स्कूलों में कमरों का निर्माण करना, बच्चों की प्रतिभा में निखार लाने के लिए 15 अगस्त, 26 जनवरी, कला उत्सव के साथ-साथ साल भर की सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए मंच उपलब्ध करवाने और स्कूलों में मुरम्मत आदि का कार्य करवाए जाते है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार की तरफ से समग्र शिक्षा की 35 से ज्यादा गतिविधियों को पूरा करने के लिए 7 करोड़ 12 लाख रुपए वर्ष 2024-25 के लिए सैंक्शन किए और इसमें से 6 करोड़ 20 लाख रुपए की राशि गतिविधियों के लिए जारी की गई है। इस जिले में शिक्षा विभाग की रिपोर्ट के अनुसार स्कूलों को अपग्रेड करने के लिए सरकार की पीएमश्री योजना के तहत कार्य किया जा रहा है। इस जिले में वर्ष 2024-25 में 46 गतिविधियों के लिए पीएमश्री के तहत 1 करोड़ 75 लाख रुपए की ग्रांट सैंक्शन की गई और इसमें से 1 करोड़ 67 लाख रुपए की ग्रांट जारी कर दी गई है। इतना ही नहीं पीएमश्री योजना और समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में सिविल कार्य करवाने के लिए 4 करोड़ 54 लाख रुपए का बजट सैंक्शन किया गया और इसमें से 3 करोड़ 50 लाख का बजट जारी किया गया है।

उपायुक्त नेहा सिंह ने कहा कि शिक्षा विभाग ने दिसंबर 2024 तक स्कूल मैनेजमेंट कमेटी(एसएमसी)के माध्यम से स्कूलों में क्लास रूम,लाइब्रेरी, कंप्यूटर रूम व हेड मास्टर रूम सहित अन्य कार्य करवाएं है। इस वित्त वर्ष 2024-25 में 26 विकास कार्य करवाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए सरकार ने 2 करोड़ 61 लाख रुपए का बजट सैंक्शन किया है। यह सभी कार्य प्रगति पर है और इसके लिए करीब 2 करोड़ रुपए का बजट जारी कर दिया गया है।

अग्नि सुरक्षा पर विशेषज्ञ व्याख्यान प्रशिक्षण शिविर आयोजित

बाबैन, 3 मई (राजेश कुमार) : भारत एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी के प्रशिक्षण केंद्र, प्रहलादपुर में अग्नि सुरक्षा पर विशेषज्ञ व्याख्यान और व्यावहारिक प्रशिक्षण शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। फायर स्टेशन लाडवा के अग्नि सुरक्षा अधिकारियों मनजिंदर सिंह और मदन लाल के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना के अनेक बच्चों ने भाग लिया। कालेन परिसर में चले व्यावहारिक प्रशिक्षण शिविर में डीडीयू-जीकेवाई (दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना) परियोजना 270 से अधिक छात्रों को प्रशिक्षण दिया गया। अग्नि सुरक्षा पर विशेषज्ञ व्याख्यान और व्यावहारिक प्रशिक्षण का उद्देश्य छात्रों को आग से बचाव, आपातकालीन प्रतिक्रिया और अग्निशामक यंत्रों और अन्य सुरक्षा उपकरणों के उचित उपयोग के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। शिविर में छात्रों को आग की आपात स्थिति से निपटने के लिए लाइव प्रदर्शन और व्यावहारिक जानकारी दी गई। कार्यक्रम को प्रशिक्षुओं और कर्मचारियों द्वारा समान रूप से सराहा गया। इस अवसर पर संस्थान की अध्यक्ष प्रो. कैलाशो सैनी, निदेशक व डीडीयू-जीकेवाई रुबेल शर्मा, समस्त स्टाफ एवं बच्चे भी उपस्थित रहे।

ग्लोब हेरिटेज में हुआ प्लास्टिक प्रदूषण जागरूकता सेमिनार

लाडवा, 3 मई (रामगोपाल) : ग्लोब हेरिटेज इंटरनेशनल स्कूल में प्लास्टिक प्रदूषण जागरूकता पर सेमिनार आयोजित किया गया। स्कूल के रसायन विभाग के शिक्षक रोहित शेयोरण ने जानकारी देते हुए बताया कि स्कूल परिसर में स्कूल स्टाफ व बच्चों के लिए प्लास्टिक प्रदूषण जागरूकता पर सेमिनार आयोजित किया गया जिसमें कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के डीन प्रोफेसर डॉ संजीव अरोड़ा ने मुख्य वक्ता के रूप में प्लास्टिक प्रदूषण पर अपने विचार साँझा किये। रीतू सिंगला ने इस वक्तव्य का उद्देश्य बताते हुए कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण वर्तमान समय में सबसे खतरनाक प्रदूषणों में से एक है जिसकी जागरूकता होना अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य वक्ता डॉ संजीव अरोड़ा, स्कूल प्रबंधक समिति की प्रधान रंजना गोयल, महासचिव संजीव अग्रवाल व प्रधानाचार्या रीतू सिंगला ने दीप प्रज्वलित करके किया। स्कूल की तरफ से पुष्प गुच्छ देकर मुख्य वक्ता का स्वागत किया गया। मुख्य वक्ता डीन प्रोफेसर डॉ संजीव अरोड़ा

प्लास्टिक प्रदूषण वर्तमान समय में सबसे खतरनाक प्रदूषणों में से एक है : रीतू सिंगला

ने प्लास्टिक प्रदूषण पर सम्बोधित करते हुए कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण का मतलब पर्यावरण में प्लास्टिक कचरे का जमा होना है जिससे वन्यजीव, आवास और मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह आसानी से उपलब्ध और टिकाऊ है लेकिन इसका अपघटन नहीं होता जिससे यह पृथ्वी पर लंबे समय तक रहता है। इस प्रदूषण से समुद्री जीवन, मिट्टी और जल स्रोतों पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे न केवल मानव के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है बल्कि सम्पूर्ण जीवन में समस्याओं की वृद्धि हो जाती है। उन्होंने उपस्थित जन को प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। स्कूल स्टाफ व बच्चों ने प्लास्टिक प्रदूषण से सम्बंधित विभिन्न प्रश्न पूछे जिसका उन्होंने सरल भाषा में जवाब देकर सम्पूर्ण वक्तव्य को रोचक व ज्ञानवर्धक बनाये रखा। स्कूल प्रबंधक समिति की तरफ से प्रधान रंजना गोयल व महासचिव संजीव अग्रवाल ने मुख्य वक्ता को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

गीता विद्या मंदिर में हुआ आर्ट और क्राफ्ट सेमिनार का आयोजन

शाहाबाद मारकंडा, 3 मई (रूबी) : गीता विद्या मंदिर में आज आर्ट एंड क्राफ्ट सीखाने के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया। स्कूल की प्रधानाचार्य निशा गोयल द्वारा सेमिनार का शुभारंभ दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर प्रिंसिपल निशा गोयल ने कहा कि कला और शिल्प दोनों ही मानव अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण रूप हैं कला रचनात्मक और कल्पना को व्यक्त करने का माध्यम है जबकि शिल्प उपयोगी और सौंदर्य पूर्ण वस्तुओं को बनाने की कला है। दिल्ली से आए महेंद्र राय (ऑर्गेनिक क्राफ्ट आर्ट) उन्होंने बच्चों को रंगीन कागजो से कैंडल, रोज, क्रिसमस ट्री, कैंडल ट्री, लोटस, और साथ ही रंगोली के डिजाइन, जापानी पंखा आदि बहुत ही सुंदर वस्तुएं बनाना सिखाया। इस अवसर पर आचार्य रजवंत कौर, सुनील, विक्रम, सूर्य, शैली, ममता, खुशी, अनुराधा, पूजा, रम्मी, और सुमेधा रानी उपस्थित रहे।

डीएलएसए द्वारा कानूनी जागरूकता शिविरों का किया जा रहा है आयोजन

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि जिला एवं सत्र न्यायधीश दिनेश कुमार मित्तल के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जागरूकता शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि इसी कड़ी में आज पीएलवी विशाल ने गांव बटेड़ी में आमजन को संगठित और असंगठित मजदूरों के अधिकारों, नालसा हेल्पलाइन नंबर 15100, विधवाओं के लिए हालसा की योजनाएं, नालसा (मानसिक रुप से विकलांग और विकलांग व्यक्तियों के लिए कानूनी सेवाएं) योजना 2015, नालसा (असंगठित मजदूरों के लिए कानूनी सेवाएं) योजना 2015, नालसा (वरिष्ठ नागरिकों के लिए कानूनी सेवाएं) योजना 2016, पोष एक्ट, पोक्सो एक्ट, विक्टिम केयर एंड सपोर्ट सिस्टम, व डीएलएसए द्वारा दी जाने वाली मुफ्त कानूनी सहायता के बारे में जागरूक किया गया और उन्हें पंपलेट बांटे गए। इन कैंपों का उद्देश्य लोगों में जागरूकता लाना है ताकि डीएलएसए द्वारा दी जाने वाली मुफ्त कानूनी सहायता के बारे में आम नागरिकों को अधिक से अधिक जागरुक किया जा सके।

पुलिस टीम ने महिला से छेड़छाड़ करने के आरोप में एक आरोपी को किया गिरफ्तार

यमुनानगर, 3 मई (दिनेश कुमार) : पुलिस प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस अधीक्षक सुरेंद्र सिंह भौरिया के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए, थाना छप्पर पुलिस टीम ने महिला से छेड़छाड़ करने के आरोप में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर कोर्ट में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया। थाना प्रबंधक प्रमोद कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि एक महिला ने शिकायत दर्ज करवाई कि गांव सुढैल निवासी मायाराम पुत्र रामशरण उसका दूर का रिश्तेदार है। वह काफी दिनों से उसका पीछा कर रहा था जिस बारे हमारी पंचायत भी हुई थी और पंचायत में आरोपी ने माफी भी मांगी थी लेकिन फिर भी वह हरकत से बाज नहीं आया। दिनांक 30 अप्रैल को जब वह अपने घर जा रही थी तो आरोपी बाइक पर पीछे से आया और उसका हाथ पकड़ कर गलत नीयत से छेड़छाड़ करने लगा। इस शिकायत पर आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उप निरीक्षक रुचि के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। टीम ने कार्यवाही करते हुए आरोपी माया राम को गिरफ्तार किया। आरोपी को कोर्ट में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

दिनेश बक्शी ने मानवता की भलाई के लिए 91वीं बार किए प्लेटलेट्स दान

करनाल, 3 मई (सोनी दुआ) : लक्ष्य जनहित सोसाइटी के फाउंडर एंव समाजसेवी दिनेश बक्शी ने आज एक बार फिर मानवता की भलाई के लिए प्लेटलेट्स दान किए। उल्लेखनीय हैं कि आज दिनेश बक्शी को एक फोन कॉल अर्पणा अस्पताल में भर्ती बच्चे जिसकी प्लेटलेट्स 5000 रह गई थी उसके पिता का फोन आया। उन्होंने कहा कि हमे अपने बच्चे जिसकी प्लेटलेट्स 4000 रह गई है। उसके लिए प्लेटलेट्स की आवश्यकता है। जिसका प्रोसेस पी आर पी ब्लड सेंटर में डोनेशन करवाएंगे उसे जल्द बी-पॉजिटिव ग्रुप के प्लेटलेट्स चढ़ाने होंगे। जिस के बाद दिनेश बक्शी ने बिना देर किए पी आर पी ब्लड सेंटर पे जाके अपने प्लेटलेट्स दान किए। ज्ञात रहे कि दिनेश बक्शी जो कि रक्तदान व पर्यावरण के लिए काफी समय से

काम करते है और महामहिम राज्यपाल के साथ-साथ कई नेशनल व इंटरनेशनल स्तर पर सम्मानित हो चुके है। उनके द्वारा अब तक 135 ब्लड व 91 बार प्लेटलेट्स दान किए गए है। दिनेश बक्शी का कहना है कि कोई भी स्वस्थ व्यक्ति 3 महीने के अंतराल पे ब्लड डोनेट कर सकता है, जबकि प्लेटलेट्स देने के 72 घंटे बाद दोबारा प्लेटलेट्स दान कर सकता है तथा महीने में 2 से 3 बार प्लेटलेट्स दान कर सकता है इससे शरीर में कोई कमजोरी नहीं आती। दिनेश बक्शी ने कहा कि इंसान को इंसान के काम आना चाहिए और ब्लड, प्लेटलेट्स ऐसी नायाब चीज प्रभु ने इंसान के शरीर में बनाई है जो आज तक किसी फैक्टरी या लैब में नहीं बन पाई है ये एक इंसान ही दूसरे इंसान को दे सकता है कैंसर जैसी बीमारी के लिए प्लेटलेट्स रोगी के लिए जीवन का काम करती है। युवा नशे की सुई की जगह रक्तदान करने के लिए सुई लगवाए अपने साथ किसी ओर का जीवन बचाए। नशा खुद के साथ परिवार का भी नाश करता है। दिनेश बक्शी ने युवाओं से आह्वान किया कि वोटर कार्ड के साथ साथ रक्तदान का भी कार्ड बनवाए वोटर कार्ड देशहित के लिए और रक्तदान समाज हित में करें।

सोनीपत की मंडियों व खरीद केंद्रों में की जा चुकी है 04 लाख 09 हजार 538 मीट्रिक टन गेहूं की खरीद

सोनीपत, 3 मई (विनोद) : डी.सी. डा. मनोज कुमार ने बताया कि जिला की विभिन्न मंडियों में गेहूं की आवक व खरीद तेज हो गई है। शुक्रवार देर सायं तक जिला की विभिन्न 24 मंडियों व खरीद केंद्रों में 04 लाख 09 हजार 538 मीट्रिक टन गेहूं की आवक हो चुकी है। इस गेहूं को विभिन्न एजेंसियों द्वारा खरीद लिया गया है। डी.सी ने बताया कि जिला की विभिन्न मंडियों में पहुंचे 04 लाख 09 हजार 538 मीट्रिक गेहूं में से खाद्य एवं आपूर्ति विभाग द्वारा 01 लाख 20 हजार 346 मीट्रिक टन, हैफेड द्वारा 01 लाख 68 हजार 666, मीट्रिक टन, हरियाणा वेयर हाउसिंग द्वारा 88 हजार 632 मीट्रिक टन और फूड कार्पोरेशन आफ इंडिया (एफसीआई) द्वारा 14 हजार 230, मीट्रिक टन गेहूं की खरीद की गई है।

जिला की मंडियों में पहुंचे गेहूं में बरोदा खरीद केन्द्र पर 4772 मीट्रिक टन, भैंसवाल खरीद केंद्र पर 6060 मीट्रिक टन, बिचपड़ी खरीद केन्द्र पर 1275 मीट्रिक टन, दातौली खरीद केन्द्र पर 5384 मीट्रिक टन, फरमाणा खरीद केन्द्र पर 13901 मीट्रिक टन, गन्नौर अनाज मण्डी में 32787, मीट्रिक टन, गोहाना मण्डी में 136416, मीट्रिक टन, हुल्लाहेड़ी खरीद केन्द्र पर 1935 मीट्रिक टन, कासंडी खरीद केन्द पर 9975 मीट्रिक टन, कथूरा खरीद केन्द्र पर 10357 मीट्रिक टन, खानपुर खरीद केन्द्र पर 9216 मीट्रिक टन, खरखौदा मण्डी में 58339 मीट्रिक टन, मोहाना खरीद केन्द्र पर 12195 मीट्रिक टन, मुण्डलाना खरीद केन्द्र पर 9184, मीट्रिक टन, मुरथल खरीद केन्द्र पर 10320 मीट्रिक टन, नाहरा खरीद केन्द्र पर 8755 मीट्रिक टन, पुगथला खरीद केन्द्र पर 15083 मीट्रिक टन, पुरखास खरीद केन्द्र पर 8220 मीट्रिक टन, रूखी खरीद केन्द्र पर 12535 मीट्रिक टन, सनपेड़ा खरीद केन्द्र पर 10213 मीट्रिक टन तथा सोनीपत मण्डी में 32628, मीट्रिक टन गेहूं की आवक हुई है। उपायुक्त ने बताया कि 04 लाख 09 हजार 538 मीट्रिक टन गेहूं को 30 हजार 780 किसान लेकर आए हैं और गेहूं की खरीद 2425 रुपये प्रति क्विंटल की दर से की गई है।

संस्था के सदस्यों ने जरूरतमंद बेटी की शादी में कन्यादान देकर निभाया अपना कर्तव्य

ऐसे पुण्य कार्य में सहयोग करने पर होती है सुख की अनुभूति : हरदीप राणा

करनाल, 3 मई (संदीप रोहिला) : मानवता जनशक्ति फाउंडेशन द्वारा नेक कार्य करते हुए एक गरीब बेटी की शादी में कन्यादान का जिम्मा उठाया। फाउंडेशन के संस्थापक हरदीप राणा व उनकी टीम ने बताया कि एक गरीब परिवार की बेटी के कन्यादान स्वरूप संस्था द्वारा बर्तन, कपड़े, गिफ्ट आईटम, अलमारी और शगुन के तौर पर पैसे देकर परिवार की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। उन्होंने बताया कि बिटिया के परिवार में कमाने वाला कोई नहीं है। पिता का देहांत हो चुका है और माता भी मेहनत मजदूरी कर परिवार का पालन पोषण कर रही है। ऐसे में सामाजिक संस्थाओं का कर्तव्य बनता है कि ऐसे जरूरतमंद परिवारों की बेटी की शादी में आर्थिक तौर पर मदद की जाएं। हरदीप राणा ने बताया कि उनकी संस्था द्वारा पहले भी अनेक जरूरतमंद लोगों के बच्चों के लिए आर्थिक सहयोग किया जा चुका है और इसके लिए संस्था के प्रत्येक सदस्य का सहयोग रहता है। उन्होंने बताया कि मां-बाप की इच्छा होती है कि उसकी बेटी की शादी धूमधाम से हो लेकिन कई बार आर्थिक परिस्थितियां ऐसी होती है कि वह इस सपने को पूरा कर पाने में बाधा बनती हैं। ऐसे ही मां-बाप के साथ बच्चों के सपनों को पूरा करने के लिए हमारी संस्था ऐसे नेक कार्य करती है। संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज के सामाजिक कार्य करने तथा आर्थिक उत्थान करना है। ऐसे पुण्य कार्य में सहभागी होने से आत्मा को असीम शांति की अनुभूति होती है। इस अवसर पर सुभाष शर्मा, गुलाब पोसवाल, संजना गौतम, सुजीता मान, शशि भास्कर, सीमा पासवान, अंजली गर्ग, सन्दीप मान, अरुण सहित आदि मौजूद रहे।

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए 5 लाख रुपए तक का मिलेगा ऋण : सोनू भट्ट

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : ए.डी.सी सोनू भट्ट ने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा मातृशक्ति उद्यमिता योजना हरियाणा महिला विकास निगम के माध्यम से ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उनके आर्थिक व सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए बैंकों के माध्यम से 5 लाख रुपये तक के ऋण दिलवाने की योजना लागू की गई है।

इस योजना के तहत जिला कुरुक्षेत्र के लिये 48 केसों का लक्ष्य रखा गया है। अतिरिक्त उपायुक्त सोनू भट्ट ने कहा कि इस स्कीम के अंतर्गत जिन महिलाओं की परिवारिक वार्षिक आय 5 लाख रुपये से कम, केवल हरियाणा की महिला उधमी तथा ऋण के लिए आवेदन के समय महिला उधमी की आयु 18 से 60 वर्ष के बीच इस स्कीम की पात्र होगी। आवेदक पहले से लिए गए ऋण का डिफाल्टर नहीं होना चाहिए।

योजना के तहत समय पर किस्त का भुगतान करने पर 3 वर्षो तक 7 प्रतिशत ब्याज अनुदान राशि हरियाणा महिला विकास निगम द्वारा दी जाएगी। योजना के तहत डेयरी उद्योग विभाग की सूची में शामिल नकारात्मक गतिविधियों तथा केवीआईबी को छोड़कर अन्य सभी गतिविधियां शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इस योजना में यातायात वाहन के तहत ऑटो रिक्शा, छोटा सामान ढोने के वाहन, थ्री-व्हीलर, ई-रिक्शा, टैक्सी, सामाजिक व व्यक्तिगत सेवा गतिविधियों के तहत सैलून, ब्यूटी पार्लर टेलरिंग बुटीक फोटोकॉपी की दुकान पापड़ बनाना, आचार बनाना, हलवाई की दुकान, फूड स्टॉल आइसक्रीम बनाने की युनिट बिस्कुट बनाना हैन्डलूम, बैंग बनाना, कैंटीन सर्विस इत्यादि का अपना काम शुरू कर सकती है। योजना का लाभ लेने के लिए निर्धारित दस्तावेज आवेदन के साथ जमा करवाने होंगे इन दस्तावेजों में आवेदन पत्र राशन कार्ड/ परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, दो पासपोर्ट आकार फोटो, रिहायशी प्रमाण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, ट्रेनिंग सर्टिफिकेट/अनुभव प्रमाण पत्र। अधिक जानकारी के लिए हरियाणा महिला विकास निगम कार्यालय के जिला प्रबंधक कोठी न. 465/5 मदानो वाली गली कुरुक्षेत्र फोन नं0 01744-223658 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

नीलोखेड़ी नगरपालिका का सफाई अभियान जोरों पर : अजित कुमार

नीलोखेड़ी, 3 मई (दर्शन शर्मा) : आज नीलोखेड़ी नगरपालिका के दरोगा सुनील कुमार एवं सफाई कर्मचारीयो द्वारा नीलोखेड़ी नागरिक हॉस्पिटल की सफाई करवाई गयी एवं उन्होंने कहा की हमें खुद भी कचरा कूड़ेदान में ही फेंकना चाहिए ताकि सफाई व्यवस्था बनी रहे एवं आने जाने वालों को कोई परेशानी ना हो नीलोखेड़ी नागपालिका सचिव अजित कुमार ने नीलोखेड़ी नगर वासियो से अपील की कि गिला व सूखा कूड़ा अलग अलग रखे, जिससे नगरपालिका कर्मचारियों को उठाने में परेशानी ना हो एवं उन्होंने कहा कि दुकानदार एवं रेहड़ी फड़ी वाले भाई भी अपने आस पास कूड़ा ना फैलाए एवं उस कूड़े को कूड़े दान मे ही रखे। सुबह से शाम तक नगरपालिका नीलोखेड़ी कि कूड़ा कचरा उठाने वाली गाड़ी घर घर घूमती रहती है।

कृषि यंत्रों का भौतिक सत्यापन 6 व 7 मई को

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : सहायक कृषि अभियन्ता राजेश वर्मा ने कहा कि जिला में फसल अवशेष प्रबंधन स्कीम 2024-25 के तहत जिन किसानो ने कृषि यंत्र खरीदे थे, जिनका प्रथम भौतिक सत्यापन 30 नवंबर 2024 को हो चुका है, उन सभी कृषि यंत्रों का द्वितीय भौतिक सत्यापन जिला स्तरीय कमेटी द्वारा किया जाएगा। इसमें बेलर तथा हे-रेक का 6 मई 2025 और सुपर सीडर का 7 मई 2025 को किया जाएगा। उन्होंने आज यहां एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि खंड थानेसर, पीपली व लाडवा के किसान नई अनाज मंडी थानेसर में, खंड शाहाबाद व बाबैन के किसान नई अनाज मंडी शाहाबाद में तथा खंड पिहोवा व इस्माइलाबाद के किसान नई अनाज मंडी पिहोवा में अपने कृषि यंत्र भौतिक सत्यापन हेतु लेकर आएंगे। भौतिक सत्यापन कार्य प्रातः 8 बजे से शुरू कर दिया जाएगा। द्वितीय भौतिक सत्यापन उपरांत बकाया 30 प्रतिशत अनुदान का भुगतान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो किसान 30 नवंबर 2024 को किसी कारण अपने कृषि यंत्रों का भौतिक सत्यापन नहीं करवा पाए थे। ऐसे सभी किसानों को भी अन्तिम मौका देते हुए भौतिक सत्यापन 6 मई व 7 मई 25 को किया जाएगा।

डीएलएसए की तरफ से 10 मई को किया जाएगा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि जिला एवं सत्र न्यायधीश दिनेश कुमार मित्तल के मार्गदर्शन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा 10 मई 2025 को होने वाली लोक अदालत के बारे में जागरूक करने के लिए लघु सचिवालय कोर्ट परिसर में उपभोक्ता फोरम में हेल्प डेस्क लगाया गया है। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं सीजेएम नीतिका भारद्वाज ने कहा कि जिसके तहत डीएलएसए के पीएलवीज द्वारा लोगों को पैंपलेट्स देकर 10 मई को होने वाली नेशनल लोक अदालत के बारे में जागरूक किया जा रहा है। सीजेएम एवं सचिव नीतिका भारद्वाज ने कहा इस हैल्प डेस्क का उद्देश्य है लोगों में जागरूकता लाना है ताकि अधिक से अधिक लोगों को इस विषय में जागरूक किया जा सके।

ओलावृष्टि से बर्बाद हुई फसलों का मुआवजा दें सरकार : शमशेर गोगी

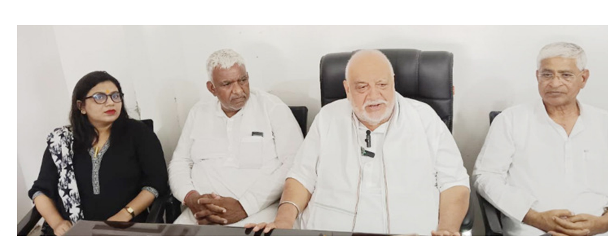

मूनक, 3 मई (जयभगवान) : तेज हवाओं के साथ हुई बारिश और ओलावृष्टि की वजह से किसान की फसल का बहुत नुकसान हुआ है। ओलावृष्टि और बरसात के कारण बर्बाद हुई फसल के नुकसान की भरपाई की जाए और किसानों को उचित मुआवजा दिया जाए। उपरोक्त विचार पूर्व विधायक शमशेर सिंह गोगी ने कांग्रेस कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहे। गोगी ने कहा कि वीरवार को बरसात के साथ ओलावृष्टि से सब्जी की खेती को काफी नुकसान पहुंचा है। बारिश का पानी खेतों में जमा होने व ओलावृष्टि से सब्जी की फसलें गलकर बर्बाद हो गई है। जिस कारण किसान परेशान है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी किसान व मजदूरों की समस्याओं को भलिभांति समझती है। कांग्रेस ही किसानों की सच्ची हितैषी है। भाजपा राज में हर वर्ग परेशान है। महंगाई चरम सीमा पर है तथा किसान व मजदूर परेशान है। इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन सुरजीत राणा, कांग्रेस नेत्री अधिवक्ता सोनिया बोहत, युवा अध्यक्ष जतिन बिंदल, पूर्व सरपंच सुदामा चोचड़ा, गौरवदीप सिंह सहित अन्य मौजूद रहे।

अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम आयोजित

विधायक विनोद भयाना ने की बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत

हांसी, 3 मई (मनमोहन शर्मा) : विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस (3 मई) के उपलक्ष्य में हांसी के संयुक्त कार्यालय परिसर स्थित मीडिया सेंटर में हांसी प्रेस क्लब द्वारा एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विधायक विनोद भयाना ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और मीडिया प्रतिनिधियों को संबोधित किया। विधायक विनोद भयाना ने पत्रकारों को अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और प्रेस की स्वतंत्रता को लोकतंत्र का मूल आधार बताया। उन्होंने कहा कि प्रेस लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और समाज को सही दिशा देने में पत्रकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पत्रकार निष्पक्षता और सच्चाई के साथ जनहित के मुद्दों को सामने लाकर लोकतंत्र को मजबूत करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि एक सशक्त और स्वतंत्र मीडिया ही जन-संवाद का वास्तविक माध्यम है, जो आम जनता की आवाज सरकार तक पहुंचाने का कार्य करता है। भयाना ने यह विश्वास दिलाया कि सरकार पत्रकारों की सुरक्षा और उनके हितों के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर हांसी प्रेस क्लब के सदस्य, विनोद सैनी पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि विधायक के निजी सचिव रवि अरोड़ा मौजूद रहे।

अंतर्सदनीय अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास एवं बोलने का कौशल बढ़ता है : नरेन्द्र शर्मा

लाडवा, 3 मई (रामगोपाल) : संजय गांधी मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल लाडवा के अंग्रेजी विभाग द्वारा राजबीर शर्मा एवं गतिविधि प्रभारी पूनम शर्मा के नेतृत्व में कक्षा 6वीं से 8वीं एवं 9वीं-10वीं के विद्यार्थियों के लिए 3 मई को अंतर्सदनीय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य नरेन्द्र शर्मा ने प्रतिभागी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों को बधाई देते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास एवं बोलने का कौशल बढ़ता है। साथ ही इन प्रतियोगिताओं का आयोजन नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार किया जाना आवश्यक है। उन्होंने प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी तथा प्रतियोगिताओं के आयोजन में समन्वय स्थापित करने वाले सभी लोगों के प्रयासों की सराहना की। प्रतियोगिता की शुरुआत सदन प्रभारियों द्वारा वक्ताओं का क्रम तय करने के लिए पर्ची निकालने से हुई। 6वीं से 8वीं के ग्रुप में इंदिरा हाउस से 7वीं सी की यशिका ने प्रथम स्थान, नेहरू हाउस से 6वीं ए की वेदिका ने द्वितीय स्थान, अशोका हाउस से 6वीं

सी की वृंदा ने तृतीय स्थान तथा टैगोर हाउस से 6वीं सी की तनिषा ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। 9वीं व 10वीं के ग्रुप में इंदिरा हाउस से 10वीं सी टॉप की जैस्मीन ने प्रथम स्थान, अशोका हाउस से 9वीं सी टॉप की श्रेया ने द्वितीय स्थान, नेहरू हाउस से 10वीं सी टॉप की दिशा ने तृतीय स्थान तथा टैगोर हाउस से 9वीं ए की प्रीत ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। 6वीं से 8वीं की प्रतियोगिता की जज अंग्रेजी की अध्यापिका गीता कंबोज व सलोनी रहीं, जबकि 9वीं से 10वीं की प्रतियोगिता के जज मोनिका जिंदल व कुलदीप राठी रहे। छवि, लक्षिता, हरमन, धृति, इशिता ने प्रतियोगिता का शानदार संचालन किया, जबकि एल्विन व आरव टाइम ऑफिसर के रूप में मौजूद रहे। गतिविधि प्रभारी श्रीमती पूनम शर्मा ने मंच से परिणामों की घोषणा की। रविंदर वीर गुप्ता, दीपक मेहता, भूपिंदर रावत, मोनिका जिंदल सहित सभी हाउस इंचार्ज भी मौजूद थे।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर के जन्मदिन के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर कल

नीलोखेड़ी, 3 मई (दर्शन शर्मा) : पूर्व मुख्यमंत्री एवं केंद्रीय शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर के 71वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। भाजपा नेता शिव नाथ कपूर ने उपरोक्त जानकारी देते हुए बताया कि यह शिविर नीलोखेड़ी के विधायक भगवान दास कबीरपंथी के संयोजन एवं इस विधानसभा के भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा लगाया जाएगा। शिव नाथ कपूर के अनुसार मनोहर लाल खट्टर के जन्मदिन 5 मई को पंजाबी भवन नीलोखेड़ी में सुबह 9 बजे यह रक्त दान शिविर आयोजित किया जाएगा। शिविर में निसिंग, निगदू, नीलोखेड़ी एवं तरावड़ी मंडल के कार्यकर्ता सम्मलित होंगे।

अवैध हथियार के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

कब्जे से एक अवैध देशी पिस्तौल 12 बोर बरामद की

करनाल, 3 मई (रविन्द्र मलिक) : जिला पुलिस सी.आई.ए.-2 की टीम द्वारा गुप्त सुचना के आधार पर साधु चौक गांव सदरपुर करनाल मे नाकाबंदी के दौरान एक आरोपी गोल्डी निवासी अराईपुरा करनाल को गिरफ्तार किया गया। पुलिस टीम द्वारा आरोपी के कब्जे से मौके पर एक अवैध देशी पिस्तौल 12 बोर बरामद की गई। इस संबंध में स.उप निरीक्षक दलीप सिंह ने बताया कि उक्त आरोपी के खिलाफ थाना घरौंडा में शस्त्र अधिनियम की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। गहता से पूछताछ मे पाया गया की आरोपी द्वारा यह हथियार गांव बड़ौली उत्तर प्रदेश से एक व्यक्ति से खरीदकर लाया था, का खुलासा किया गया है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में वर्णित रजस्वलाचार्या के भरपूर फायदे : डा. भारती वत्स

मूनक, 3 मई (जय भगवान) : आयुर्वेदिक चिकित्सा की डॉक्टर भारती वत्स ने मासिक धर्म के दौरान आहार के बारे में महिलाओं को जानकारी देते हुए बताया रजस्वलाचार्या का अर्थ है मासिक धर्म के दौरान किया जाने वाला आहार व विहार। मासिक धर्म प्रत्येक महिला के जीवन का महत्वपूर्ण समय है। जिस दौरान उनको विशेष आहार का सेवन करना चाहिए। जौ की रोटी, घी, शक्कर व दूध के साथ खाएँ तथा लाल चावल को घी व शक्कर या दूध से खाए। मासिक धर्म के 3-5 दिनों तक केवल मधुर फलों का ही सेवन करें जैसे सेब, अनार, पपीता, चीकू, सीताफल व मुनक्का आदि है। महिलाओं को इस समय मे अत्याधिक उछल-कूद वाले व्यायाम नहीं करने चाहिए तथा साफ सफाई का विशेष ध्यान रखे। इस दौरान सिर ना धोएं तथा नाखून ना काटे व शरीर की मालिश व उबटन आदि का उपयोग ना करें। ऐसा करने से मासिक धर्म संबंधी व्याधिया नहीं होती तथा महिलाएं स्वस्थ रहेगी।

शराब तस्करी मामले में बेल जंपर आरोपी पीओ पकड़ो स्टाफ द्वारा काबू

कैथल, 3 मई (प्रवेश बहादुर) : पी.ओ./बेलजंपरो की धरपकड़ के लिए एसपी आस्था मोदी के निर्देशानुसार चलाई जा रही मुहिम अंतर्गत पीओ स्टाफ इंचार्ज एसआई ओमप्रकाश की अगुवाई में एसआई सतीश कुमार की टीम द्वारा आरोपी गांव सौथा निवासी राजेश को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि चौकी रामथली पुलिस द्वारा 20 जुलाई को चक्कू लदाना रामथली मोड़ से एक गाड़ी में शराब तस्करी कर रहे आरोपी सौंथा निवासी अमनदीप, विजय व राजेश कुमार को काबू किया गया था। जिनके कब्जे से 228 बोतल देसी शराब बरामद हुई थी। आरोपी उक्त मामले में जमानत लेने उपरांत न्यायालय में दोबारा हाजिर नहीं हुआ थे और भूमिगत हो गए थे। न्यायालय ने आदेशों की अवहेलना करने के आरोप में आरोपियों को 28 फरवरी 2025 को पीओ घोषित कर दिया था। पुलिस द्वारा नियमानुसार आगामी कार्रवाई की जा रही है।

खरीद एजेंसियों ने खरीदा 5 लाख 55 हजार 837 एमटी गेहूं : नेहा सिंह

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : डी.सी नेहा सिंह ने कहा कि कुरुक्षेत्र के विभिन्न खरीद केन्द्रों और मंडियों में विभिन्न एजेंसियों द्वारा 5 लाख 55 हजार 837 मीट्रिक टन गेहूं खरीदा जा चुका है। इन खरीद केन्द्रों से 92 प्रतिशत लिफ्टिंग का कार्य पूरा किया गया है। डी.सी नेहा सिंह ने बातचीत करते हुए कहा कि गेहूं के सीजन में खाद्य आपूर्ति एजेंसी द्वारा 3 लाख 23 हजार 735 मीट्रिक टन गेहूं खरीदा है। इसके अलावा हैफेड ने 201107 मीट्रिक टन, हरियाणा वेयर कारपोरेशन द्वारा 8 हजार 987 एमटी, प्राइवेट एजेंसियों द्वारा 22008 एमटी गेहूं खरीदा है। उन्होंने कहा कि खाद्य आपूर्ति द्वारा 89 प्रतिशत, हैफेड द्वारा 96 प्रतिशत, हरियाणा वेयर कारपोरेशन द्वारा 100 प्रतिशत और निजी एजेंसियों द्वारा 98 प्रतिशत लिफ्टिंग का कार्य पूरा कर लिया है। उन्होंने कहा कि इस जिले में अब तक 5 लाख 55 हजार 837 एमटी गेहूं खरीदा है, इसमें से 18 हजार 570 एमटी एफसीआई को डिलीवर किया गया है, 5 लाख 12 हजार 786 एमटी गेहूं की लिफ्टिंग की गई है। अभी भी मंडियों में 43051 एमटी गेहूं रखा हुआ है। उन्होंने एजेंसियों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि गेहूं की लिफ्टिंग का कार्य जल्द से जल्द पूरा किया जाए।

रिटायर्ड कर्मचारी हरियाणा संघ द्वारा मासिक मीटिंग का आयोजन

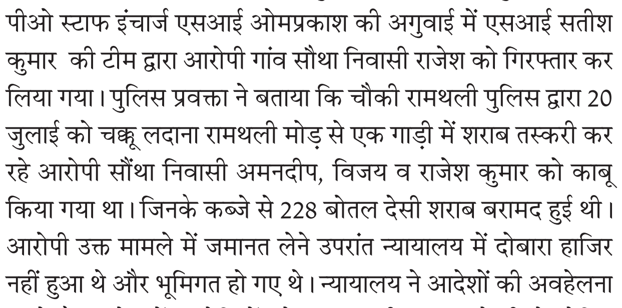

मूनक, 3 मई (जय भगवान) : मूनक ब्राह्मण धर्मशाला में रिटायर्ड कर्मचारी संघ हरियाणा के कर्मचारियों ने मीटिंग का आयोजन किया। यह मीटिंग दयानंद मूनक खंड के उप प्रधान की अध्यक्षता में ली गई। मीटिंग में आज के हालात पर चर्चा करते हुए संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया। इसमें उप महासचिव कृष्ण शर्मा ने बताया कि केंद्र सरकार ने पेंशन विधेयक पास करके सभी पेंशन भोगियों को आठवीं वेतन आयोग से वंचित करने का निर्णय लिया है। उसके विरोध में 20 मई को राष्ट्रीय सत्र पर होने वाली हड़ताल में रिटायर कर्मचारी संघ हरियाणा भी बढ़-चढ़कर भाग लेगा। इसके लिए प्रत्येक खंड स्तर पर मीटिंगों का आयोजन करके लोगों को उनके हक के प्रति जागरूक किया जाएगा। इस मीटिंग के दौरान बलराज सिंह, महेंद्र सिंह मान, घरौंडा ब्लॉक के प्रधान योगेंद्र शर्मा, डॉ रणवीर सिंह, सत कुमार त्यागी, शिवचरण शर्मा, प्रेमचंद, राधेश्याम, ईश्वर, विशन सिंह, रामचंद्र संधू, सुल्तान संधू, माई चंद शर्मा, पालेराम, लखीचंद, मुरली राम, भारत भूषण, हवा सिंह, बलदेव सिंह, सुभाष मान, ओम प्रकाश ने भाग लिया।

आइंस्टीन इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने किया शुगर मिल का भ्रमण

शाहाबाद मारकंडा, 3 मई (रूबी) : आइंस्टीन इंटरनेशनल स्कूल के कक्षा सातवीं और आठवीं के विद्यार्थियों ने आज शाहाबाद स्थित शुगर मिल का भ्रमण किया। इस दौरान बच्चों ने जाना कि किस प्रकार गन्ने से चीनी का उत्पादन किया जाता है। इस अवसर पर स्कूल के अध्यक्ष देवेंद्र सिंगला ने कहा कि शुगर मिल का भ्रमण बच्चों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए एक प्रयास है ,जिससे बच्चे साधारण सी दिखने वाली चीनी की उत्पादन प्रक्रिया व शुगर मिल की कार्यप्रणाली को जान सके। इससे बच्चे न केवल तकनीकी जानकारी अपितु भारत की अर्थव्यवस्था के बारे में भी ज्ञान बढ़ा सकते हैं। बच्चों को बताया गया कि किस प्रकार गन्ने से चीनी उत्पादन में भारत देश अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी बना है। शुगर मिल में मौजूद चीफ इंजीनियर सतबीर सैनी व लैब इंचार्ज जितेंद्र कुमार ने बच्चों को चीनी बनाने की प्रक्रिया व तमाम मशीनों के साथ-साथ शुगर मिल की कार्य प्रणाली से अवगत करवाया। बच्चों ने जाना कि शुगर मिल में विभिन्न चैंबरों में अलग-अलग प्रक्रियाओं द्वारा चीनी उत्पादन किया जाता है। जिसमें पहले चरण में गन्नों को छांटकर क्रशिंग चैंबर

में डाला जाता है। इसके बाद प्रोसेसिंग चैंबर में में गन्नों को ब्वॉयलर्स में उबाला जाता है। तीसरे चरण में ड्रायर चैंबर में चीनी के कणों का निर्माण होता है और उनके आकार के आधार पर उन्हें बांटा जाता है। अंत में पैकेजिंग चैंबर में चीनी को कट्टो में भरकर वेयरहाउस में भेजा जाता है। उन्होंने बताया कि शाहाबाद शुगर मिल में हर साल कई टन चीनी का उत्पादन किया जाता है। बच्चों ने भी उत्सुकतापूर्वक कई प्रश्न पूछकर अपनी शंकाएं दूर की और ज्ञानार्जन किया। इस अवसर पर स्कूल की डायरेक्टर दीपाली सिंघल ने चीफ इंजीनियर सतबीर सैनी व लैब इंचार्ज जितेंद्र कुमार बैन्स को बच्चों को आवश्यक जानकारी देने व मार्गदर्शन करने के लिए आभार प्रकट किया। साथ ही उन्होंने कहा कि इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण बच्चों में विषयों के प्रति उत्सुकता बढ़ाते हैं व बच्चे प्रैक्टिकली चीजों को सिखते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों ने शुगर मिल में चीनी उत्पादन की प्रक्रिया को गहनता से जाना। साथ ही बच्चों ने चीनी उत्पादन को भारत की अर्थव्यवस्था के साथ जोड़कर भी आवश्यक तथ्यों को जाना। इस दौरान स्कूल की वाइस प्रिंसिपल सन्ध्या वर्मा ने कहा कि घर -घर में प्रयोग होने वाली चीनी को बनते हुए देखकर बच्चे बहुत उत्साहित थे। अधिकांश बच्चे खेतों में गन्ने की बुवाई से तो परिचित थे , किंतु चीनी उत्पादन व शुगर मिल की कार्यप्रणाली को देखना उनके लिए एक नया अनुभव था। बच्चे यह जानकर बहुत अचंभित हुए की शुगर मिल में न केवल चीनी का उत्पादन होता है किंतु साथ ही बिजली उत्पादन भी किया जाता है। जिसका प्रयोग शुगर मिल के संचालन में किया जाता है। उन्होंने बताया कि आगे भी स्कूल द्वारा इसी प्रकार कई शैक्षणिक भ्रमणों व यात्राओं का आयोजन किया जाता रहेगा।

अब 14 जून तक निशुल्क अपडेट करवाएं आधार कार्ड : उत्तम सिंह

करनाल, 3 मई (परमजीत कौर) : डी.सी उत्तम सिंह ने बताया कि सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में आधार कार्ड सबसे अहम दस्तावेज है और 10 साल पुराने आधार कार्ड को अपडेट करवाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि यूआईडीएआई द्वारा आधार कार्ड को अपडेट करवाने की अंतिम तिथि 14 जून 2025 कर दी गई है। अब 14 जून 2025 तक आधार कार्ड को निशुल्क अपडेट करवाया जा सकता है। नागरिक स्वयं भी वेबसाइट पर जाकर अपना आधार कार्ड अपडेट कर सकते हैं। इसके अलावा किसी भी सीएससी व आधार सेंटर पर जाकर अपना आधार कार्ड अपडेट करवाया जा सकता है। डी.सी ने बताया कि आधार कार्ड मुफ्त में अपडेट करने की आखिरी तारीख 14 जून 2025 तक बढ़ा दी गई है। आधार की जानकारी मुफ्त में अपडेट करने की सुविधा सिर्फ यूआईडीआई के ऑनलाइन पोर्टल पर ही उपलब्ध है। अपनी पहचान और पते के दस्तावेज पर अपने आधार नंबर से लॉग इन करके अपडेट कर सकते हैं। ऑनलाइन अपडेट की सुविधा सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए है, जिनका मोबाइल नंबर उनके आधार से लिंक है। डी.सी ने आमजन से आह्वान करते हुए कहा कि जिन व्यक्तियों ने पिछले 10 सालों में आधार कार्ड को अपडेट नहीं करवाया है, वे अपने आधार कार्ड में समय रहते अपडेशन जरूर करवा लें ताकि उन्हें भविष्य में सरकारी योजना का लाभ लेने व अन्य किसी प्रयोजन में परेशानी व समस्या का सामना न करना पड़े। आधार कार्ड को अपडेट करने के लिए जो दस्तावेज इस्तेमाल करते हैं उस पर आपका नाम, जन्मतिथि सही होनी चाहिए। आधार कार्ड अपडेट कराने के लिए रिहायशी प्रमाण पत्र या अन्य निर्धारित पहचान पत्र ऑनलाइन अपलोड करना होगा। आधार कार्ड धारक द्वारा ऑनलाइन अपडेट करने पर किसी प्रकार के शुल्क की अदायगी नहीं करनी होगी। उन्होंने बताया कि आधार कार्ड धारक माई आधार पोर्टल से आधार ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं, वहीं माईआधार एप में जहां पहचान पत्र के प्रमाण के रूप में स्वीकार्य दस्तावेजों की सूची भी है और पते का प्रमाण भी उपलब्ध है। उन्होंने जिला वासियों से इस निशुल्क सेवा का लाभ उठाते हुए आधार कार्ड अपडेट कराने का आह्वान किया है, साथ ही ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठाने के लिए अपने मोबाइल नंबर को आधार में अपडेट रखने की सलाह भी दी है।

आधार सेवाओं का लाभ उठाने के लिए, आधार में मोबाइल नंबर और ईमेल देना जरूरी : डी.सी उत्तम सिंह ने बताया कि आधार सेवाओं का लाभ उठाने के लिए आधार में मोबाइल नंबर और ईमेल देना जरूरी है। अगर किसी नागरिक ने अभी तक अपने आधार में मोबाइल नंबर और ईमेल नहीं जोड़ा है, या फिर किसी नागरिक के मौजूदा आधार में मोबाइल नंबर या ईमेल बदल गया है, तो वे इसे नजदीकी अक्षय आधार केंद्र के जरिए अपडेट कर सकते हैं।

नवजात शिशुओं का भी बनवाएं आधार कार्ड, बच्चों का बायोमेट्रिक पांच साल और 15 साल की उम्र में जरूर करवाएं अपडेट : डी.सी उत्तम सिंह ने बताया कि नवजात शिशुओं का भी आधार कार्ड बनवाना चाहिए। पांच साल से कम उम्र के बच्चों के आधार के लिए बायोमेट्रिक जानकारी नहीं ली जाती। बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र और माता-पिता में से किसी एक का आधार, नामांकन के लिए काफी है। बच्चों का बायोमेट्रिक पांच साल और 15 साल की उम्र में जरूर अपडेट करवाना चाहिए। पांच साल की उम्र में जरूरी बायोमेट्रिक अपडेट सात साल की उम्र से पहले और 15 साल की उम्र में जरूरी बायोमेट्रिक अपडेट 17 साल की उम्र से पहले करवाने पर ही मुफ्त अपडेट की सुविधा मिलेगी। **ऐसे अपडेट करें आधार कार्ड :** आधार कार्ड अपडेट करने के लिए सबसे पहले ऑफिशियल वेबसाइट पर जाएं। इसके बाद अपडेट आधार के विकल्प पर क्लिक करें। अब आधार नंबर डालकर ओटीपी के जरिए लॉगिन करें। अब आपको आधार कार्ड अपडेट करने के विकल्प पर क्लिक करना होगा। एड्रेस के विकल्प का चुनाव करें। इसके बाद प्रोसीड टू अपडेट आधार पर क्लिक करना होगा। अब अपडेट एड्रेस के संबंधित दस्तावेज अपलोड करें। अपडेट रिक्वेस्ट एक्सेप्ट होने के बाद 14 डिजिट का यूआरएन नंबर जनरेट होगा। इस नंबर को सेव कर लें। कुछ दिनों के बाद आपका आधार अपडेट हो जाएगा। नागरिक रिक्वेस्ट नंबर के जरिए अपना आधार का स्टेटस चेक कर सकते हैं।

सिडनी में हुआ दूसरे अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का भव्य आयोजन

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार) : सिडनी में आज दूसरे अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। परम पूज्य स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज के आशीर्वाद, निर्देशन और मार्गदर्शन में आयोजित इस सम्मेलन का पहला दिन जीवन में गीता - ज्ञान से साधना की ओर विषय पर केंद्रित रहा। इस अवसर पर आईटी, मेडिकल, रोबोटिक्स इंजीनियरिंग, मरीन इंजीनियरिंग और शिक्षाजगत से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के वक्ताओं ने अपने अनुभव साझा किए कि किस प्रकार गीता ने उन्हें जीवन में प्रेरणा दी और उनके कार्यक्षेत्र में सफलता के शिखर तक पहुँचाया। महेंद्रगढ़ स्थित सेंट्रल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर दिनेश चहल, जो अंतरराष्ट्रीय मामलों के निदेशक हैं, ने युवाओं का रूपांतरण: गीता से जीवन के सबक विषय पर प्रभावशाली संवाद किया, जो अत्यंत प्रेरक रहा। स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि गीता केवल सुनने, पढ़ने या शास्त्र ज्ञान के लिए नहीं है। यह जीवन जीने की कला है। इसमें हर समस्या का समाधान है - चाहे वह चिंता हो, अवसाद हो या निर्णय लेने की दुविधा। गीता युद्ध भूमि में कही गई थी, और हमारा जीवन भी संघर्षों से भरा रणक्षेत्र है - इसलिए गीता आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उस समय थी। कार्यक्रम का सफल संयोजन सेवा सिंह ने किया, जो एसोसिएशन ऑफ हरियाणविज़ इन ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। उन्होंने 65 से अधिक सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं को जोड़कर इस महोत्सव को एक संगठित और प्रभावशाली रूप दिया। अपने संदेश में उन्होंने कहा, जब संस्थाएं संगठित होती हैं तो किसी भी बड़े आयोजन

को सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सकता है। महोत्सव का दूसरा दिन, 4 मई 2025, को मनाया जाएगा जिसमें सुबह गीता यज्ञ और शाम को पैरामेटा नदी तट पर भव्य गीता आरती होगी, जो बनारस और हरिद्वार की गंगा आरती की अनुभूति कराएगी। इस दिन 3 हजार से अधिक लोगों के सम्मिलित होने की संभावना है। साथ ही गीता जयंती के उपलक्ष्य में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। हर-हर गीता, घर-घर गीता, हर जुबान पर गीता। आइए, हम सभी प्रेरणा लें और संकल्प करें कि हम गीता के संदेश को अपने जीवन में उतारेंगे। कुरुक्षेत्र 48 कोस तीर्थ निगरानी कमेटी के चेयरमैन मदन मोहन छाबड़ा ने दूरभाष पर बताया कि सिडनी में पहले भी अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन किया जा चुका है। अब दोबारा इस महोत्सव का आयोजन सिडनी की धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से किया जा रहा है। इस महोत्सव का विधिवत रूप से आगाज हो चुका है।

दुर्गा शक्ति टीम ने स्कूल में जाकर छात्राओं को सुरक्षा के मध्यनजर किया जागरूक

नारायणगढ़, 3 मई (देवेन्द्र शर्मा) : पुलिस विभाग की दुर्गा शक्ति वूमैन नारायणगढ़ एवं सेफ सीटी टीम टू नारायणगढ़ (अम्बाला) द्वारा पी. एम. श्री राजकीय कन्या सीनियर सेकेंडरी स्कूल शहजादपुर माजरा में जाकर छात्राओं को सुरक्षा के मध्यनजर जागरूक किया गया। हैड कांस्टेबल एवं इंचार्ज दुर्गा शक्ति वूमैन नारायणगढ़ एवं सेफ सीटी टीम टू नारायणगढ अंजू रानी ने बताया कि डायल 112 और दुर्गा शक्ति एप तथा महिला सुरक्षा के मध्यनजर ट्रीप मोनिटरिंग/यात्रा निगरानी आई टी एक्ट व महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों को रोकने के लिए जागरूक किया गया। इस मौके पर स्टाफ को दुर्गा शक्ति एप को उनके मोबाइल में डाउन लोड करवाकर उसकी कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी गई। इस टीम का नेतृत्व कर रही हैड कांस्टेबल अंजू रानी ने हेल्पलाइन नम्बर 112, दुर्गा शक्ति एप, पॉक्सों एक्ट, गुड टच/बैड टच, साइबर क्राइम एवं महिला सुरक्षा, ट्रिप मॉनिटरिंग और नये आपराधिक कानूनों तथा सोशल मीडिया के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि पॉक्सो एक्ट 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों के साथ किसी भी प्रकार से सैक्सुअल शोषण करने वाले व्यक्ति पर इस एक्ट के तहत कार्यवाही की जाती है। इस कानून

के माध्यम से नाबालिग बच्चों के साथ होने वाले यौन उत्पीडन, यौन शोषण, पोर्नोग्राफी और छेड़छाड़ के मामलों को रोकने के लिए किया गया है। इस कानून के द्वारा अलग-अलग अपराधों के लिए अलग सजा का प्रावधान है। उन्होने गुड टच एवं बैड टच के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि कौन सा स्पर्श ठीक है और कौन सा नहीं, यह बताया, अगर कोई बैड टच करता है तो मदद मांगे, किसी से डरने की जरूरत नहीं है। इस बारे में अपने किसी भरोसे मंद व्यक्ति या माता-पिता को बताये। उन्होने 112 हेल्पलाइन नंबर के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह सेवा 24×7 उपलब्ध है और किसी भी प्रकार की आपात स्थिति में पुलिस, एंबुलेंस या फायर ब्रिगेड की सहायता तुरंत प्राप्त की जा सकती है। हेल्पलाइन नम्बर 1098 के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह एक राष्ट्रीय आपातकालीन टोल-फ्री फोन सेवा है, यह सेवा 24 घण्टे उपलब्ध रहती है। इस हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करके देखभाल और सुरक्षा की जरूरत वाले बच्चों को मदद मिलती है। हेल्पलाइन 1091 महिला हेल्पलाइन नम्बर है यह नंबर भी 24 घण्टे काम करता है। इस नम्बर पर कॉल करके महिलाएं किसी अपराध की रिपोर्ट कर सकती है या परामर्श ले सकती है। हैड कांस्टेबल कुलदीप सिंह ने हेल्पलाइन 1930 के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह हेल्पलाइन नम्बर साइबर अपराधों की शिकायत के लिए राष्ट्रीय हेल्पलाइन नम्बर है। साइबर वितीय धोखाधडी या ऑनलाइन धोखाधड़ी के मामलों में तुरंत शिकायत करने के लिए इस नंबर पर कॉल किया जा सकता है। यह हेल्पलाइन भी 24 घण्टे उपलब्ध रहती है। हरियाणा पुलिस द्वारा आयोजित इस जागरूकता अभियान का उद्देश्य महिलाओं और छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाना और सुरक्षा के प्रति जागरूक करना है। इस अवसर पर सलमा व स्कूल स्टाफ भी मौजूद रहा।

ओमप्रकाश मेहरा ने न केवल शिक्षा प्रदान की, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में भी अहम भूमिका निभाई : ज्ञान चंद

बाबैन, 3 मई (राजेश कुमार) : हिंदी प्राध्यापक ओमप्रकाश मेहरा शिक्षा विभाग में 30 वर्षों की लम्बी सेवा के उपरांत रा.व.मा.वि. बीड़ कालवा से सेवानिवृत्त हो गए है। स्कूल स्टाफ, परिजनों और रिश्तेदारों, बच्चों ने स्कूल में कार्यक्रम का आयोजन कर उन्हें सम्मान के साथ भावभीनी विदाई दी। बीड कालवा में हिंदी प्राध्यापक पद पर कार्यरत ओमप्रकाश मेहरा 30 वर्षों की लंबी और सराहनीय सेवा के उपरांत सेवानिवृत्त हुए। इस अवसर पर विद्यालय प्रांगण में एक भव्य एवं भावनात्मक विदाई समारोह का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय स्टाफ, छात्र-छात्राएं, परिजन, मित्र और रिश्तेदारों ने भाग लेकर उन्हें सम्मान पूर्वक विदाई दी। समारोह की शुरुआत ओमप्रकाश मेहरा के स्वागत गीत से हुई, जिसे विद्यालय की छात्राओं ने प्रस्तुत किया। इसके बाद प्रधानाचार्य ज्ञान चंद सैनी ने मंच से उनके शिक्षा विभाग में योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि ओमप्रकाश मेहरा ने विद्यालय में न केवल शिक्षा प्रदान की, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में भी अहम भूमिका निभाई। उनकी

हिंदी प्राध्यापक ओमप्रकाश मेहरा शिक्षा विभाग में 30 वर्षों की लम्बी सेवा के उपरांत सेवानिवृत्त

कार्यशैली अनुकरणीय रही है और उनका अनुशासन सभी के लिए प्रेरणास्पद है। विद्यालय के पूर्व मुख्याध्यापक अश्वनी शर्मा ने ओमप्रकाश मेहरा के साथ बिताए अपने 30 साल के अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि ओमप्रकाश मेहरा हमेशा ही छात्रों को सृजनात्मक ढंग से पढ़ाते थे। उनके पढ़ाने का तरीका बच्चों के मन को छूता था और वे शब्दों की दुनिया के मर्मज्ञ थे। इस अवसर पर स्कूल स्टाफ के अलावा परिजनों, रिश्तेदारों व स्कूल के बच्चों ने ओमप्रकाश मेहरा को फूल-मालाओं, गिफ्ट, शॉल और स्मृति चिह्न भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। उनके पुत्र योगेश मेहरा ने उनके साथ के पारिवारिक अनुभव साझा करते हुए बताया कि वे एक आदर्श पिता, पति और मार्गदर्शक हैं। इस अवसर पर अपने विदाई भाषण में ओमप्रकाश मेहरा भावुक होते हुए बोले शिक्षा मेरे लिए सिर्फ एक पेशा नहीं, बल्कि साधना रही है। मैं अपने विद्यार्थियों के बीच रहकर ही हमेशा ऊर्जा से भरा रहा। सेवानिवृत्ति मेरे लिए एक पड़ाव है, अंत नहीं। मैं आने वाले समय में भी समाज और विद्यार्थियों की सेवा करता रहूंगा। उन्होंने विद्यालय परिवार का आभार व्यक्त करते हुए सभी सहयोगियों, छात्रों और अभिभावकों को धन्यवाद दिया। उन्होंने स्कूल के लिए 5100 रुपये की राशि देने के अलावा स्कूल के बच्चों को मिठाई बांटी व स्कूल के सभी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को गिफ्ट भेंट किए।

नवाजुद्दीन की अदाकारी में ईमानदारी एवं स्थिरता

बॉलीवुड इंडस्ट्री के सबसे बहुमुखी और प्रभावशाली अभिनेता नवाजुद्दीन सिद्दीकी चाहे वह किसी भी तरह की भूमिका निभा रहे हों, उन्होंने हमेशा अपनी बेहतरीन अदाकारी से दर्शकों के दिलों पर राज किया है। उनका हर किरदार सहजता से दिल को छूने वाला होता है और वह हर फिल्म में खुद को नए रूप में पेश करते हैं। नवाजुद्दीन का अभिनय इतना वास्तविक होता है कि दर्शक उन्हें स्क्रीन पर अभिनय नहीं, बल्कि वास्तविक जीवन में जीने की तरह महसूस करते हैं। उनकी अदाकारी में ईमानदारी और स्थिरता है, जो उन्हें अन्य अभिनेताओं से अलग बनाती है। नवाजुद्दीन ने अपनी कला के जरिए से न केवल बॉलीवुड में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी एक अलग पहचान बनाई है। हाल ही में ट्रेड एक्सपर्ट ने नवाजुद्दीन सिद्दीकी की तारीफ करते हुए कहा कि उनके अभिनय में कुछ खास है। उन्होंने नवाजुद्दीन की तुलना दिवंगत अभिनेता इरफान खान से करते हुए कहा कि नवाजुद्दीन में एक ऐसा गुण है, जो बहुत कम अभिनेताओं में होता है। उनका अभिनय रियल होता है दिखावा नहीं होता, बल्कि वह किरदार में पूरी तरह से खो जाते हैं। उनकी हर परफॉर्मेंस में ऐसा महसूस होता है कि वह जी रहे हैं, अभिनय नहीं कर रहे हैं। कभी-कभी, यह मुझे इरफान खान की याद दिलाता है, लेकिन नकल में नहीं, बल्कि सार में वह शांत ईमानदारी और कहानी के प्रति सम्मान, जो इरफान की खासियत थी। नवाजुद्दीन की अभिनय शैली की गहरी समझ को दर्शाता है। नवाजुद्दीन के अभिनय में एक सहजता और स्थिरता है, जो उन्हें किसी भी भूमिका में पूरी तरह से सजीव और वास्तविक बना देती है। उनका अभिनय कभी भी दर्शकों को कला का एहसास नहीं कराता, बल्कि ऐसा लगता है जैसे वह खुद किरदार का हिस्सा हैं। इस बयान का समर्थन करते हुए व्यापार विश्लेषक ने भी कहा कि नवाजुद्दीन सिद्दीकी की अभिनय क्षमता ने उन्हें भारतीय फिल्म इंडस्ट्री में एक अनमोल स्थान दिलाया है। उनकी कला न केवल उनके अभिनय कौशल को दर्शाती है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि वे फिल्म इंडस्ट्री में अपने अद्वितीय योगदान से सदैव याद किए जाएंगे।

मौनी रॉय ने साझा किया डरावना अनुभव– बॉलीवुड अभिनेत्री मौनी रॉय इन दिनों अपनी आने वाली हॉरर-कॉमेडी फिल्म भूतनी के प्रमोशन में व्यस्त हैं, जिसमें उनके साथ सनी कौशल, पलक तिवारी और संजय दत्त भी नजर आएंगे। हाल ही में अपने एक साक्षात्कार में मौनी ने अपने साथ हुई एक बेहद डरावनी घटना का जिक्र किया, जिसने उन्हें भीतर तक हिला कर रख दिया था। मौनी ने बताया कि एक बार वह एक छोटे शहर में थीं, जहां उनके होटल के कमरे में रात के समय एक अनजान व्यक्ति जबरदस्ती घुसने की कोशिश कर रहा था। मौनी ने इस घटना को याद करते हुए बताया कि किसी तरह उस शख्स ने उनके कमरे की चाबी चुरा ली थी और दरवाजा खोलने की कोशिश कर रहा था। इस समय मौनी अकेली नहीं थीं, उनकी मैनेजर भी उनके साथ मौजूद थीं। जब दोनों ने देखा कि कोई व्यक्ति अंदर घुसने की कोशिश कर रहा है, तो उन्होंने जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। इससे वह व्यक्ति भाग गया और तुरंत होटल रिसेप्शन को बुलाया गया। उन्होंने आगे बताया कि रिसेप्शनिस्ट ने इस स्थिति को बहुत ही कैजुअल ढंग से लिया और कहा कि शायद वह कोई हाउसकीपिंग स्टाफ रहा होगा। इस पर मौनी ने सवाल उठाया कि भला कौन सा हाउसकीपिंग स्टाफ बिना नॉक किए, बिना बेल बजाए, रात के 12:30 बजे दरवाजा खोलने की कोशिश करता है। मौनी ने इस अनुभव को बेहद डरावना बताया और कहा कि यदि उनकी मैनेजर साथ नहीं होती, तो हालात और खराब हो सकते थे।

इसके साथ ही मौनी ने ट्रोलिंग को लेकर भी बात की, जहां हाल ही में उनके लुक्स को लेकर कई लोगों ने सोशल मीडिया पर उन्हें निशाना बनाया था और यह तक कह डाला कि उन्होंने प्लास्टिक सर्जरी करवाई है। इस पर मौनी ने बेबाकी से जवाब दिया कि वह इस तरह की ट्रोलिंग को देखती ही नहीं हैं।

25 साल बाद सूर्यवंशम के मासूम बेटे की बदल गई पहचान

1999 में रिलीज हुई अमिताभ बच्चन की फिल्म सूर्यवंशम भले ही बॉक्स ऑफिस पर असफल रही हो, लेकिन इसका टीवी पर सफर बेहद शानदार रहा है। यह फिल्म टेलीविजन पर सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली फिल्मों में शुमार है और इसके कई संवाद और किरदार आज भी सोशल मीडिया पर मीम्स के जरिए जीवित हैं। खासकर हीरा ठाकुर और उनके बेटे के रिश्ते को दिखाने वाले दृश्य अब भी दर्शकों के दिलों में बसे हुए हैं। फिल्म में अमिताभ बच्चन ने डबल रोल निभाया था और उनके बेटे का किरदार निभाने वाले चाइल्ड आर्टिस्ट आनंद वर्धन ने भी अपनी मासूम अदायगी से खास पहचान बनाई थी। आज वही आनंद वर्धन 33 साल के हो चुके हैं और उन्हें पहचान पाना काफी मुश्किल हो गया है। आनंद वर्धन ने उस समय अपने फिल्मी कैरियर की शुरुआत किया था जब वे सिर्फ चार साल के थे और सूर्यवंशम के बाद उन्हें चाइल्ड आर्टिस्ट के रुप में पहचान मिली थी । वे तेलुगू फिल्म इंडस्ट्री में वह एक जाना-पहचाना नाम थे। सूर्यवंशम में उन्होंने छोटे ठाकुर भानु प्रताप की भूमिका निभाई थी। फिल्म का एक बेहद लोकप्रिय डायलॉग 'संस्कार उम्र से बड़े हैं' उन्हीं पर फिल्माया गया था, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। इस सीन में वे अपने दादा जी ठाकुर भानु प्रताप सिंह को स्याही गिरने पर माफ कर देते हैं, और यही क्षण फिल्म की सबसे भावनात्मक झलकियों में से एक बन गया।

इस फिल्म का निर्देशन ईवीवी सत्यनारायण ने किया था और यह तमिल फिल्म सूर्या वामसम की हिंदी रीमेक थी।

पाकिस्तानी कलाकारों के कारण प्रभास की फौजी विवादों में घिरी

पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पूरे देश में पाकिस्तान के कलाकारों को लेकर विरोध बढ़ गया है। इस घटना के बाद पाकिस्तानी कलाकारों की कास्टिंग पर सवाल उठाए जा रहे हैं। अब इसी बीच प्रभास की आगामी फिल्म फौजी भी विवादों में घिर गई है। फौजी एक पीरियड ड्रामा फिल्म है, जिसमें प्रभास सैनिक की भूमिका में नजर आएंगे। इस फिल्म का निर्देशन हनु राघवपुडी कर रहे हैं और फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है। हालांकि, फिल्म के लिए कास्ट की गई पाकिस्तानी एक्ट्रेस इमान इस्माइल की कास्टिंग पर सोशल मीडिया पर तीखा विरोध हो रहा है। इमान इस्माइल पाकिस्तान मिलिट्री अफसर की बेटी का किरदार निभा रही हैं। सोशल मीडिया यूजर्स ने फिल्म के मेकर्स से अपील की है कि वे इमान इस्माइल को फिल्म से बाहर करें। कई लोगों ने पाकिस्तानी कलाकारों के भारतीय सिनेमा में काम करने का विरोध किया है।

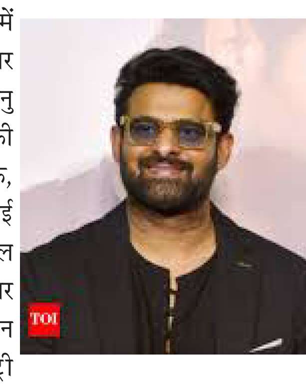

विहान समत ने किया बड़ा खुलासा–नेट फ्लैक्स के ट्रेलर लॉन्च इवेंट में हमेशा कुछ खास होता है, और दा रॉयल्स के ट्रेलर लॉन्च ने भी दर्शकों को ढेर सारे ड्रामा और खुलासों के साथ सरप्राइज दिया। शो में डिग्विजय का किरदार निभा रहे विहान समत, जो रॉयल परिवार के मिडल चाइल्ड हैं और अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, ने बताया कि उन्होंने अपने किरदार को जीवन्त बनाने के लिए कितनी मेहनत की है। विहान ने इवेंट के दौरान राजसी अंदाज में बताया कि उन्होंने सिर्फ एक्टिंग ही नहीं, बल्कि घुड़सवारी की भी ट्रेनिंग ली। लेकिन सबसे दिलचस्प बात यह थी कि उनका और उनके घोड़े चार्ली का रिश्ता। विहान ने मजाक करते हुए कहा, मैंने पोलो खेलना बहुत एंजॉय किया, और मेरा घोड़ा चार्ली उन ढाई महीनों का सबसे अच्छा दोस्त बन गया। उन महीनों में, मैंने उसे अपने परिवार से भी ज्यादा देखा! विहान ने डिग्विजय का किरदार निभाने के लिए न सिर्फ अपनी एक्टिंग को निखारा, बल्कि पसीने और घुड़सवारी के साथ अपने ताज को भी कमाया।

वरुण ने फैंस के साथ मनाया खास दिन–बॉलीवुड अभिनेता वरुण धवन ने हाल ही में अपना 38वां जन्मदिन मनाया। एक्टर ने इस खास दिन को अपने फैंस के साथ मनाया और सोशल मीडिया पर इसका वीडियो साझा किया। वीडियो में वरुण फैंस के बीच जाकर उनसे बात करते और डांस करते हुए नजर आते हैं। वह वीडियो कॉल के जरिए भी अपने फैंस से जुड़ते हैं और उनके साथ केक काटकर सेलिब्रेशन करते हैं। वीडियो के अंत में, वह फैंस को ऑटोग्राफ देते और उनके साथ सेल्फी क्लिक करते हुए दिखते हैं। वरुण ने वीडियो को इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुए लिखा, मुझे अपना जन्मदिन उन लोगों के साथ मनाने का मौका मिला जो मेरे लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं और यही वजह है कि मैं यहां हूं।

सलमान का एक अलग ही स्टारडम है-सान्वी

हाल ही में साउथ के सुपरस्टार किच्चा सुदीप की बेटी सान्वी सुदीप ने बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान के साथ बिताए गए यादगार पलों को साझा किया। ताजा इंटरव्यू में सान्वी ने बताया कि उन्होंने पहली बार सलमान खान से 'दबंग 3' की शूटिंग के दौरान मुलाकात की थी। इस दौरान उन्हें महसूस हुआ कि सलमान का एक अलग ही चार्म और स्टारडम है। वह पूरी तरह से हैरान थीं और यह उनके लिए किसी सपने के सच होने जैसा था। सान्वी ने बताया कि जब वह 14 साल की थीं, तब उन्होंने सलमान के लिए एक खास ब्रेसलेट बनवाया था, जिसे उन्होंने 'बिग बॉस' के एक एपिसोड में पहना भी था। जब वह 'दबंग 3' के सेट पर सलमान से मिलीं, तो उन्होंने तुरंत उन्हें पहचान लिया और ब्रेसलेट की बात भी याद थी। इसके बाद वह अपने पिता किच्चा सुदीप के साथ सलमान के गैलेक्सी अपार्टमेंट में डिनर के लिए गईं। वहां सलमान ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और उनके साथ काफी वक्त बिताया। सान्वी ने बताया कि सलमान को उनसे लगाव हो गया था और उन्होंने उनसे गाना गाने को कहा। जब उन्होंने गाना गाया, तो सलमान इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने रात के 3 बजे अपने म्यूजिक डायरेक्टर को फोन करके कहा कि वह सान्वी की आवाज को रिकॉर्ड करें और भविष्य के लिए संभालकर रखें। अगले ही दिन सान्वी स्टूडियो में गईं और उनकी आवाज रिकॉर्ड की गई। सलमान का यह अंदाज उन्हें बेहद खास लगा और उन्होंने महसूस किया कि सुपरस्टार होते हुए भी वह टैलेंट को कितना सपोर्ट करते हैं। इसके बाद सलमान ने सान्वी को अपने फार्महाउस पर बुलाया, जहां उन्होंने तीन दिन बिताए। इस दौरान उन्होंने जिम, स्विमिंग और कार कलेक्शन देखने जैसी कई मजेदार गतिविधियों का अनुभव किया। सलमान ने उन्हें जाने नहीं दिया और उनके साथ हर पल मस्ती भरा रहा। सान्वी ने यह भी कहा कि लोग अक्सर सलमान खान को गलत समझते हैं, लेकिन असल में वह बहुत ही अच्छे इंसान हैं। उनके साथ बिताया गया समय उनकी जिंदगी के सबसे खूबसूरत लम्हों में से एक है, जिसे वह कभी नहीं भूलेंगी। सान्वी ने बताया कि वह खुद को बहुत भाग्यशाली मानती हैं कि उन्हें सलमान के साथ इतना समय बिताने का मौका मिला।

सेलीना जेटली ने कश्मीर के बचपन की यादें सांझा कीं

बॉलीवुड अभिनेत्री और पूर्व मिस इंडिया यूनिवर्स सेलीना जेटली ने हाल ही में पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद एक भावुक पोस्ट साझा किया है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर कश्मीर में बिताए अपने बचपन के अनुभवों को याद करते हुए एक तस्वीर भी साझा की, जिसमें वह महज 8 या 9 साल की उम्र की दिख रही हैं। तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, एक सैनिक की बेटी शैव भूमि में- गोलियों से बचती हुई, अपने भय से नहीं। इस पोस्ट में उन्होंने अपने उन दिनों की चर्चा की जब वे आर्मी पब्लिक स्कूल, उधमपुर में पढ़ती थीं और उनके पिता पहाड़ी रेजीमेंट में अधिकारी थे। सेलीना ने बताया कि उन्होंने उत्तराखंड और अरुणाचल प्रदेश जैसे शांत और सुंदर इलाकों में भी समय बिताया, लेकिन कश्मीर की यादें हमेशा भय और सतर्कता से जुड़ी रहीं। उन्होंने लिखा कि उन्हें आज भी वह समय याद है जब स्कूल जाने के लिए बच्चों को हथियारों से लैस गार्ड्स की सुरक्षा में जाना पड़ता था। वे शक्तिमान या थ्री टन मिलिट्री ट्रकों में स्कूल जाती थीं, जो आम बच्चों की तरह स्कूल बसें नहीं थीं, बल्कि सुरक्षा का एक अभिन्न हिस्सा थीं। उन्होंने बताया कि बचपन में ही उन्हें यह सिखाया जाता था कि अगर गोलीबारी हो तो कैसे झुकना है, चुप रहना है और खुद को कैसे सुरक्षित रखना है। उन्होंने लिखा कि कश्मीर जैसे खूबसूरत स्थान में भी वह खुलकर मैदानों में दौड़ नहीं सकती थीं, न ही जंगली फूलों को छू सकती थीं और न ही दोस्तों के साथ बेफिक्री से खेल सकती थीं। अपने पोस्ट में सेलीना ने यह भी सवाल उठाया कि जो कश्मीर कभी ऋषियों की भूमि, शैव दर्शन और आध्यात्मिकता का केंद्र था, वह अब आतंक और डर का पर्याय कैसे बन गया हैं। उन्होंने हाल ही में हुए पहलगाम आतंकी हमले पर दुख व्यक्त करते हुए लिखा कि इस हमले ने उनके बचपन की डरावनी यादों को फिर से ताजा कर दिया है। उन्होंने अंत में लिखा कि अब वक्त आ गया है कि इस डर के चक्र को तोड़ा जाए ताकि फिर से शांति, सुंदरता और आध्यात्मिकता की वापसी हो सके। उनका यह पोस्ट सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है और लोगों की संवेदनाएं भी इससे जुड़ रही हैं।

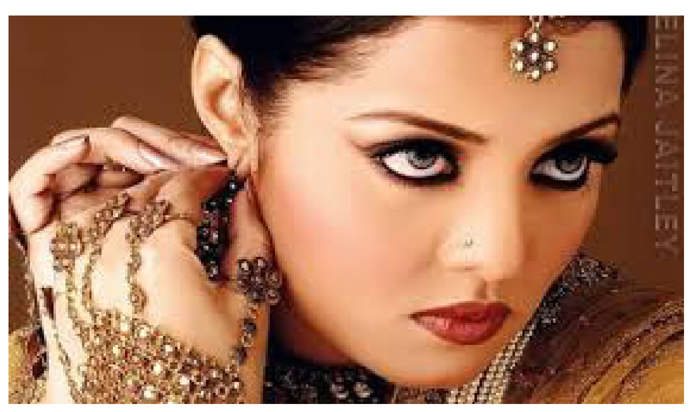

शहनाज को चढ़ा पेंटिंग का नया शौक– पंजाब की कैटरीना कैफ के नाम पहचान बनाने वाली और दमदार फैन फॉलोइंग के लिए मशहूर एक्ट्रेस शहनाज गिल एक बार फिर सुर्खियों में हैं। इस बार वजह उनकी कोई फिल्म या गाना नहीं, बल्कि उनका नया शौक पेंटिंग हैं। हाल ही में शहनाज ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर पेंटिंग करते हुए कई फोटो साझा कीं, जिसमें वह रंगों के साथ खेलती और ब्रश के साथ पोज देती नजर आ रही हैं। उनके इस नए अंदाज को फैंस द्वारा बेहद पसंद किया जा रहा हैं और सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीरें तेजी से वायरल हो रही हैं। अपनी चुलबुली अदाओं के लिए जानी जाने वाली शहनाज ने बचपन से ही एक्टिंग का सपना देखा था। मॉडलिंग से करियर की शुरुआत करने के बाद वह कई म्यूजिक वीडियोज़ और पंजाबी फिल्मों का हिस्सा रहीं। 2017 में सत श्री अकाल से उन्होंने फिल्मी डेब्यू किया। लेकिन असली लोकप्रियता उन्हें बिग बॉस 13 से मिली, जिसने उनके करियर को नई उड़ान दी। इसी शो के बाद उन्हें सलमान खान की फिल्म किसी का भाई किसी की जान में अहम रोल मिला। इसके बाद शहनाज ने फिल्म थैंक्यू फॉर कमिंग में भी शानदार अभिनय किया और राजकुमार राव की फिल्म विक्की विद्या का वो वाला वीडियो में अपने आइटम सॉन्ग सजना वे सजना से खूब तारीफें बटोरीं। इसके अलावा उनका म्यूजिक वीडियो शीशे वाली चुन्नी रैपर हनी सिंह के साथ काफी लोकप्रिय हुआ, जिसे रिलीज़ के दो घंटे के भीतर ही 1.1 मिलियन से ज्यादा व्यूज़ मिले।

काम की बात करें तो शहनाज गिल जल्द ही निर्देशक अमरजीत सिंह सरोन की फिल्म इक कुड़ी में नजर आएंगी, जो 13 जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। शहनाज न केवल अभिनय और गायन में बल्कि अब कला के क्षेत्र में भी अपनी रचनात्मकता का परिचय दे रही हैं। उनके फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं कि वह पेंटिंग के जरिए भी किस तरह का जादू बिखेरती हैं।

अभिनेता विक्रांत मैसी आध्यात्मिक गुरु श्री रविशंकर की भूमिका निभाएंगे

बालीवुड के फिल्म निर्देशक सिद्धार्थ आनंद अब निर्माता के तौर पर एक महत्वाकांक्षी अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट व्हाइट लेकर आ रहे हैं। व्हाइट एक वैश्विक स्तर की थ्रिलर फिल्म है, जिसमें अभिनेता विक्रांत मैसी प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर की भूमिका निभाते नजर आएंगे। यह फिल्म प्रोडक्शन कंपनी मार्फ्लिक्स पिक्चर्स और ऊंचाई व नागजिला जैसी फिल्मों के निर्माता महावीर जैन की कंपनी महावीर जैन फिल्म्स के साथ मिलकर बना रहे हैं। यह फिल्म कोलंबिया में 52 साल तक चले खूनी गृहयुद्ध के अंत की अनसुनी और प्रेरणादायक कहानी को बड़े पर्दे पर लाने का प्रयास करेगी। इसकी तैयारी इन दिनों कोलंबिया में चल रही है और शूटिंग जुलाई से शुरू होने की योजना है। यह प्रोजेक्ट एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय टीम को एकजुट कर उस अध्याय को दर्शाएगा, जिसे आज भी बहुत कम लोग जानते हैं कैसे आध्यात्मिक ज्ञान और अहिंसा ने दुनिया के सबसे लंबे गृहयुद्धों में से एक को समाप्त करने में अहम भूमिका निभाई। व्हाइट का निर्देशन चर्चित ऐड फिल्ममेकर मोंटू बासी कर रहे हैं।

फिल्म का सह-निर्माण पीसक्राफ्ट पिक्चर्स के साथ किया जा रहा है। विक्रांत मैसी इस समय लगातार अपने अभिनय और किरदारों में ट्रांसफॉर्मेशन के लिए चर्चा में हैं। हाल ही में 12वीं फेल और द साबरमती रिपोर्ट जैसी फिल्मों में उनके अभिनय की जमकर तारीफ हुई। अब वे इस फिल्म में लंबे बालों और आध्यात्मिक रूप में नजर आने वाले हैं, जिसकी झलक उनके हाल के लुक में देखी जा रही है। फिल्म व्हाइट सिद्धार्थ आनंद की उस सोच को सामने लाती है, जिसमें प्राचीन भारतीय ज्ञान की शक्ति और उसकी वैश्विक उपयोगिता को दिखाया जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट व्हाइट में विक्रांत मैसी करेंगे अभिनय

बालीवुड के फिल्म निर्देशक सिद्धार्थ आनंद अब निर्माता के तौर पर एक महत्वाकांक्षी अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट व्हाइट लेकर आ रहे हैं। व्हाइट एक वैश्विक स्तर की थ्रिलर फिल्म है, जिसमें अभिनेता विक्रांत मैसी प्रसिद्ध आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर की भूमिका निभाते नजर आएंगे। यह फिल्म प्रोडक्शन कंपनी मार्फ्लिक्स पिक्चर्स और ऊंचाई व नागजिला जैसी फिल्मों के निर्माता महावीर जैन की कंपनी महावीर जैन फिल्म्स के साथ मिलकर बना रहे हैं। यह फिल्म कोलंबिया में 52 साल तक चले खूनी गृहयुद्ध के अंत की अनसुनी और प्रेरणादायक कहानी को बड़े पर्दे पर लाने का प्रयास करेगी। इसकी तैयारी इन दिनों कोलंबिया में चल रही है और शूटिंग जुलाई से शुरू होने की योजना है। यह प्रोजेक्ट एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय टीम को एकजुट कर उस अध्याय को दर्शाएगा, जिसे आज भी बहुत कम लोग जानते हैं कैसे आध्यात्मिक ज्ञान और अहिंसा ने दुनिया के सबसे लंबे गृहयुद्धों में से एक को समाप्त करने में अहम भूमिका निभाई। व्हाइट का निर्देशन चर्चित ऐड फिल्ममेकर मोंटू बासी कर रहे हैं। फिल्म का सह-निर्माण पीसक्राफ्ट पिक्चर्स के साथ किया जा रहा है। विक्रांत मैसी इस समय लगातार अपने अभिनय और किरदारों में ट्रांसफॉर्मेशन के लिए चर्चा में हैं। हाल ही में 12वीं फेल और द साबरमती रिपोर्ट जैसी फिल्मों में उनके अभिनय की जमकर तारीफ हुई। अब वे इस फिल्म में लंबे बालों और आध्यात्मिक रूप में नजर आने वाले हैं, जिसकी झलक उनके हाल के लुक में देखी जा रही है। फिल्म व्हाइट सिद्धार्थ आनंद की उस सोच को सामने लाती है, जिसमें प्राचीन भारतीय ज्ञान की शक्ति और उसकी वैश्विक उपयोगिता को दिखाया जाएगा।

सुदामा/ईएमएस 28 अप्रैल 2025

'केसरी वीर- लीजेंड्स ऑफ सोमनाथ' का नया पोस्टर जारी

बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक 'केसरी वीर-लीजेंड्स ऑफ सोमनाथ' दर्शकों के बीच गहरी उत्सुकता जगा रही है। भव्य पीरियड ड्रामा का नया पोस्टर हाल ही में रिलीज़ किया गया है, जिसमें सुनील शेट्टी को एक निडर योद्धा वेगड़ा जी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उनके हाथ में खून से सनी कुल्हाड़ी और युद्धभूमि पर डटा रफ लुक दर्शकों को गहरे प्रभाव में डालता है। पोस्टर में जहां युद्ध का उग्र माहौल है, वहीं बैकड्रॉप में गुजरात का ऐतिहासिक सोमनाथ मंदिर फिल्म के पवित्र और वीरतापूर्ण भाव को और अधिक सशक्त बनाता है। सुनील शेट्टी की भूमिका न केवल एक फिजिकली ताकतवर योद्धा की है, बल्कि इसमें एक आध्यात्मिक और भावनात्मक गहराई भी देखने को मिलेगी। उनकी उपस्थिति को एक शक्तिशाली बैकग्राउंड स्कोर द्वारा और भी ऊंचाई पर ले जाया गया है।

प्रेम त्रिकोण वाली कहानियों के दीवाने हैं दर्शक

बॉलीवुड की प्रेम त्रिकोण वाली कहानियों के दर्शक दीवाने हैं। ऐसी फिल्म में दर्शकों को हमेशा ऐसे किस्सों में दिलचस्पी रही है, जहां दो लोगों के बीच एक तीसरे की एंट्री से भावनाओं का जाल और उलझता है। यही वजह है कि मेकर्स इन कहानियों को बार-बार पर्दे पर लाते हैं और अधिकतर बार उन्हें बॉक्स ऑफिस पर सफलता भी मिलती है। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म मेरे हसबैंड की बीवी ने इसी थीम को फिर से ताजा किया। मेरे हसबैंड की बीवी इस साल फरवरी में सिनेमाघरों में आई। फिल्म में अर्जुन कपूर, भूमि पेडनेकर और रकुल प्रीत सिंह की तिकड़ी नजर आई। कहानी में अर्जुन, अपनी पहली पत्नी भूमि से तलाक के बाद रकुल से प्यार करने लगते हैं। लेकिन ट्विस्ट तब आता है जब भूमि अपनी याददाश्त खो बैठती हैं और भूल जाती हैं कि तलाक हो चुका है। अर्जुन दोनों के बीच उलझ जाता है और यही टकराव फिल्म की जान बनता है। ऐसी ही प्रेम त्रिकोण पर आधारित एक और शानदार फिल्म थी बाजीराव मस्तानी, जिसमें रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण और प्रियंका चोपड़ा ने प्रमुख भूमिकाएं निभाईं। मराठा पेशवा बाजीराव का दिल मस्तानी पर आ जाता है, जबकि वह पहले से काशीबाई के पति होते हैं। फिल्म में प्यार, बलिदान और संघर्ष की गहराई को खूबसूरती से दिखाया गया। करण जौहर की स्टूडेंट ऑफ द ईयर भी इस लिस्ट में शामिल है।

ऋतिक ने कर दी कुणाल के 'पुलिस' लुक की तारीफ

फिल्म 'ज्वेल थीफ- द हीस्ट बिगिन्स' में पुलिस की भूमिका निभा रहे कुणाल ने पोस्ट शेयर कर अपनी टीम की तारीफ की। 'ज्वेल थीफ' में कुणाल कपूर के किरदार का नाम विक्रम पटेल है। ऋतिक रोशन ने कुणाल की पोस्ट पर रिएक्ट कर बताया कि उन्हें कुणाल का लुक पसंद आया। कुणाल कपूर ने फिल्म के किरदार से जुड़ी तस्वीरों को शेयर करते हुए टीम के लिए प्यारा सा नोट भी लिखा। तस्वीरों में वह सेट पर हाथ में बंदूक थामे स्वैग में नजर आए। कुणाल कपूर की पोस्ट पर कमेंट करते हुए अभिनेता और उनके खास दोस्त ऋतिक रोशन ने कमेंट सेक्शन में लिखा, लव द लुक। कुणाल कपूर ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट शेयर कर अपनी टीम की तारीफ की। अभिनेता ने सैफ की प्रशंसा करते हुए लिखा, 'ज्वेल थीफ' को चमकाने वाले सभी लोगों का शुक्रिया!

दर्शन अकादमी कालका में मनाई गई इन्वेस्टर सेरेमनी

कालका, 3 मई (अख़्तर फ़ारूक़ी,अजीत सिंह): दर्शन अकादमी कालका स्कूल में शनिवार को शैक्षणिक सत्र 2025 -26 इन्वेस्टर सेरेमनी का आयोजन किया गया। विद्यालय के बच्चों व अध्यापकों द्वारा हेड बॉय ,हेड गर्ल डिसिप्लिन इंचार्ज, स्पोर्ट्स इंचार्ज और हाउस इंचार्ज के लिए ऑनलाइन वोटिंग की गई। इसके पश्चात परिणाम घोषित किया तथा नवनिर्वाचित छात्र परिषद के प्रतिनिधियों को बैच व स्कार्फ पहनाकर सम्मानित किया गया । आठवीं कक्षा के राजवीर को हेड बॉय और हिमांशी को हेड गर्ल चुना गया। सभी प्रतिनिधियों द्वारा अपने कर्तव्यों को ईमानदारी पूर्वक निर्वाह करने की शपथ ली गई। विद्यार्थी परिषद के सभी सदस्यों द्वारा विद्यालय के प्रांगण में मार्च पास्ट निकाला गया । विद्यालय के प्रधानाचार्य निखिल खुराना ने विद्यार्थी परिषद के सदस्यों को बधाई देते हुए बताया कि इन्वेस्टर सेरेमनी एक महत्वपूर्ण अवसर है। जहां नव निर्वाचित छात्र परिषद के प्रतिनिधियों को कुछ भूमिकाएं और जिम्मेदारियां सौंपी जाती हैं । जिससे वे आगे चलकर एक बेहतर नागरिक और नेता बन सके। यह कार्यक्रम छात्रों को नेतृत्व, जिम्मेदारी व ईमानदारी के मूल्य सीखाता है।

जालंधर नगर निगम फिर बटोर रहा सुर्खियां, एक नया घोटाला आया सामने, उड़े होश

जालंधर 3 मई (निस) पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद भी जालंधर नगर निगम में भ्रष्टाचार थमने का नाम नहीं ले रहा। पिछले साल सामने आए एक बड़े कूड़ा घोटाले ने अब फिर सुर्खियां बटोरी हैं। आरोप है कि एक प्राइवेट ठेकेदार ने फर्जी बिल पेश कर निगम से करोड़ों रुपए की पेमेंट हड़प ली। पिछले साल इस मामले में जो आरोप लगे उसकी जांच रिपोर्ट को दबा दिया गया पर अब इस मामले की नई शिकायत मेयर और कमिश्नर तक पहुंच चुकी है। नई शिकायत में कहा गया है कि समाचारपत्रों ने पिछले साल इस घोटाले का खुलासा किया था। तब प्रारंभिक जांच में सामने आया था कि ठेकेदार ने कूड़ा उठाने के लिए जिन वाहनों के बिल जमा किए, उनमें स्कूटर और दोपहिया वाहनों के नंबर दर्ज थे। इन बिलों में दावा किया गया कि इन वाहनों से 10-10 टन कूड़ा उठाया गया। परिवहन विभाग की जांच में पुष्टि हुई कि उक्त नंबर स्कूटर और दोपहिया वाहनों के हैं, जो इतना भारी कूड़ा उठाने में सक्षम ही नहीं हैं। तब सवाल उठा था कि क्या यह गलती थी या जानबूझकर किया गया फर्जीवाड़ा। गौरतलब है कि जालंधर सेंट्रल और छावनी विधानसभा क्षेत्रों के डंप स्थानों (मॉडल टाउन, ज्योति नगर, रेडियो स्टेशन, फोल्ड़ीवाल आदि) से कूड़ा उठाने का काम निगम ने प्राइवेट ठेकेदारों को सौंपा है। ठेकेदार कूड़े को वरियाना डंप तक पहुंचाते हैं और प्रति किलो के हिसाब से पेमेंट लेते हैं। आरोप है कि एक ठेकेदार ने स्कूटर जैसे वाहनों के नंबरों का इस्तेमाल कर फर्जी बिल बनाए। पिछले साल तत्कालीन निगम कमिश्नर ने जांच के आदेश दिए थे, लेकिन जांच को आगे नहीं बढ़ने दिया गया। हैरानी की बात यह है कि एक निगम अधिकारी ने उस जांच से जुड़ी विवादित पैमेंट्स को भी बाद में रिलीज कर दिया।

पंजाब-हरियाणा पानी बवाल के बीच किसानों की बैठक, कर दिया ये बड़ा ऐलान

चंडीगढ़ 3 मई (निस) पंजाब-हरियाणा का पानी को लेकर चल रहे विवाद के बीच किसानों ने बड़ा ऐलान कर दिया है। इसी बीच चंडीगढ़ स्थित किसान भवन से सीनियर किसान नेता बलबीर सिंह राजेवाल का बड़ा बयान सामने आया है। किसान नेता राजेवाल ने कहा कि, धान की बुआई पूरी होने के बाद पंजाब के पानी के लिए विरोध प्रदर्शन करने का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि हम राज्य द्वारा अब तक किए गए सभी जल समझौतों को रद्द करने की मांग करेंगे क्योंकि हर समझौते पर 25 साल बाद फिर से बातचीत हो सकती है। पंजाब सरकार को सभी समझौते रद्द कर पुनर्विचार की मांग करनी चाहिए। कासिन नेता राजेवाल ने आगे कहा कि हम भावुक लोग हैं और हमने अपने देश में खाद्य संकट को समाप्त करने के लिए अपना सारा पानी मुफ्त में दे दिया है। आज जब राज्य में जल स्तर तेजी से घट रहा है, तब हमारे लोगों के जीवन की एकमात्र उम्मीद यहां के दरिया का पानी ही है। लेकिन दुख की बात यह है कि इस देश में जितनी भी सरकारें रहीं, उन्होंने हमेशा पंजाब के पानी को लूटने के लिए समझौते किए हैं। राजेवाल ने केंद्र सरकार से मांग की है कि पंजाब के हर घर व हर खेत तक स्वच्छ पेयजल नहरी पानी पहुंचाया जाए तथा आज तक पंजाब से जो मुफ्त पानी लिया गया है उसकी भरपाई भी केंद्र सरकार करे।

पंजाब में 3 दोस्तों के साथ घटी अनहोनी, एक युवक को यूं खींच ले गई मौत

गढ़शंकर 3 मई (निस) गढ़शंकर के बीत क्षेत्र के ऐतिहासिक गांव श्री खुरालगढ़ साहिब के तीन युवक नहाने के लिए गए सवा नदी में डूब गए। एक युवक की मौत हो गई जबकि दो को बचा लिया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार श्री खुरालगढ़ साहिब के तीन युवक पास की पड़ती सवा नदी में नहाने गए थे, जहां खनन माफिया द्वारा खोदे गए गहरे गड्ढे के कारण एक युवक फिसल कर डूब गया। मौके पर जुटे गोताखोरों व राहगीरों ने कड़ी मशक्कत के बाद दो युवकों निशान सिंह पुत्र दिलबाग सिंह व हर्ष पुत्र प्रेम सिंह को बाहर निकाल लिया, लेकिन एक युवक की गहरे गड्ढे में डूबने से मौत हो गई। मृतक की पहचान सुलखन सिंह (17 वर्ष) पुत्र करनैल सिंह शमी निवासी खुरालगढ़ साहिब के रूप में हुई है, जो अपनी छोटी बहन का इकलौता भाई था। सुलखन सिंह की मौत की खबर से गांव में शोक फैल गया। ग्रामीणों ने कहा कि खनन माफिया के कारण सुआ नदी में आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं, लेकिन सरकार इन पर अंकुश लगाने में विफल साबित हो रहा है।

अटारी बॉर्डर के बाहर डेरा लगा बैठे 21 पाकिस्तानी नागरिकों को मिली राहत

अमृतसर 3 मई (निस) जॉइंट चेक पोस्ट अटारी बॉर्डर पर लगातार एक दिन इंतजार करने के बाद आखिरकार पाकिस्तानी नागरिकों को अपने वतन लौटने का मौका मिल ही गया। जानकारी के अनुसार शुक्रवार को 21 पाकिस्तानी नागरिक अटारी बॉर्डर के रास्ते पाकिस्तान रवाना हो गए। ये वे पाकिस्तानी नागरिक थे जो पिछले एक दिन से जे.सी.पी. अटारी बॉर्डर के बाहर डेरा लगाकर बैठे हुए थे और उनकी कोई सुनवाई नहीं हो रही थी क्योंकि सरकार की तरफ से पाकिस्तानी नागरिकों को भारत छोड़ने के लिए 30 अप्रैल तक का समय दिया गया था, फिलहाल एक बार फिर से पाकिस्तान के नागरिकों की सुनवाई हो चुकी है।

मौली गांव में कंट्रोल रूम स्थापित, डीसीपी पंचकूला ने सुरक्षा प्रबंधों की समीक्षा की

17 सीसीटीवी और 5 बॉडी कैमरों के साथ पुलिस 24 घंटे निगरानी में जुटी

रायपुररानी, 3 मई (देवेन्द्र सिंह): पंचकूला जिले की पुलिस उपायुक्त हिमाद्रि कौशिक ने शनिवार को गांव मौली का दौरा कर सुरक्षा प्रबंधों का निरीक्षण किया। जानकारी के अनुसार, 6 अप्रैल को घुड़चढ़ी को लेकर मौली गांव में हुए विवाद के बाद स्थिति को गंभीरता से लेते हुए पुलिस आयुक्त शिबास कविराज ने गांव में गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखने के निर्देश दिए थे। इसी क्रम में गांव में एक विशेष कंट्रोल रूम की स्थापना की गई है। पुलिस के मुताबिक, पूर्व में लगाए गए 12 सीसीटीवी कैमरों की संख्या बढ़ाकर अब 17 कर दी गई है, जबकि 5 बॉडी कैमरों से लैस पुलिसकर्मी हर गतिविधि पर लगातार नजर बनाए हुए हैं। निरीक्षण के दौरान डीसीपी कौशिक ने कंट्रोल रूम की कार्यप्रणाली की समीक्षा की और तैनात पुलिस बल को सतर्क रहने के निर्देश दिए। इस मौके पर थाना रायपुररानी प्रभारी इंस्पेक्टर सुखबीर सिंह, मौली चौकी प्रभारी सब-इंस्पेक्टर रामकरण, सब-इंस्पेक्टर राजबीर सिंह सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे। विवादित स्थिति की संवेदनशीलता को देखते हुए गांव में लगभग 120 पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है, जिनमें महिला कर्मी भी शामिल हैं। इस दौरान सभी पुलिसकर्मी दंगा-रोधी उपकरणों से लैस हैं। इसके अलावा, एक विशेष टियर गैस यूनिट को भी अलर्ट मोड में रखा गया है, जो ज़रूरत पड़ने पर तुरंत कार्रवाई करने में सक्षम है। जबकि गांव में 5 स्थायी नाके स्थापित किए गए हैं, जहां पुलिसकर्मी चौबीसों घंटे निगरानी कर रहे हैं।जातिगत टिप्पणी या भड़काऊ पोस्ट पर होगी सख्त कार्रवाई, सोशल मीडिया पर विशेष तकनीकी टूल से नज़रडीसीपी हिमाद्रि कौशिक ने स्पष्ट किया कि सोशल मीडिया पर जातिगत टिप्पणी, अभद्र भाषा अथवा भड़काऊ सामग्री के प्रसार पर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस दौरान पंचकूला पुलिस विशेष तकनीकी टूल्स की सहायता से सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स की 24 घण्टे निगरानी कर रही है। ऐसे असामाजिक तत्वों की पहचान कर उनके विरुद्ध कार्रवाई सुनिश्चित की जा रही है। वही, डीसीपी ने आमजन से अपील की है कि वे किसी भी अफवाह या भ्रामक सूचना पर ध्यान न दें और प्रशासन का पूर्ण सहयोग करें। यदि किसी प्रकार की आपत्तिजनक सामग्री या संदिग्ध गतिविधि की जानकारी मिले, तो तुरंत पुलिस को सूचित करें। उन्होंने कहा कि शांति और सौहार्द बनाए रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। इस अवसर पर कई मीडिया कर्मी ,विधायक के निजी सचिव रवि अरोड़ा मौजूद रहे।

हांसी में अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम में

विधायक विनोद भयाना ने की बतौर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत

हांसी,3 मई (मनमोहन शर्मा): विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में हांसी के संयुक्त कार्यालय परिसर स्थित मीडिया सेंटर में एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विधायक विनोद भयाना ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की और मीडिया प्रतिनिधियों को संबोधित किया। विधायक विनोद भयाना ने पत्रकारों को अंतर्राष्ट्रीय पत्रकारिता स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और प्रेस की स्वतंत्रता को लोकतंत्र का मूल आधार बताया। उन्होंने कहा कि प्रेस लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है और समाज को सही दिशा देने में पत्रकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। पत्रकार निष्पक्षता और सच्चाई के साथ जनहित के मुद्दों को सामने लाकर लोकतंत्र को मजबूत करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि एक सशक्त और स्वतंत्र मीडिया ही जन-संवाद का वास्तविक माध्यम है, जो आम जनता की आवाज़ सरकार तक पहुंचाने का कार्य करता है। श्री भयाना ने यह विश्वास दिलाया कि सरकार पत्रकारों की सुरक्षा और उनके हितों के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। मंच का संचालन राजीव बंसल ने किया ।इस अवसर पर वरिष्ठ मीडियाकर्मी सर्वेश कुकरा ने कहां कि पत्रकारों को व सरकार जनता के बीच में एक कड़ी का कार्य करती हैं । इस समय पत्रकारों को कई चुनौतियांके वजूद वे इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहें । माधव बाबा ने कहा कि स्थानीय पत्रकार स्व: जगदीश भारती , घनश्याम दास गांधी , राजकुमार आर्य , प्रताप यादव , मनमोहन सिंह दर्दी , भीम बड़ाला व सतपाल सैनी आदि को याद करते हुए उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की ।मुकेश माही ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए । इस मौके पर नगर परिषद के पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि विनोद सैनी , प्रधान संदीप सैनी मनमोहन शर्मा, मीडिया कर्मी शर्वेश कुकरा , महावीर यादव , अंजय सैनी , विनोद गंगवानी , पंकज नागपाल , माधव बाबा, केसव,महावीर सोनी, दिनकर गावड़ी , प्रदीप , अनुराग के अलावा अन्य कल्ब के सदस्य मौजूद थें । क्लब के सदस्यों ने विधायक को स्मृति चिन्ह देकर उन्हे का सम्मानित किया ।

संक्षिप्त समाचार

नए समाज के निर्माण में मीडिया की अहम भूमिका : धर्मेंद्र खेड़ा

नरसिंह दास पब्लिक स्कूल तरावड़ी में मनाया राष्ट्रीय प्रेस दिवस

तरावड़ी, 3 मई (छाया शर्मा): नरसिंह दास पब्लिक स्कूल तरावड़ी

में राष्ट्रीय प्रेस दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस दौरान पत्रकारो की चुनोतियों ओर समस्याओं पर चर्चा भी हुई। नरसिंह दास पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर धर्मेंद्र खेड़ा ने कहा कि मीडिया प्रजातंत्र का सशक्त प्रहरी है। न्यायपालिका, विधायिका व कार्यपालिका के बाद मीडिया को चौथा स्तंभ के रूप में जाना जाता है। मीडिया लोकतंत्र व लोगों के बीच सेतु का काम करती है। उन्होंने कहा कि पत्रकार लेखनी के माध्यम से समाज को न केवल दिशा देते हैं बल्कि समस्याओं व गड़बड़ियों को उजागर भी करते है। डायरेक्टर धर्मेंद्र खेड़ा ने कहा कि मीडिया की बेहतरी के लिए प्रयास होने चाहिए। समाज और प्रशासन की समस्या का सही चित्रण कर नए समाज के निर्माण में मीडिया की अहम भूमिका होती है। इस दौरान नरसिंह दास पब्लिक स्कूल तरावड़ी की तरफ से पत्रकारों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। सभी स्टाफ सदस्यों ने पत्रकारों को राष्ट्रीय प्रेस दिवस की शुभकामनाएं भी दी।

विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन होगा

बाबैन, 3 मई (राजेश कुमार): हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री व केंद्रीय बिजली एवं शहरी आवास मंत्री मनोहर लाल खट्टर के जन्मदिन पर 5 मई को सुबह 9 बजे किसान विश्राम गृह बाबैन में विशाल रक्तदान शिविर आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर मनोहर लाल खट्टर की दीर्घायु के लिए हवन यज्ञ का भी आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम में लाडवा विधानसभा के चारों मंडलों के भाजपा कार्यकर्ता भाग लेगे। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की धर्मपत्नी सुमन सैनी मुख्यातिथि होंगी व अध्यक्षता मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि कैलाश सैनी करेंगे। उपरोक्त जानकारी देते हुए भाजपा मंडल बाबैन के प्रधान विकास शर्मा जालखेड़ी ने बताया कि इस कार्यक्रम को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं में भारी जोश एंव उत्साह का माहौल है। उन्होंने बताया कि रक्तदान शिविर में लाडवा विधानसभा के बाबैन, गुढ़ा, लाडवा व पिपली मंडलों के कार्यकर्ता भाग लेंगे उनका उत्साह वर्धन मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की धर्मपत्नी सुमन सैनी व मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि कैलाश सैनी करेंगे। उन्होंने भी पार्टी कार्यकर्ताओं व युवाओं को आह्वान किया कि वे अधिक से अधिक रक्तदान कर किसी जरूरतमंद व्यक्ति के अमूल्य जीवन को बचाकर पुण्य का काम करें। इस अवसर पर उपप्रधान रिंकू कश्यप, महामंत्री अनिल टाटकी व भीम सिंह बेरथला, सचिव प्रदीप बिन्ट, बलविन्दर जोगीमाजरा, ओमप्रकाश सरपंच रामसरन माजरा, बलविन्द्र सिंह जालखेड़ी के अलावा अनेक पार्टी कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

पंजाब का ये चंडीगढ़-लुधियाना हाईवे हुआ जाम, किसानों ने लगा दिया धरना

माछीवाड़ा साहिब 3 मई (निस) थाना कूमकलां के अधीन आते गांव संघे के युवक मनप्रीत सिंह की 4 अप्रैल को मौत हो गई थी। पुलिस ने इस संबंध में दुर्घटना का मामला दर्ज किया था। मृतक के परिजनों और किसान यूनियन कादियां ने आज इस मामले में इंसाफ की मांग को लेकर कटानी पुलिस चौकी के पास चंडीगढ़-लुधियाना रोड पर जाम लगा दिया और कहा कि मनप्रीत सिंह की हत्या की गई है लेकिन पुलिस इसे हादसा बता रही है। भारतीय किसान यूनियन के जिला अध्यक्ष हरदीप सिंह ग्यासपुरा ने बताया कि युवक मनप्रीत सिंह गरीब परिवार से ताल्लुक रखता था और 4 अप्रैल की रात को जब वह अपने दोस्त के साथ टहलने गया था तो सिर में चोट लगने से उसकी मौत हो गई। किसान नेता ने कहा कि परिजन पुलिस से गुहार लगाते रहे कि उनके बेटे की मौत सड़क हादसे में नहीं हुई बल्कि उसकी हत्या की गई है, जिसकी गंभीरता से जांच की जाए और उसके साथी से गहनता से पूछताछ की जाए। उन्होंने कहा कि पुलिस को कार्रवाई करने के लिए समय दिया गया था लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई, लेकिन आज किसान यूनियन न्याय के लिए परिवार के साथ मजबूती से खड़ी है, जिसके चलते आज विरोध प्रदर्शन किया गया है। इस अवसर पर किसान नेता मनप्रीत सिंह घुलाल ने भी कहा कि आज पीड़ित परिवार और किसान यूनियन न्याय की मांग के लिए धरना देने को मजबूर हुई है। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि मृतक मनप्रीत सिंह के साथ गया साथी घायल नहीं हुआ, जबकि उसकी मौत हो गई, इसलिए परिवार को संदेह है कि उनके बेटे की हत्या की गई है। इसलिए उन्हें न्याय मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि न्याय के लिए पुलिस के उच्च अधिकारियों से शिकायत की गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। डी.डी. चंडीगढ़-लुधियाना मार्ग को अवरुद्ध कर रहे प्रदर्शनकारियों को समझाने के लिए पुलिस ने एक टीम का गठन किया है।

नियमों की अनदेखी पड़ेगी महंगी, वाहन चालक हो जाएं सावधान!

फरीदकोट 3 मई (निस) डा. प्रज्ञा जैन एस.एस.पी. फरीदकोट के नेतृत्व में पुलिस ने यातायात नियमों का उल्लंघन रोकने के लिए सख्त अभियान चलाया हुआ है। इसका मुख्य उद्देश्य सड़कों पर दुर्घटनाओं को रोकना और सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इसलिए फरीदकोट ट्रैफिक पुलिस शहर की मुख्य सड़कों, बाजारों और सार्वजनिक स्थानों पर तैनात ट्रैफिक कर्मियों के माध्यम से लगातार निगरानी कर रही है। परिणामस्वरूप, फरीदकोट पुलिस ने वर्ष 2025 के दौरान 7247 चालान जारी किए हैं और 33 लाख 60 हजार 900 रुपए जुर्माना वसूला गया। आमतौर पर देखा गया है कि बाजारों में अवैध पार्किंग सड़क जाम का मुख्य कारण है, जिसके कारण आम जनता को असुविधा का सामना करना पड़ता है, जिसके चलते अवैध रूप से पार्किंग करने वालों के चालान काटे जा रहे हैं तथा सड़कों पर यातायात को सुचारू करने के लिए आवश्यक प्रबंध किए जा रहे हैं। इसके अलावा, फरीदकोट पुलिस ने यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए अवैध पार्किंग, ओवरलोडिंग, हेलमेट न पहनने, सीट बेल्ट न लगाने, ओवरस्पीडिंग, कार की खिड़कियों पर अनाधिकृत काली फिल्म और काली जाली लगाने के चालान काटे हैं। इस संबंध में जानकारी देते हुए डॉ. प्रज्ञा जैन ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य यातायात नियमों की सख्ती से अनुपालना सुनिश्चित करना है ताकि अवैध पार्किंग, ओवरलोडिंग, खतरनाक ड्राइविंग, नशे में ड्राइविंग तथा अन्य यातायात उल्लंघनों को रोका जा सके। यातायात पुलिस की टीमें जिले के विभिन्न हिस्सों में यातायात नियमों को सख्ती से लागू करने के लिए कार्रवाई कर रही हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आमजन को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के लिए स्कूल, कॉलेज, गांव व शहरों में यातायात जागरूकता सेमिनार भी आयोजित किए जा रहे हैं। एसएसपी फरीदकोट ने लोगों से अपील की है कि वे अपने वाहनों के लिए निर्धारित पार्किंग स्थलों का प्रयोग करें तथा यातायात नियमों का पालन कर जिम्मेदार नागरिक बनकर पुलिस प्रशासन का सहयोग करें।

पंजाब में फर्जी अफसर व स्द्धश्द्ध कारोबारी की जोड़ी बनी सिरदर्दी, व्यापारियों में मची हाहाकार

लुधियाना 3 मई(निस) इन दिनों नाभा के रहने वाले व्यापारियों के लिए चमकौर साहिब का रहने वाला एक नटवरलाल सिरदर्द बना हुआ है, जो खुद को कापीराइट का आफिसर बताकर पुलिस को गुमराह करने के साथ-साथ व्यापारियों को दोनों हाथों से लूट रहा है। इस खेल में पायल का एक शू कारोबारी उसका पूरा साथ दे रहा है, जो खुद लोगों को फोन कर रेड के नाम का डरावा दे रहा है और बाद में दलाल की भूमिका निभाकर नटरवरलाल को लाखों रुपए दिलवा रहा है। पंजाब में 'आप' की सरकार आने के बाद हो रही ऐसी हरकतें सरकार का ग्राफ नीचे गिरा रही है।

नाभा व्यापारियों पर पुलिस ने कार्रवाई कर दिया चमकौर साहिब वाले का साथ

विगत दिनों चमकौर साहिब के नटवरलाल नाभा में एक दुकान पर पैसे लेने के मकसद से पहुंच गया। इस बात का पता चलने पर व्यापारियों ने अथॉरिटी चैक करने के मकसद से विरोध किया तो पुलिस की तरफ से नटवरलाल से पूछताछ करने की बजाय व्यापारियों पर कार्रवाई कर यह स्पष्ट कर दिया कि चमकौर साहिब वाले द्वारा पुलिस को पूरा हिस्सा दिया जा रहा है। नाभा के कप्तान की तरफ से इस बात की किसी आई.पी.एस. आफिसर से जांच करवा व्यापारियों को इंसाफ दिलवाना चाहिए और चमकौर साहिब वाले की अथारिटी चैक की जानी चाहिए और अगर अथॉरिटी नहीं दिखा पता तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए।

श्रमिक दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया

पिंजौर, 3 मई (अजीत सिंह, अख्तर फ़ारूक़ी): जे बी स्मार्ट किड्स स्कूल में श्रमिक दिवस बड़े उत्साह और संवेदनशीलता के साथ मनाया गया। इस विशेष अवसर पर बच्चों ने किसान, दर्जी, पुलिसकर्मी, डॉक्टर, इंजीनियर आदि के रूप में सजकर उनके जीवन की भूमिका को समझने और अनुभव करने का प्रयास किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को यह सिखाना था कि समाज के प्रत्येक वर्ग का कार्य महत्वपूर्ण होता है, चाहे वह कोई भी पेशा क्यों न हो। बच्चों ने उन कठिनाइयों और चुनौतियों को महसूस किया जिनका सामना ये प्रोफेशनल्स अपने दैनिक जीवन में करते हैं। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने स्कूल में कार्यरत सहायकों जैसे आया, सफाईकर्मी, गार्ड और अन्य स्टाफ का तहे दिल से धन्यवाद किया, जो प्रतिदिन उनकी देखभाल करते हैं और हर संभव सहायता प्रदान करते हैं। उन्होंने कम्युनिटी हेल्पर्स के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें उपहार व धन्यवाद कार्ड भी भेंट किए। विद्यालय की प्रधानाचार्या जीवन ज्योति ने बच्चों के इस भावनात्मक प्रयास की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम बच्चों को संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

ऑन दी साइड ओफ ह्यूमैनिटी विषय पर नारा लेखन प्रतियोगिता का किया आयोजन

कालका, 3 मई (अख्तर फ़ारूक़ी,अजीत सिंह): राजकीय महाविद्यालय कालका की प्राचार्या डॉक्टर गीता सुखीजा के कुशल नेतृत्व में रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा विश्व रेड क्रॉस दिवस के उपलक्ष्य में ऑन दी साइड ओफ ह्यूमैनिटी विषय पर नारा लेखन प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन रेड क्रॉस समिति की प्रभारी डॉक्टर कविता बल्हारा के मार्गदर्शन और दिशा निर्देशन में किया गया। प्रस्तुत प्रतियोगिता में 15 विद्यार्थियों ने भाग लिया ।जिसमें प्रथम स्थान बीए द्वितीय वर्ष की शबाना, द्वितीय स्थान बीकॉम द्वितीय वर्ष की रिया और तृतीय स्थान एमकॉम द्वितीय वर्ष की दीक्षा गोयल ने प्राप्त किया। विजेता प्रतिभागियों के स्लोगन पोस्टर को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता में भेजा जाएगा। प्राचार्या डॉक्टर गीता सुखीजा ने सभी विद्यार्थियों की प्रतिभा को सराहा। निर्णायक मंडल की सदस्या असिस्टेंट प्रोफेसर सुनीता चौहान, डॉक्टर बिंदु शर्मा ,डॉक्टर नीरू शर्मा और डॉ पूनम रानी रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में रेड क्रॉस सोसाइटी की सदस्य असिस्टेंट प्रोफेसर स्वाति, डॉक्टर सोनिया, डॉक्टर शबनम अरोड़ा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

किसानों ने मुजफ्फरनगर किसान महापंचायत के लिए किया कूच

आम आदमी की सुरक्षा खतरे में : रतन मान

करनाल, 3 मई (संदीप रोहिला): भारतीय किसान यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष रतन मान ने बीजेपी सरकार पर प्रहार करते हुए कहा कि कल मुजफ्फरपुर में किसान नेता राकेश टिकैत के साथ जो शरारती लोगों द्वारा की गई हरकत को लेकर देशभर के किसानों में भारी गुस्सा पनप रहा है। इस हरकत को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। इस प्रकरण को लेकर आज शनिवार को मुजफ्फरनगर के सी जी आई ग्राउंड में भारतीय किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेश टिकैत जी ने किसान महापंचायत बुलाई गई है। जिसको लेकर हरियाणा के किसानों ने किसान महापंचायत के लिए यमुना पुल पर

एकत्रित होकर कूच किया। भारतीय किसान यूनियन करनाल इकाई के अध्यक्ष सुरेंद्र सिंह घुम्मन की अगुवाई में महापंचायत के लिए शनिवार को जमना पुल से किसानों ने गर्मजोशी के साथ कूच किया। भाकियू प्रदेश अध्यक्ष रतन मान ने किसानों के जत्थे को रवाना करते हुए कहा कि जो देश के बड़े किसान नेता राकेश टिकैत जी के साथ धोखे से इस तरह की हरकत करने के साथ साथ पगड़ी पर हाथ डाला गया है ऐसे लोगों को माफ नहीं किया जा सकता है। यह घटना जानबूझ कर सोची समझी चाल के तहत घटित की गई है। भारतीय किसान यूनियन एक देश भगत किसान मजदूरों का संगठन है। उन्होंने बताया कि आज की किसान महापंचायत में जो भी फैसला लिया जाएगा उस पर देश के किसान खरे उतरेंगे और इस अपमान का बदला लिया जाएगा।मान ने कहा कि देश में एक राकेश टिकैत नहीं है हजारों लाखों संख्या में टिकैत है। इस घटना पर आपत्ति जाहिर करते हुए रतन मान ने कहा कि दिन प्रतिदिन देश में लोगों की सुरक्षा की भावना कमजोर होती जा रही है। कुछ भी सुरक्षित दिखाई नहीं दे रहा है। इसलिए सरकार को लोगों के मन में सुरक्षा की भावना को मजबूत करना चाहिए। ताकि देश तरक्की की ओर बढ़ सके।इस अवसर पर उत्तरी हरियाणा प्रभारी मेहताब कादियान, किसान नेता नेकी राम, प्रवक्ता सुरेंद्र सागवान, करनाल खंड प्रधान गुरविंदर काली, किसान भवन सचिव राज कुमार नोतना, राम दुरेजा, सतबीर गढ़ीबिरबल, रणबीर कत्लाहेडी, रमेश घरौंडा, महेंद्र खेड़ा, देवेंद्र सागवान सहित काफी संख्या में किसान मौजूद थे।

केन्द्रीय मंत्री मनोहर लाल के जन्म दिवस पर 5 मई को लगाया जाएगा रक्तदान शिविर : सुभाष सुधा

कुरुक्षेत्र, 3 मई (सुदेश कुमार): हरियाणा के पूर्व राज्यमंत्री सुभाष सुधा ने कहा कि केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल के जन्मदिवस पर 5 मई को सेक्टर 7 मकान नंबर 7 पर सुबह 9 बजे से एक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। इस रक्तदान शिविर की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है और सभी कार्यकर्ताओं से अपील की गई है कि रक्तदान शिविर में बढ़चढ़ कर भाग ले। इस रक्तदान शिविर में ज्यादा से ज्यादा रक्त एकत्रित करके अनजान लोगों को जीवनदान दिया जा सकेगा।

नदियों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए किए जा रहे सराहनीय कार्य : धुम्मन सिंह किरमच

इंद्री,3 मई (बिसपाल राणा): हरियाणा सरस्वती धरोहर विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष धुम्मन सिंह किरमच ने कहा कि हरियाणा में मुख्यमंत्री

नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में नदियों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं। प्रदेश सरकार नदियों, नहरों और पानी के स्रोतों के प्रति पूरी गंभीरता से कार्य कर रही है। वे शनिवार को इंद्री के गाँव चौगामा स्थित हंसुमाजरा घाट पर यमुना माँ के मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में राज्य के अंतिम छोर तक पानी पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही, मुख्यमंत्री स्वयं समय-समय पर इन कार्यों की समीक्षा करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रदेश में पानी की कोई कमी न हो। यमुना नदी का जल पवित्र है तथा सभी नदियां माता के समान होती हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की है, जिसमें उन्होंने धनौरा में एक एसटीपी (सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट) स्थापित करने की बात कही, जिससे साफ पानी यमुना में डाला जा सकेगा। उन्होंने विधिवत रूप से यमुना मैया की पूजा-अर्चना की तथा ग्रामीणों ने उन्हें यमुना का पवित्र जल भेंट किया। इस मौके पर ग्रामीण वासी सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

हरियाणा नंबरदार एसोसिएशन लाडवा की एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न, सुभाष चंद्र लाठी धनौरा बने सर्व सम्मति से प्रधान

लाडवा, 3 मई (रामगोपाल): हरियाणा नंबरदार एसोसिएशन तहसील लाडवा की एक बैठक पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस मे संपन्न हुई जिसकी अध्यक्षता जंग शेर बन ने की। मंच का संचालन राजकुमार धनोरा ने किया। हरियाणा नंबरदार संगठन प्रदेश प्रवक्ता ने बैठक को सम्बोधित

करते हुए कहा कि सभी नंबरदार एक छत के नीचे इकट्ठे हैं। नंबरदारों का चुनाव नहीं होता बल्कि आपसी सहमति की जाती है। चीमा ने कहा कि सभी नंबरदार एक छत के नीचे इकट्ठे होकर अपनी मांगों को लेकर संघर्ष करेंगे ताकि लंबित पड़ी मांगों को शीघ्र लागू किया जाए। उन्होंने हरियाणा सरकार से मांग की कि नंबरदारों की मांगों को पूरा किया जाए ताकि लंबरदार अपने कार्य को सुचारू रूप से कार्य कर सकें। उन्होंने कहा कि बैठक में सर्वसम्मति से सुभाष चंद्र नंबरदार को ब्लॉक लाडवा का प्रधान चुन लिया गया एवं कार्यकारिणी का गठन किया गया। सुभाष चंद्र लाठी धनौरा ने बैठक को संबोधित करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया और कहा कि जो जिम्मेदारी उन्हें सौंपी दी गई है उसे वह ईमानदारी व निष्ठा पूर्ण करने का काम करेगा और नंबरदार के हकों के लिए सदा आगे बढ़कर काम करेगा। नंबरदार की जो मांगे अधूरी पड़ी है उनको हरियाणा सरकार के समक्ष रखेंगे और हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के द्वारा उन मांगों को पूरा करवाने की कोशिश करेंगे। नवनियुक्त प्रधान ने नंबरदारो को विश्वास दिलाया कि आने वाले समय में संगठन को और मजबूत किया जाएगा और काम करने वाले नंबरदारो को आगे लाया जाएगा। इस अवसर पर पहलगांव में आतंकवादी द्वारा मारे गए लोगों और हरियाणा के सपूत विनय नरवाल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं दो मिनट का मोन रखकर उनकी आत्मा की शांति की कामना की गई। इस अवसर पर राजकुमार धनोरा, राजीव नंबरदार, रामस्वरूप नंबरदार, जयपाल सुल्तानपुर, परमजीत नंबरदार, रणदीप लंबरदार, जसवीर नंबरदार, कर्म सिंह नंबरदार, गुरमीत सिंह नंबरदार, विपिन नंबरदार, अनिल शर्मा, जय नारायण डूडी, लालचंद नंबरदार, निर्मल सिंह नंबरदार, जहांगीर नंबरदार आदि उपस्थित रहे।

समाज को स्वस्थ और सशक्त बनाने के लिए नशे का करें त्याग- बंडारु दत्तात्रेय

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने ड्रग फ्री चंडीगढ़ पदयात्रा में की शिरकत

चंडीगढ़, 3 मई (सतीश कुमार) नशीली दवाओं के दुरुपयोग के दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक करने और चंडीगढ़ को भारत का पहला ड्रग-फ्री शहर बनाने के उद्देश्य से आज शनिवार को चंडीगढ़ के सेक्टर 17 स्थित तिरंगा पार्क में ड्रग फ्री चंडीगढ़ के लिए पदयात्रा का आयोजन किया गया। वॉक का नेतृत्व पंजाब के राज्यपाल और यूटी चंडीगढ़ के प्रशासक श्री गुलाब चंद कटारिया ने किया। हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने कार्यक्रम में युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि नशा एक ऐसी बुराई है जो न केवल व्यक्ति को, बल्कि उसके परिवार, समाज और पूरे राष्ट्र को खोखला करती है। यह हमारे युवाओं की ऊर्जा, उनकी प्रतिभा और उनके सपनों को छीन लेती है। राज्यपाल ने युवाओं से नशे से दूर रहने और अपने आसपास के लोगों को इसके खतरों के बारे में जागरूक करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि आज की यह वॉकथॉन समाज में बड़ा बदलाव लाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह आयोजन लोगों को नशे से दूर रहने व समाज को स्वस्थ और सशक्त बनाने के लिए प्रेरित करेगा।उन्होंने कहा कि नशे के खिलाफ इस लड़ाई के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। राज्यपाल ने हरियाणा और पंजाब दोनों राज्यों की सरकारों को नशे के खिलाफ एक संयुक्त नीति बनाकर कार्य करने का आग्रह किया।उन्होंने बताया कि नशे की समस्या से निपटने के लिए हरियाणा सरकार मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में अनेक कदम उठा रही है। सरकार ने पंचकूला में एक अन्तर्राज्यीय ड्रग सचिवालय की स्थापना की है। इसके साथ ही एंटी नारकोटिक्स सैल्स भी स्थापित किए गए हैं। मादक पदार्थों से सम्बन्धित मामलों की जल्द सुनवाई तथा सजा सुनिश्चित करने हेतु राज्य के सभी जिलों में फास्ट्रैक न्यायालयों की स्थापना की जा रही है।बाक्स- हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने ड्रग फ्री चंडीगढ़ पदयात्रा के दौरान सभी पत्रकारों व मीडिया कर्मियों को विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि नशे के खिलाफ जंग में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। मीडिया समाज में सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का प्रचार-प्रसार कर लोगों में जागरूकता पैदा करता है।समारोह में पंजाब के राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया ने सभी प्रतिभागियों को नशे से दूर रहने के लिए शपथ दिलवाई। इस दौरान हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी, पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार भगवंत मान, हरियाणा के सहकारिता मंत्री श्री अरविन्द शर्मा, हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष श्री हरविन्द्र कल्याण, पंजाब के राज्य सभा सांसद श्री सतनाम संधू व श्री विक्रमजीत सिंह, पंजाब के रेल राज्य मंत्री श्री रवनीत सिंह बिट्टू, पूज्य जैन आचार्य लोकेश मुनि सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भी पदयात्रा में भाग लिया।

सरकारी फंड का ठीक ढंग से प्रयोग सुनिश्चित करें अधिकारी, ताकि योजना का लाभ पात्र व्यक्ति तक पहुंचे:सांसद नवीन जिंदल

कार्य की गुणवता के साथ न हो कोई समझौता

कैथल, 3 मई (प्रवेश बहादुर): सांसद नवीन जिंदल ने कहा कि किसी भी योजना में सरकारी फंड का प्रयोग ठीक ढंग से किया जाए, ताकि पात्र लोगों को उस योजना का लाभ मिल सके और धरातल पर सरकार का योजना को लागू करने का उद्देश्य भी सार्थक हो सके। साथ ही काम की गुणवता से कोई समझौता न किया जाए। जो जरूरी कार्य हैं, उन्हें प्राथमिकता के आधार पर पूरा करवाया जाए। सांसद नवीन जिंदल शनिवार को लघु सचिवालय स्थित सभागार में जिला विकास, समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक में उनके साथ विधायक पूंडरी सतपाल जांबा, जिला भाजपा अध्यक्षा ज्योति सैनी, डीसी प्रीति सहित जिले भर के तमाम अधिकारी मौजूद रहे। सांसद ने तीन चरणों में बैठक ली। जिसमें

अलग-अलग विभागों से जुड़ी 41 योजनाओं के तहत हुए कार्यों की जानकारी ली और एक-एक एजेंडे पर चर्चा करते हुए लोगों को राहत पहुंचाने के निर्देश दिए। सांसद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में केंद्र व प्रदेश में विकास कार्य लगातार करवाए जा रहे हैं। जिसका सीधा लाभ आमजन को मिल रहा है। देश की तरक्की में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क का अहम रोल होता है। सभी संबंधित अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में इन विषयों पर विशेष ध्यान दें। इसी प्रकार मनरेगा योजना का सही से क्रियान्वय करने के लिए भी सुझाव दें, ताकि लोगों को रोजगार मिलने के साथ-साथ कार्य भी सही प्रकार से हो। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि परंपरागत खेती की बजाए जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाए और इसके लिए किसानों को मार्केट भी उपलब्ध करवाने का प्लान तैयार किया जाए। फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर भी आवश्यक कदम उठाए जाएं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी व ग्रामीण योजना के तहत पात्र व्यक्ति को योजना का लाभ प्रदान किया जाए। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिला में लिंगानुपात में और अधिक सुधार लाने के लिए जागरूकता अभियान नियमित रूप से चलते रहें। आयुष्मान योजना का लाभ पात्र व्यक्ति को मिले। सांसद नवीन जिंदल ने विद्यार्थियों में स्किल बढ़ाने को लेकर भी योजना तैयार करने के निर्देश दिए। वहीं बिजली विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जो गांव जगमग योजना में नहीं शामिल हो रहे हैं, उन्हें योजना के लाभ बताएं। उन्हें समझाएं कि अगर आप इस योजना में शामिल होते हैं तो अन्य गांवों की तरह उन्हें भी 24 घंटे बिजली उपलब्ध हो सकती है, जिससे ग्रामीणों को फायदा होगा। उन्होंने नगर निकाय विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि शहर को स्वच्छ एवं कचरा मुक्त बनाने को लेकर ठोस कदम उठाए जाएं। सांसद की टीम द्वारा जुटाई गई जानकारी के आधार पर गांव किठाना, राजौंद, मटौर, खरकां से चीका रोड की फोटो दिखाते हुए इन्हें दुरूस्त करने के निर्देश दिए। सांसद ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेलवे विभाग, पशुपालन, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, जन स्वास्थ्य, स्वच्छ भारत मिशन, सांसद निधि योजना, दीन दयाल अंत्योदय योजना, दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना, प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना, सांसद आदर्श ग्राम योजना, मनरेगा, महिला एवं बाल विकास विभाग, श्रम विभाग, राजस्व, सामाजिक सुरक्षा पैंशन योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, सिंचाई, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान आदि योजनाओं के क्रियान्वयन के बारे में विस्तार से समीक्षा की। डीसी प्रीति ने बैठक में विभिन्न विभागों के आपसी तालमेल के साथ योजनाओं के जमीनी स्तर पर क्रियांवित करने की जानकारी दी। उन्होंने सांसद नवीन जिंदल को बैठक में उठे विभिन्न मुद्दो पर कार्रवाई कर लोगों को लाभ पहुंचाने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर यूपीएससी की परीक्षा पास करने पर बीडीपीओ गुहला समिता को सांसद नवीन जिंदल ने प्रशस्ति पत्र व राष्ट्रीय ध्वज देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष ज्योति सैनी सहित जिला भर के प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे

9 से 11 मई को कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में लगेगा मेला

सांसद नवीन जिंदल ने बताया कि आगामी 9 से 11 मई को कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय में किसान मेले का आयोजन किया जाएगा। इसमें कृषि उपकरणों व योजनाओं की प्रदर्शनी लगाई जाएगी। इसमें 15 से 20 स्टार्ट अप को भी आमंत्रित किया गया है। किसान इस मेले में आकर विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

विधायक सतपाल जांबा ने बैठक में उठाई हलके की समस्याएं

बैठक के दौरान विधायक सतपाल जांबा ने पूंडरी विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न समस्याएं रखी, जिसमें पूंडरी में नालों की सफाई, मोहना व चंदलाना में 152 डी हाईवे पर सौंदर्यकरण व लाईट दुरूस्त करने, आंगनवाड़ी केंद्रों के भवनों की देखरेख व मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाने बारे अधिकारियों का अवगत करवाया। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि सीवरेज आदि दबाने के लिए जो भी गलियां उखाड़ी जाती है, उन्हें समयबद्ध ठीक से किया जाए, ताकि आमजन को किसी भी परेशानी का सामना न करना पड़े। विधायक जांबा ने सांच गांव के स्कूल अपग्रेड के मुद्दे को उठाया, जिस पर संज्ञान लेते हुए सांसद नवीन जिंदल ने सैकेंडरी एजूकेशन के निदेशक से मौके पर ही फोन से बात की और स्कूल के संबंध में आवश्यक कार्रवाई करने को कहा।

कलायत में छोटी चोरियों से शुरु हुआ था सिलसिला अब चोर चुन-चुन बड़ी दुकानों को बना रहे निशाना

कलायत,3 मई (सूबे सिंह मोर): कलायत शहर में चोरी की घटनाओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। अभी पुलिस पुराने डीएसपी कार्यालय के पास रेलवे रोड पर एक साथ चार दुकानों में 16 अप्रैल को हुई लाखों की चोरी व दिनदिहाड़े वार्ड 9 पार्षद जगदीश रायका के साथ-साथ अन्य चोरियों की गुत्थी पुलिस सुलझा नहीं पाई थी। इससे पहले ही शुक्रवार-शनिवार की रात्रि चोर गिरोह ने मटौर रोड पर करियाना स्टोर में सेंध लगाते हुए लाखों की नकदी पर हाथ साफ कर दिया। चोर गिरोह ने दुकान की छत से होते हुए अंदर प्रवेश किया। इससे पहले ईंटों व लोहे की राड़ से लोहे की दरवाजों को तोड़ा गया। लेकिन फुर्सत से चली इस कार्यवाही की पुलिस को कानों-कान खबर नहीं लगी। शहर के शक्ति नगर निवासी दुकानदार राहुल ने बताया कि वह लंबे समय से गंगा बिशन करियाना स्टोर के नाम से दुकान चला रहा है। रात्रि को चोर गिरोह ने दुकान में सेंध लगाई और करीब पांच लाख रुपए की नकदी चुराई। सबूतों को मिटाने के लिए चोर सीसीटीवी की डीवीआर भी उखाड़ ले गए। दुकानदार ने बताया कि 3 लाख रुपए की रकम वह शुक्रवार को बैंक से लेकर आया था। यह रकम उसे उधारी के तौर पर अदा करनी थी। जबकि 1 लाख 60 हजार रुपए व 20-25 हजार रुपए की नकदी गल्ले में अलग-अलग रखी थी। इसे भी चोर उड़ा ले गए। उसे नहीं मालूम था कि जो रकम वह बैंक से लेकर आया है वह उधारी चुकाने से पहले ही इस तरह चोर चुराकर ले जाएंगे। दुकानदार को चोरी की घटना की पता

सुबह लगा। दुकान में इधर-उधर सामान को बिखरा देख मालिक के होश उड़ गए। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में दुकानदार मौका पर पहुंचे। तुरंत पुलिस को सूचित किया गया। कलायत डीएसपी ललीत कुमार, थाना प्रभारी रोहताश कुमार व विभिन्न पुलिस जांच टीमों ने घटना स्थल का मुआयना किया। इस संबंध में अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। पुलिस अधिकारियों ने दुकानदारों को जल्द चोरी की गुत्थी सुलझाने का आश्वासन दिया है।कलायत में बढ़ती चोरी की घटनाओं को लेकर दुकानदारों, शहरवासियों व क्षेत्र के लोगों में भारी रोष। चोरी की घटनाओं में ठोस कार्यवाही की मांग को लेकर दुकानदार, पार्षद व समाज सेवी संगठन पुलिस स्टेशन पहुंचे। साथ ही डीएसपी से भी मुलाकात की गई।

कब तक चलता रहेगा चोरियों का सिलसिला : दुकानदारों का कहना है कि शहर में पहले छोटी-छोटी चोरियों का क्रम चला। पुलिस समय पर स्थिति को काबू नहीं कर पाई। शायद यही वजह है कि चोरों के हौंसले अब बुलंद हो चुके हैं। एक-एक करके निरंतर चोरी की घटनाओं को चोर अंजाम दे रहे हैं। इस प्रकार की स्थिति से दुकानदार बेहद हताश निराश हैं। उन्होंने कहा कि बार-बार चोरी की घटनाओं से दुकानदारों व आम लोगों में भय का माहौल है। आखिरकार चोर कब तक नागरिकों की संपत्ति को चुराते रहेंगे?

...पूर्व राज्य मंत्री कमलेश ढांडा को आया गुस्सा पुलिस अधिकारियों से बोली यह क्या चल रहा है?

शनिवार को जाखौली गांव में एक देश एक चुनाव कार्यक्रम में मुख्य मेहमान के तौर पर शिरकत कर रही पूर्व राज्य मंत्री कमलेश ढांडा से कलायत शहर की चोरी की घटनाओं में ठोस कार्यवाही को लेकर पार्षद रेणू धानियां, आशीष राणा, उषा रानी, प्रीत जगदेव, प्रदीप राणा, राजेश राणा, महीपाल पंवार, जगदीश रायका, विनोद जेष्ठ, अमित बैद्य, रवींद्र निर्मल बंटी, संजय धीमान व अन्य पार्षदों ने मुलाकात की। इस पर तुरंत ढांडा ने पुलिस अधिकारियों से संपर्क साधते हुए जवाब तलबी की। उन्होंने पूछा कि आखिरकार यह शहर में चल क्या रहा है? पूर्व राज्य मंत्री ने पार्षदों को भरोसा दिलाया कि वे इस मामले में विशेष रूप से एसपी आस्था मोदी से बात करेंगी। उन्होंने सुरक्षा व्यवस्था की मजबूती का भरोसा दिलाया।

जांच में लगी पुलिस की टीमें : डीएसपी

डीएसपी ललीत कुमार ने बताया कि पुलिस की टीमें चोरी की घटनाओं की जांच में लगी हैं। उन सबूतों को बारीकी से जुटाया जा रहा है जिसके जरिये चोरों तक पहुंचा जा सके। पुलिस गंभीरता से इस कार्य को पूरा करते हुए चोरों को काबू करेगी।